आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
10 दिसम्बर, 2012 ★ मार्गशीर्ष, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रिक टन गोमांस निर्यात

वियतनाम,मलेशिया,फिलिपाइन्स,कुवैत, अंगोला,ओमन,इराक,कांगो,सिरिया,इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारे, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सऊदी अरब,अरब अमिराती,जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल,घाणा,कतार पाकिस्तान, बहरीन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्बॅनिया,नामिबिया, चीन,अफगानिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

'अहिंसा तीर्थ',कुसुंबा,अजंता रोड,जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

"नयनतारा", सुभाष चौक, जलगाँव
✆ 0257-2223903

"स्वर्णतीर्थ", आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद
✆ 0240-2244520

"नयनतारा इस्टेट", उत्वाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक
✆ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti *Jai Guru Heera* *Jai Guru Maan*

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Mobile : 9820350814, Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

आयाणं नरयं दिस्स,
नायएज्ज तणामवि।
दोगुञ्छी अप्पणो पाए,
दिन्नं भुञ्जेज्ज भोयणं।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.8

परिग्रह अदत्तादान नरकसम,
जों जान न तृण भी ग्रहण करे।
पाप-अरुचि मुनि निज पात्रों में,
दिया आहार स्वीकार करे।।

दिसम्बर, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2539
मार्गशीर्ष, 2069

वर्ष 69 अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु. स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु. संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु. साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	आत्म-प्रबन्धन	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
	वाग्वैभव(9)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
प्रवचन-	आर्त्तध्यान का स्वरूप	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	14
	अपनत्व एवं एकत्व की साधना	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	27
	सार्थक करें समय को	-श्री योगेशमुनि जी म.सा.	35
दीक्षा-अर्द्धशती-	पंचाचार के निर्मल साधक आचार्य हीरा (2)	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	19
	आचार्य हीरा : आत्मा और आत्मीयता के अनुपम साधक	-श्री मनीषमुनि जी म.सा.	40
	The Name of Endless Qualities	-Smt. Purvi Lodha	46
जीवन-व्यवहार-	खुश रहना सीखें	-श्री महेन्द्र पारख	48
नारी-स्तम्भ-	काश! मैं भी एक बूँद होती	-सुश्री रूपाली सुराना	50
युवा-स्तम्भ-	जीवन का प्राण है चरित्र	-डॉ. दिलीप धींग	51
बाल-स्तम्भ -	किशोर मन की जिज्ञासाएँ	-श्री मनोहरलाल जैन	54
स्वास्थ्य-विज्ञान -	सूर्यकिरण-चिकित्सा	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	57
कविता/गीत-	जीवन तेरा हमें प्रेरणा दे जाए	-साध्वी पद्मप्रभा जी म.सा.	18
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.	26
	गुणों की खान हो तुम	-श्री गजेन्द्र कुमार जैन	39
	नमो नमो	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	63
	समाधान : बढ़ाये ज्ञान	-श्री जितेन्द्र चोरडिया 'प्रेक्षक'	64
	गुरुवर का नाम लेना	-विरक्ता प्रभा एवं अन्तिमा जैन	65
विचार-	अध्यात्म	-श्री अरविन्द लोढ़ा	66
प्रेरक-प्रसंग-	जीवन दृष्टि का झरोखा	-श्री सुधीर सुराणा	66
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (32)	-संकलित	67
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	71
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	73
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	118

सम्पादकीय

आत्म-प्रबन्धन

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

वर्तमान युग मैनेजमेण्ट का युग है। हर कोई व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिए मैनेजमेण्ट की विद्या का प्रयोग करता है। वह लक्ष्य निर्धारित करता है, उसको प्राप्त करने के लिए योजना बनाता है, योजना पूरी करने के लिए एक दृष्टि (Vision)लेकर चलता है तथा उसे क्रियान्वित करने हेतु सर्वविध प्रयत्न करता है। जहाँ कोई कठिनाई आती है उसका निवारण करने के लिए समुचित उपाय खोजता है तथा सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए समस्या का समाधान कर व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ जाता है। मैनेजमेण्ट का प्रयोग आज न केवल उद्योग-धन्धों के विकास एवं संचालन में किया जा रहा है, अपितु विवाह, जन्मदिन आदि के समारोह के आयोजन में भी उसका उपयोग हो रहा है। पहले भी किसी कार्य को ठीक प्रकार से सम्पन्न करने के लिए मैनेजमेण्ट अथवा प्रबन्धन का प्रयोग होता रहा है, किन्तु इसे पृथक् विद्या के रूप में स्थान प्राप्त नहीं था। अब प्रबन्धन की पढ़ाई अलग से होती है तथा उसके उच्च अध्ययन-केन्द्र बड़े शहरों में उपलब्ध हैं। प्रबन्धन का उपयोग व्यवस्था के हर क्षेत्र में हो सकता है, वह फिर भले ही वित्त से सम्बद्ध हो, चिकित्सा संस्थान से सम्बद्ध हो, विश्वविद्यालय के संचालन से सम्बद्ध हो, सरकार के संचालन से सम्बद्ध हो, बड़े-बड़े मॉल के संचालन से सम्बद्ध हो अथवा छोटी दुकान के संचालन से। सर्वत्र प्रबन्धन की आवश्यकता होती है। एक कुशल गृहिणी रसोई एवं घर का प्रबन्धन सुचारू रूप से करने में समर्थ होती है।

प्रबन्धन में जो जितना कुशल होता है वह उतना ही अपने लक्ष्य की पूर्ति में सफल होता है। प्रबन्धन की यह कला जीवन के समुचित प्रबन्धन में भी उपयोगी है। व्यक्ति के जीवन का कोई लक्ष्य हो, उसकी पूर्ति हेतु योजना हो, पूर्ति के लिए दृष्टि हो, उसके क्रियान्वयन की संकल्प-शक्ति हो तथा क्रियान्वयन में रही कमियों के मूल्यांकन के साथ निवारण की योजना हो तो जीवन में सफलता का द्वार खुल जाता है।

मैनेजमेण्ट में बाह्य बड़ी व्यवस्थाओं के लिए मेक्रो मैनेजमेण्ट तथा छोटी-छोटी कमियों के सुधार के लिए माइक्रो मैनेजमेण्ट उपयोगी होता है। बड़े-बड़े उद्योगधन्धे कभी-कभी छोटी-छोटी गलतियों के कारण चौपट हो जाते हैं। उन गलतियों का सुधार होता रहे तो वे धंधे सफलता की चोटी को छू लेते हैं। कभी गलतियाँ हमारी भीतरी वृत्तियों एवं

आदतों के कारण होती हैं। उदाहरण के लिए अपने प्रति नरमाई का व्यवहार तथा दूसरों के प्रति कठोरता का व्यवहार सफलता में बाधक बन जाता है। इसके विपरीत अपने प्रति कठोरता तथा दूसरों के प्रति नरमाई का व्यवहार सफलता का पथ प्रशस्त करता है। जो अपने प्रति नरमाई बरतता है, वह अपनी गलत आदतों को प्रोत्साहित करता है तथा दूसरों के प्रति अधिक कठोरता होने पर उनसे पूरा सहयोग प्राप्त नहीं होता है। इन आदतों में यथासम्भव विवेक के साथ बदलाव आवश्यक है। एक प्रकार से कहें तो बाह्य लक्ष्यों की पूर्ति में भी व्यक्ति को अपनी आदतों में परिष्कार करना पड़ता है, तो फिर आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास के लिए तो अपने में परिवर्तन नितान्त आवश्यक है।

प्रबन्धन के क्षेत्र में सबसे कठिन है आत्म-प्रबन्धन अथवा स्वयं का प्रबन्धन। व्यक्ति दूसरे कार्यों का तो प्रबन्धन दक्षता से कर लेता है, किन्तु स्वयं के संवेगों का प्रबन्धन अत्यन्त कठिन होता है। इसीलिए कहा गया है कि सहस्रों युद्धों को जीत लेना आसान है, किन्तु अपने आपको जीतना कठिन है। अपने आपको जीतने में प्रमुख बिन्दु अपने संवेगों का प्रबन्धन (Management of Emotions) है। आध्यात्मिक भाषा में कहें तो अहंकार, क्रोध, छल-कपट, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, भय, शोक आदि को जीतना कठिन है। प्रबन्धन के द्वारा कुछ सीमा तक इनको नियन्त्रित किया जा सकता है। जो इसमें समर्थ होता है वह अपनी दृष्टि (Vision) को सही बनाने में सक्षम होता है। अपने क्रोध और मद के नशे में जीने वाला व्यक्ति कभी सही दृष्टि लेकर नहीं चल पाता। उसे अपनी ही बात सही दिखाई पड़ती है एवं सहयोगियों की सही बात को सुनने से वंचित रहता है। यदि वह दूसरों के सुझावों को शांत मस्तिष्क से सुने तो हो सकता है कुछ नई दृष्टि और उपायों की उपलब्धि हो। निरन्तर आत्म-विकास के लिए व्यक्ति को विचारशील होना चाहिए। विचारशील एवं दृष्टिसम्पन्न व्यक्ति आत्म-मूल्यांकन के साथ आत्म-परिष्कार को आवश्यक समझता है। यद्यपि आत्म-मूल्यांकन के पश्चात् भी आत्म-परिष्कार करना एक दुष्कर कार्य है, तथापि दृढ़ संकल्प के साथ परिष्कार के मार्ग पर आगे बढ़ा जा सकता है।

जो व्यक्ति अपनी प्रशंसा सुनकर संतुष्ट होता रहता है वह अपने दोषों का परिमार्जन करने में समर्थ नहीं होता। उसे अपने गुणों का अभिमान हो जाता है तथा उसे लोगों की दृष्टि में अच्छा समझे जाने से तुष्टि का अनुभव होता है, जिससे उसके दोष सुरक्षित रहते हैं। कई बार दोष बढ़ते भी जाते हैं, किन्तु वह व्यक्ति प्रशंसा के मद के कारण उनसे अनभिज्ञ बना रहता है। प्रशंसा सुनकर अपने लक्ष्य से भटकाव न हो, इसके लिए सजगता जरूरी है।

मैनेजमेण्ट को अपने सुधार हेतु लागू करना जीवन की सच्ची सफलता के लिए आवश्यक है। बाह्य सफलता मनुष्य को पैसा, प्रतिष्ठा एवं पद अवश्य दिला सकती है, किन्तु आत्म-वैभव के समक्ष ये सब तुच्छ हैं। इसीलिए इन सबकी प्राप्ति होने के पश्चात् भी मनुष्य संयमी जीवन जीने वाले महापुरुषों के समक्ष नतमस्तक होता है। बाह्य सुख-सामग्री होना बुरा नहीं, किन्तु उसकी दासता घातक होती है। दासता के कारण मनुष्य इनके वियोग में भय एवं निराशा का अनुभव करता है। जो पदार्थों के संग्रह में सुख समझता है, वह इनके वियोग में दुःख का अनुभव करता ही है।

जैन दर्शन में सम्यग्दृष्टि का जो प्रतिपादन है वह सम्यक् सोच या विजन को इंगित करता है। आज अधिकतर जीवन की जो समस्याएँ हैं वे दृष्टि के सम्यक् नहीं होने के कारण हैं। दृष्टि बदलते ही सृष्टि बदल जाती है। अपनी काम-वासना तथा लोभ पर विजय प्राप्त करने के लिए एक दृष्टि दी गई-**मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्टवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु, य पश्यति सः पण्डितः।।** अर्थात् जो परस्त्री को माता के समान, परद्रव्य को मिट्टी के ढेले के समान समझता है तथा समस्त प्राणियों को अपने समान समझता है वह पण्डित है। यह एक दृष्टि है जो मनुष्य के जीवन को बदल सकती है। जो व्यक्ति जिस प्रकार के दोषों का अभ्यस्त होता है वह दूसरों में भी उसी प्रकार के दोष देखता है अथवा उन्हें ढूंढने का प्रयत्न करता है। दृष्टि निर्मल होने पर दूसरे के गुणों पर भी दृष्टि जाती है तथा गुणग्राहकता का गुण विकसित होता है। गुणग्राहकता मनुष्य के चरित्र का सुन्दर निर्माण करने का अमोघ उपाय है। गुणग्राहक व्यक्ति व्यर्थ का आग्रह नहीं करता। व्यक्ति की जब आग्रह बुद्धि घटेगी, सत्यान्वेषण के प्रति तत्परता रहेगी तथा क्रोधादि विकारों के आवेश में कटौती होगी तभी दृष्टि की निर्मलता सम्भव है।

दृष्टि निर्मल होने पर अर्जित अथवा स्वाभाविक रूप से प्राप्त सारा ज्ञान सम्यक् हो जाता है। सम्यक् ज्ञान आत्म-विकास का महान् हेतु है। जिस प्रकार उपकरणों का उपयोग सही ज्ञान के द्वारा सम्यक्रूपेण होता है उसी प्रकार सम्यक् ज्ञान के द्वारा व्यक्ति अपने दोषों को सही रूप में पहचानता है तथा सद्गुण और दुर्गुण में भेद समझता है। क्या हेय है और क्या उपादेय, इसका उसे सम्यक् बोध होता है। वह फिर अपने दुराग्रह को मिथ्या समझकर दूसरों के दृष्टिकोण की यथार्थता को जानने लगता है। अपने सुधार के लिए इस प्रकार की योग्यता का होना लाभकारी है। अपनी गलत आदतों का सुधार तभी सम्भव है जब वह आदत गलत रूप में ज्ञात हो। अपनी कमियों और दोषों का मूल्यांकन ज्ञान से ही सम्भव है। ज्ञानी व्यक्ति दूसरों की कटु बातों का भी बुरा नहीं मानता है।

ज्ञान के साथ आचरण का पक्ष जुड़ा हुआ है। जिसकी दृष्टि मलिन हो और ज्ञान भी अशुद्ध हो, उसका आचरण भी मैला ही होता है। आचरण को अच्छा बनाने के लिए दृष्टि को निर्मल बनाना आवश्यक है, ज्ञान उससे स्वतः ही निर्मल हो जाएगा। ज्ञान की निर्मलता आचरण की पवित्रता का आधार है। हम अपनी बहुत सी आदतों को बदलना चाहते हैं, किन्तु फिर भी कई महीनों और वर्षों के पश्चात् भी उनमें कोई बदलाव नहीं पाते। इसका कारण है हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव। हम अपने प्रति नरम रहते हैं, अपनी गलतियों को नज़रअंदाज करते हैं, इसलिए हमारे में सुधार नहीं हो पाता। माइक्रो मैनेजमेण्ट जीवन-सुधार के इस पहलू में भी उतना ही आवश्यक है, जितना बाह्य कार्यों में सफलता के लिए।

कोई यदि अपनी एक-एक गलत आदत को बदलने का लक्ष्य बनाले तथा उसके लिए आवश्यक तैयारी कर ले तो इसमें कोई संदेह नहीं कि एक दिन वह आदत बदल जायेगी। क्योंकि आदतों का निर्माण व्यक्ति के भीतर के अचेतन मन की अवधारणा से जुड़ा हुआ है। उसमें बदलाव के लिए सही दृष्टि के साथ सही संकल्प आवश्यक है। फिर उस संकल्प के क्रियान्वयन का मूल्यांकन नियमित रूप से अपेक्षित है। उससे किसी प्रकार हताश व निराश होने की आवश्यकता नहीं है, न ही अपने प्रति पुनः नरम रूख अपनाने की आवश्यकता है। जब दृढ़ संकल्प के साथ मासखमण तप सम्भव है, तो अपनी छोटी-छोटी आदतों में बदलाव असम्भव नहीं हो सकता। जो एक आदत को बदलने में सफल हो जाता है वह अपनी अनेक बुरी आदतों को छोड़कर जीवन को एक सुरभित चरित्र से युक्त बना सकता है। यही आत्म-प्रबंधन का रहस्य है कि पहले व्यक्ति अपनी कमियों को पहचाने, फिर उन्हें दूर करने के लिए सही दृष्टि, सही ज्ञान और सही संकल्प के साथ जुट जाए। दृष्टि सही होने पर बहुत सी समस्याएँ तो स्वतः धराशायी हो जाती हैं तथा ज्ञान सही होने पर अपनी कमियों का मूल्यांकन करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है। आचरण में कदम बढ़ाने पर उन कमियों का निवारण हो सकता है। इसलिए आत्म-प्रबंधन में दृष्टि, ज्ञान और आचरण तीनों का महत्त्व है।

आत्म-सुधार अपने ही द्वारा हो सकता है, किसी अन्य का परामर्श या उपदेश उसमें सहायक बन सकता है। इसलिए जब तक व्यक्ति स्वयं आत्म-सुधार के लिए सन्नद्ध नहीं होगा तब तक एक कदम भी बढ़ना सम्भव नहीं है। व्यक्ति को जो कुछ मन, वचन, काया और साधन-सामग्री के रूप में प्राप्त हुआ है उसका सही नियोजन आवश्यक है। अपने संवेगों पर नियन्त्रण सजगतापूर्वक किए गए पुरुषार्थ से सम्भव है। जो आत्म-प्रबंधन कर लेता है वह जीवन में तनावमुक्त होकर आत्मलक्ष्य की पूर्ति कर पाता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

प्रमत्त मुनि

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं नो फासयई पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिंदइ बंधणं से।।
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाण-निक्खेव-दुगुंछणाए, न वीर-जायं अणुजाइ मग्गं।।
चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहिं भट्ठे।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए।।
पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयंतिए कूडकहावणे वा।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु।।
कुसीललिंग इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय-वूहइत्ता।
असंजए संजय-लप्पमाणे, विणिग्घायमागच्छइ से चिरं पि।।
विसं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।
एसो वि धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेयाल इवाविवन्नो।।

भावार्थः-

जो प्रव्रजित होकर प्रमादवश महाव्रतों का सम्यक् पालन नहीं करता तथा जो इन्द्रियनिग्रह से रहित है, और रसों में आसक्त है, वह (रागद्वेषजन्य कर्म) बन्धन का मूल से छेदन नहीं कर पाता।

ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेप और उत्सर्ग में जिसकी किंचित्मात्र भी आयुक्तता (सजगता) नहीं है, वह उस मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकता, जिस पर वीर-पुरुष चले हैं।

जो साधक व्रतों में अस्थिर है, तप और नियमों में भ्रष्ट है, वह चिरकालपर्यन्त मुण्डरुचि रहकर और दीर्घकाल तक आत्मा को क्लेश देकर भी संसार (जन्ममरण) से पार नहीं हो सकता।

जैसे पोली मुट्ठी असार होती है, अथवा खोटा सिक्का अनियंत्रित अप्रमाणित होता है, कांच की मणि वैडूर्यमणि की तरह चमकती है, किन्तु विज्ञपुरुषों की दृष्टि में इनका कुछ भी मूल्य नहीं है, (वैसे ही बाह्यलिंग में मुनियों की भांति प्रतीत होने पर भी विज्ञपुरुषों के समक्ष उस द्रव्यलिंगी का कुछ भी मूल्य नहीं है।)

जो आचार भ्रष्टों का वेष धारण करके, ऋषिध्वज से अपनी जीविकावृद्धि करके और असंयमी होते हुए भी स्वयं को संयमी कहता है, वह चिरकाल तक (जन्म-मरण रूप) विनाश को प्राप्त करता है।

जैसे पीया हुआ कालकूट विष प्राणों का विनाश कर देता है, उलटा पकड़ा हुआ शस्त्र अपना ही घात कर देता है, तथा वश में नहीं किया हुआ पिशाच साधक को मार डालता है इसी प्रकार शब्दादि-विषयों से युक्त धर्म भी द्रव्यलिंगी के दुर्गति में पतन का कारण बनता है।

-उत्तराध्ययन सूत्र, बीसवाँ अध्ययन, महानिर्ग्रन्थीय, गाथा-39-44

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

कार्यकर्त्ता

- अनियंत्रित लोभ या क्रोध व्यावहारिक जीवन को कटु बना देता है और वैसी परिस्थिति में साधक का लोक-जीवन भी ठीक नहीं बन पाता। वह माता-पिता एवं बन्धु-बान्धव आदि के प्रति भी ठीक व्यवहार नहीं रख पाता। वस्तुतः लोभ, लालसा आदि पर अंकुश लगाने वाले का ही जीवन सुखी बनता है।
- आज के समाज को धन या जन की कमी नहीं, कमी है तो सेवाभावी कार्यकर्त्ता की।
- यों तो समाज में हजारों कार्यकर्त्ता हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे, पर संस्था या समाज को अपना समझकर घरेलू हानि-लाभ का बिना विचार किये अदम्य साहस व पूर्ण प्रामाणिकता से लगनपूर्वक कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता दुर्लभ हैं।
- कार्यकर्त्ता की कुशलता के सामने अर्थाभाव का कोई प्रश्न नहीं रहता।
- सेवाभाव से समय देने वाला अर्थदाता से भी अधिक सम्मान योग्य होता है, यह समझकर समाज कार्यकर्ताओं का सम्मान करे, उन्हें प्रोत्साहित करे, और कार्यकर्ता भी मातृ-पितृ सेवा की तरह समाज सेवा को अपना कर्तव्य समझकर काम करे तो सफल कार्यकर्ता तैयार हो सकते हैं। आज धन-जन एवं बुद्धि सम्पन्न होकर भी जैन समाज योग्य कार्यकर्ताओं के अभाव में सम्यक् ज्ञान और क्रिया का प्रचार-प्रसार नहीं कर पा रहा है।
- विदेशी प्रचारकों और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को देखते हैं तब विचार होता है कि अनार्य कहे जाने वाले लोग देश, धर्म व समाज के लिये घरबार का मोह छोड़कर जीवन अर्पण कर देते हैं, फिर क्या कारण है कि वीतराग संस्कृति में वैसे कार्यकर्ता आगे नहीं आते। तरुण पीढ़ी इस पर गहराई से विचार करे, और इस कार्य में आगे बढ़े, समाज में ऐसे कार्यकर्ता सुलभ हों, यही शुभेच्छा है।
- प्रत्येक कार्य की निष्पत्ति में उपादान और निमित्त, ये दोनों ही कारण होते हैं। यह नहीं समझिये कि कभी किसी कार्य में एक कारण से ही कार्य सिद्धि हुई है। ऐसा न कभी हुआ है और न कभी होता है। जिस तरह मंथन करने वाला मथेरणा दधि से मक्खन निकालता है, तब मंथन क्रिया करते समय क्रमशः एक हाथ पीछे चलता है तो दूसरा हाथ आगे। दोनों हाथों से क्रिया चलती है, लेकिन एक हाथ आगे और दूसरा हाथ पीछे चलता है। इसी तरह ज्ञान-प्राप्ति में कभी निमित्त आगे और उपादान पीछे रहता है तो कभी उपादान आगे और निमित्त पीछे रहता है। हमारे यहाँ जिनशासन में अनेकान्त दृष्टिकोण है। इसमें व्यवहार और निश्चय ही मुख्य है। कभी व्यवहार आगे रहता है तो निश्चय पीछे और कभी निश्चय आगे तो व्यवहार पीछे रहता है। गौण एवं प्रधानता से दोनों को लेकर चलना है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (10)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

विनय

- विनय गुणों का आधार है, भूषण है।
- रत्नत्रय के महल का द्वार है विनय।
- अहंकार, माया आदि से रहित विनय धर्म का मूल है, वैसा विनय आभ्यन्तर तप है।
- विनयशील व्यक्ति कुछ नहीं देकर भी प्रेम व विश्वास अर्जित कर लेता है।
- विनय अर्थात् काया से झुकना, वचन से मधुर बोलना और मन से सम्मान की भावना होना।
- वृक्ष उसी ओर अपनी जड़ें फैलाता है, जिस ओर आर्द्रता, कोमलता और मुलायम मिट्टी हो।
- दुर्विनीत हर बात में लड़ने के लिए तत्पर रहता है।
- विनय का व्यवहार श्रमण और श्रावक सबके लिए आवश्यक है।
- घर, परिवार, मौहल्ले एवं समाज में सर्वत्र ही विनय जरूरी है।
- विनय रूप शिष्टाचार के पालन के लिए शरीर के अंगों की चेष्टाओं में चंचलता नहीं झलकनी चाहिये।
- सुने को अनसुना करना आज्ञा का उल्लंघन है, अनुशासनहीनता है, अविनय है।
- कृतघ्नता अनुशासनहीनता का एक रूप है।
- गुरुद्रोही, कृतघ्न, चोर और विश्वासघाती की दुर्गति होती है।
- संस्कार देने वाला यदि निपुण है तो संस्कारों की अमिट छाप श्रोता के मन पर पड़ ही जाती है। इसके परिणाम भी सुखद होते हैं।
- उपकारी के उपकार को ब्याज सहित चुकाना चाहिये।
- दूसरों को बदलने की अपेक्षा स्वयं को बदलें, यही श्रेष्ठ है।
- स्वयं पर स्वयं का नियंत्रण श्रेष्ठ है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

आर्त्तध्यान का स्वरूप

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

मन का एकाग्र चिन्तन 'ध्यान' है। साधना मार्ग में तो एकाग्र का अर्थ भी ऐसा किया जाता है कि-"एकं अग्रं-प्रधानं-आत्मानं लक्ष्यीकृत्य यच्चिन्तनं तद् एकाग्रं" अर्थात् एक अग्र (यानी मुख्य आत्मा को) लक्ष्य करके चिन्तन करना एकाग्र है, क्योंकि सब विषयों में आत्मा ही प्रधान एवं मुख्य है। एक आत्मा को जान लेने पर सब कुछ जाना जा सकता है। उपनिषदों में पूछा गया है- "**कस्मिन् वा विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति?**" किसे जान लेने पर यह सब कुछ जाना जा सकता है? उत्तर दिया है-"**आत्मनि विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति।**" एक आत्मा को जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है।

जैन सूत्रों में भी आत्मा को मुख्य रूप से जानने का बार-बार उपदेश किया गया है- **जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ।** जो एक (आत्मा) को जान लेता है वह सबको जान लेता है, तो साधना-मार्ग में इस दृष्टि से विचार किया गया है कि एक अग्र अर्थात् जो सबसे मुख्य है उसीका चिन्तन करना ध्यान है।

यहाँ ध्यान का जो वर्णन आगम के अनुसार किया जा रहा है उसमें सम्पूर्ण मानसिक वृत्तियों का वर्णन अपेक्षित है। मन की शुभ-अशुभ धाराओं का दिग्दर्शन कराने के बाद अशुभ धारा को त्याज्य एवं शुभ धारा को आदेय बताया गया है।

आर्त्तध्यान क्या है?

पूर्व में चार ध्यान का नामोल्लेख किया गया था, जिसमें सबसे पहले है-आर्तध्यान। आर्त शब्द 'ऋत' से बना है। स्थानांग के टीकाकार आचार्य अभयदेव ने बताया है-"ऋतं दुःखं तस्य निमित्तं भवं, तत्र वा भवं-आर्तम्" ऋत अर्थात् दुःख, पीड़ा और उससे उत्पन्न होने वाला भाव है-आर्त। विद्वानों ने आर्त शब्द के अनेक अर्थ किये हैं, जिनमें से एक अर्थ है-पीड़ा, दूसरा अर्थ है-दुःख और तीसरा अर्थ है-चिंता या घबराहट। मन की छटपटाहट, आकुलता आदि भी इसी अर्थ में आ जाते हैं। आर्तध्यान में ये सब लक्षण पाये जाते हैं।

कर्मशास्त्र की दृष्टि से आर्तध्यान मोह कर्म का उदय है। (अरति, रति, मोहनीय एवं लोभ) मोहनीय के उदय से जीव में मनोज्ञ वस्तुओं के संयोग की आंकांक्षा, अमनोज्ञ वस्तु के वियोग की चिंता आदि उत्पन्न होती है। उससे जीव की चिन्तन धारा आर्त ध्यान में

परिणत हो जाती है। इसलिए आर्तध्यान को मोहकर्म के उदय का फल माना जाता है। वैसे रौद्र ध्यान भी मोहकर्म का ही फल है। उसमें कषाय मोहनीय की प्रबलता रहती है।

आर्त्तध्यान में जीव की चिन्तनधारा किस प्रकार की होती है, इसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मूल सूत्र में उपलब्ध होता है, जो इस प्रकार है-

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-

अमणुन्न संपओग संपउत्ते तस्स विप्पओग सति समण्णागए यावि भवइ।

मणुन्नसंपओग संपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समण्णागए यावि भवइ।

आयंक संपओग संपउत्ते तस्स निप्पओग सति समण्णागए यावि भवइ।

परिझुसिय कामभोग संपओग संपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समण्णागए यावि भवइ।

अमनोज्ञ वस्तु का संयोग होने पर उससे शीघ्र ही पिण्ड छुड़ाने के लिए सतत चिन्तन करना। मनोज्ञ वस्तु का संयोग होने पर वह पुनः छूटे नहीं, अतः उसे रखने का सतत चिन्तन करना। रोग आदि उत्पन्न होने पर उसके निवारण की सतत चिंता करना। अप्राप्त काम भोग को प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए सतत चिंता करना। इस व्याख्या में दुःख के चार कारण बताये हैं- 1. अनिष्ट वस्तु- मन के प्रतिकूल वस्तु का संयोग, 2. इष्ट वस्तु- मन के अनुकूल वस्तु का वियोग, 3. प्रतिकूल वेदना, 4. भोग की लालसा।

संसार के समस्त दुःखों का मूल इन चार कारणों में देखा जा सकता है। प्राणियों को जितने भी दुःख एवं पीड़ा हैं उनका वर्गीकरण करने पर और उनकी उत्पत्ति का मूल बीज खोजने पर पता चलेगा कि इन्हीं चार कारणों में से कोई न कोई कारण वहाँ विद्यमान है।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह मन के अनुकूल वस्तु को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है, जिन वस्तुओं से उसे सुख, आनन्द एवं प्रसन्नता का अनुभव होता है उन्हें जुटाता रहता है और मन के प्रतिकूल वस्तु से डरता है। यदि वह अनचाहे भी आ जाती है तो जल्दी से जल्दी उससे छुटकारा पाने की चेष्टा करता है। प्रतिकूल वस्तु जब तक नहीं हटती, उसके भीतर बेचैनी और छटपटाहट बनी रहती है और सोचता है कब इससे पिण्ड छूटेगा?

कल्पना करिए आपके घर पर कोई मित्र आया है, कोई रिश्तेदार, भाई-बहन, जमाई, पुत्र आदि बाहर से आये हैं तो उन्हें देखते ही आपको कितनी खुशी होगी? आँखें विकसित हो जायेंगी, हृदय नाच उठेगा और चेहरा कमल की तरह खिल जायेगा। अब सोचिए उनकी जगह कोई टैक्स का इंस्पेक्टर अचानक आ धमका और आपके बही खाते देखने लगा तो आपकी छाती धड़कने लग जायेगी, आँखों में और हृदय में भय छा जायेगा। आप सोचेंगे-''भाग्य का मारा यह कहाँ से टपक पड़ा? जल्दी से क्यों नहीं चला जाता।''

प्रियजन यदि सुबह आये और रात को गाड़ी से जाने की बात करें तो आप कहेंगे-

"यह क्या? घर नहीं है क्या? अभी तो दो-चार दिन ठहरो।" उन्हें आग्रह और मनुहार करके ठहराने की कोशिश करेंगे, किन्तु उन इंस्पेक्टर साहब को जल्दी से जल्दी विदा करने की सोचेंगे। वह देरी करता है तो आपके मन में झुंझलाहट आती है, क्यों नहीं उठता और क्यों नहीं अपना रास्ता नापता।

यह एक उदाहरण है। जीवन में इसी प्रकार प्रतिदिन आपके सामने ऐसे प्रसंग आते रहते हैं। जिस व्यक्ति से, जिस वस्तु से, जिस मौसम से आपको सुख और लाभ की प्राप्ति होती है, आप चाहते हैं कि वह हमेशा बनी रहे और उससे आपको लाभ मिलता रहे। वर्षा के मौसम में यदि ठंडी-ठंडी हवा चलती हैं, फुहारे पड़ रही हैं, सुहावना मौसम हो रहा है और आप गोठ करने कहीं गये हुए हैं तो क्या सोचेंगे? बस ऐसा ही मौसम बना रहे। धीमे-धीमे फुहारें पड़ती रहें, कितना आनन्ददायक मौसम है। पर किसी भिखारी का कष्ट तो आपको नहीं मालूम है, जिस वर्षा के कारण उसे भिक्षा नहीं मिल पाई है, और ठण्डी हवा से जिसकी हाड़ों में कंपकंपी पैदा हो रही है।

इसी प्रकार गर्मी की ऋतु में जब लू चलती है, धरती तवे सी तप उठती है तब आप क्या सोचते हैं? इतनी गर्मी क्यों पड़ती है, यह गर्मी कब दूर होगी और कब वर्षा आयेगी? आपका जी घबरा रहा है बेचैन हो रहा है गर्मी के मारे। आप उस गर्मी से बचने की चिंता करते हैं।

आप दुकान पर बैठे हैं, कोई ग्राहक आता है तो आपको बड़ी खुशी होती है, माल दिखाते हैं, वह जाना चाहता है तो आप उसे रोकते हैं-"ठहरो! यह देखो नया माल आया है।" आप सोचते हैं कुछ देर और रुका रहे और दो-सौ, चार-सौ, हजार, पाँच हजार का माल इसके पल्ले बांध देवें। यदि कोई मांगने वाला आता है, बाबा दो पैसे दे दो। भूखा हूँ। आवाज लगाता है तो आप क्या कहते हैं-"चल! चल! आगे चल।" वह ज्यादा ही करता है तो आप झल्लाकर कह उठते हैं-"हटता कि नहीं बेशर्म! नहीं तो धक्के देने पड़ेंगे।"

एक व्यक्ति को आप रोकना चाहते हैं और एक को भगाना। सुख आया तो आप चाहते हैं, बस यह बना रहे, और दुःख आया तो सोचते हैं जल्दी से चला जाय। लक्ष्मी तो घर में पीढा डाल कर बैठ जाये और दरिद्रता पिंड छोड़कर चली जाय।

लक्ष्मी और दरिद्रता

कहते हैं एक बार लक्ष्मी और दरिद्रता में विवाद हो गया। लक्ष्मी कहती है मैं बड़ी हूँ और दरिद्रता कहती मैं बड़ी हूँ। दोनों राजा के पास न्याय के लिए गईं और बोली-"हमारा न्याय करो।" लक्ष्मी ने शर्त रखी-"यदि मुझे छोटी बता दिया तो मैं फिर मुँहमोड़ कर ऐसी जाऊँगी कि मेरी छाया तब तुम्हारे घर में नहीं पड़ेगी।" और दरिद्रता ने भी अपनी शर्त

रखी-"मुझे छोटी बताई तो मैं तुम्हारे घर में पीढा डालकर बैठ जाऊँगी सो सात पीढ़ी तक भगाने पर भी, नहीं भागूँगी।"

राजा बड़ी विषम समस्या में उलझ गया, अब क्या करे? इधर खाई, इधर कुआँ? इतो व्याघ्रः इतस्तटी। इधर जायें तो सिंह जीभ लपलपाता खड़ा है खाने को, इधर जायें तो उफान खाती हुई नदी, जिसमें पूर आ रहा है। यही स्थिति राजा की हो गई। राजा ने सोचा, विचारा और आखिर जिनदास नामक श्रावक का नाम राजा के ध्यान में आया, जो बड़ा बुद्धिमान और चतुर था। राजा ने कहा-"देवी! तुम दोनों उसके पास जाओ, वह तुम्हारा अटल न्याय करेगा।"

लक्ष्मी और दरिद्रता दोनों ही जिनदास श्रावक के पास आईं और अपनी बात बताकर कहा-"हमारा न्याय करो।"

श्रावक भी एक बार तो चकराया, फिर हंसकर बोला-"आपका न्याय तो मैं करूँगा, पर पहले सामने चौराहे पर जो खंभा है, उसको हाथ लगाकर आओ।"

श्रावक के कथनानुसार दोनों गईं और हाथ लगाकर आई, बोली-"अब बताओ! कौन बड़ी है?"

जिनदास ने कहा-"देवी दरिद्रता! आप तो जाती हुई बड़ी अच्छी लगती हैं और देवी लक्ष्मी! आप आती हुई बड़ी सुन्दर लगती हैं।" दोनों ही सुन्दर हो और दोनों ही बड़ी हो, पर एक जाते समय और एक आते समय।"

जिनदास का यह फैसला सर्वथा युक्तियुक्त है। मानव मन का सच्चा प्रतिबिम्ब उसने दिखा दिया है कि सुख और संपत्ति आती हुई प्रिय लगती है, दुःख और विपत्ति जाती हुई। यदि सुख नहीं आता है तो मनुष्य उसके लिए चिंता करता है, प्रयत्न और पुरुषार्थ करता है, शोक करता है, और यदि दुःख घर से नहीं निकले तो उसके लिए भी झूरता है, शोक करता है, पीड़ा अनुभव करता है। ज्योतिषी के पास जाकर ग्रह दिखाता है, शनि या मंगल किसका चक्कर है, पूछता है। पूजा-पाठ, यंत्र-मंत्र-तंत्र पता नहीं क्या-क्या अनुष्ठान करता है। उसका लक्ष्य एक ही रहता है, दुःख से छुटकारा हो और सुख मिले। बस इन्हीं बातों पर रात-दिन सोचता रहता है। यह सोचने का क्रम। जब तक क्षण-क्षण में बदलता रहता है तब तक वह 'चिंता' कहलाती है, और जब मनुष्य उस चिंता सागर में गहरा डूब जाता है, चिंता का क्रम नदी की धारा की भांति अखंड प्रवाह का रूप ले लेता है तो वह 'आर्त्तध्यान' कहा जाता है। **(क्रमशः)**

नववर्ष 2013 में आत्मिक-विकास हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ

-सम्पादक परिवार, जिनवाणी

गीत

जीवन तेरा हमें प्रेरणा दे जाए

श्रद्धेया महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.

(तर्जः- मेरे ख्वाबों में जो आए.....।)
अन्तर्मुखता बढ़ाये, अविचल आस्था जगाए,
जीवन तेरा हमें प्रेरणा दे जाए.....।। टेर।।

आत्मरस में डूबी-डूबी नयनाभिव्यक्ति
तं पासिऊण तत्क्षण जगती विरक्ति,
ऊँची निरतिचार साधना तेरी,
पुलकित रहती है आस्था मेरी,
संयम तेरा देख के, त्याग तेरा देख के,
अरिहंत प्रभु की हमें याद हो आए.....।। 1।।

अत्त हियट्ठाए संयम लिया है,
जाए सद्धाए वैसा पालन किया है,
गाँव नगर हो अरण्य कोई,
सरलता तू ने ना कभी है खोई,
कथनी-करनी एक है, चर्या में ना भेद है
संयम तेरा मेरी श्रद्धा बढ़ाए.....।। 2।।

सुत्ता अमुनि मुनि जागृत सदा है,
अप्रमत्तता देख तेरी, मन ये फिदा है
शौर्य जगाए संयम ऊर्जा तेरी,
मुक्ति से लगती ना अब तो दूरी,
स्वाध्याय आठों याम है, निद्रा का ना काम है,
कृपा से तेरी नींद हम भी भगाएँ.....।। 3।।

जिंदगी में आए मेरे बनके फरिश्ता,
जोड़ा है तुमसे मैंने जन्मों का रिश्ता,
मंगल घड़ी की सर्जना हो तुम,
कुदरत का दिया उपहार हो तुम,
श्रद्धा की पुकार हो हृदय का हर तार हो,
पाकर के साथ तेरा भाग्य सराए.....।। 4।।

(संकलित)

दीक्षा अर्द्धशती पर विशेष

पंचाचार के निर्मल साधक आचार्य हीरा (2)

मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा.

मधुरव्याख्यानी मुनिश्री द्वारा विशिष्ट अवसरों पर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के गुणानुवाद में प्रदत्त प्रवचनों का संयोजन कर उन्हें एक साथ धारावाहिक के रूप में तीन अंकों में प्रस्तुत किया जा रहा है। उसी की यह द्वितीय कड़ी है। इन प्रवचनों का संकलन, संयोजन और संपादन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली ने किया है।-**सम्पादक**

(गतांक से आगे.....)

धर्मानुरागी बन्धुओं!

मैं कई बार सोचता हूँ कि गुरु हस्ती की जन्म कुंडली में ऐसा कौनसा योग था कि उनके श्री चरणों में छः महीने के अन्तराल में ऐसे दो युवा सन्त दीक्षित हो गये जो आगे चलकर आचार्य और उपाध्याय के रूप में रत्नसंघ के कर्णधार बन गये। मुनि हीरा के रूप में जिस पौधे को आचार्य हस्ती जैसे कुशल माली ने अपने हाथों से रोपा और बड़ा किया, वह पौधा आज एक वटवृक्ष बनकर हमें अपनी छाया से शीतलता प्रदान करे, तो इसमें कैसा आश्चर्य? गुरु हस्ती के हाथ में आने के बाद तो एक कंकर भी शंकर हो जाता था, परन्तु मुनि हीरा तो एक मूल्यवान हीरा था, जिसको अपने तेजस्वी आभावलय से आगे बढ़ना ही था। यह संघ का वैभव है कि आचार्य और उपाध्याय के रूप में हमें दो महापुरुष एक साथ मिले-

कितना ऊँचा संघ का गौरव, पाए दो-दो पूज्य महान्,
इक-दूजे के दोनों पूरक, दोनों 'हस्ती' की पहचान,
चरण वंदना करता 'गौतम', स्वीकारो भगवान् जी,
रोम-रोम है हर्षित मेरा, पुलकित तन-मन प्राण जी।

यथानाम तथागुण

साहित्य के क्षेत्र में अपने पूज्य पुरुषों का प्रतीकों, रूपकों एवं उपमाओं के माध्यम से गुणानुवाद करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। लौकिक और लोकोत्तर साहित्य सर्जक इनके द्वारा अपने भावों को अलंकृत करते रहे हैं। आचार्यप्रवर श्री

हीराचन्द्र जी के गुणों को अभिव्यक्त करने से हमें सहज ही उनके नाम का एक प्रतीक मिल गया। स्वनामधन्य आचार्यप्रवर अपने नाम के अनुरूप गुणों से सम्पन्न आध्यात्मिक जगत में एक मूल्यवान हीरे की तरह शोभायमान हैं। "कबीरा हीरा संतजन, सहजै सदा प्रकाश" अर्थात् कबीर कहते हैं कि संतजन हीरे के समान होते हैं जो अपने स्वाभाविक प्रकाश से ज्योतिर्मान हैं। वे अपने ज्ञान प्रकाश से जिज्ञासुजनों के हृदय को प्रकाशित कर देते हैं। हमारे आचार्य श्री भी अपने स्वाभाविक प्रकाश से हमें निरन्तर ज्योति प्रदान कर रहे हैं।

संसार में हीरा उत्तमता का प्रतिमान है। नौ रत्नों में हीरा सर्वाधिक मूल्यवान एवं श्रेष्ठ गिना जाता है। इसकी विरल उपलब्धि इसकी मूल्यवत्ता की द्योतक है। मानव जीवन का मिलना भी दुर्लभ कहा गया है। जो इसका उपयोग आत्म-कल्याण में नहीं करते, उनके लिए कबीर ने उलाहना के स्वर में कहा है- "तूने हीरा सो जनम गंवायो, भजन बिना बावरे।" व्यवहार जगत में भी हम देखते हैं कि किसी गुणवान व्यक्ति को 'हीरा' कहा जाता है। जिस तरह से द्रव्य जगत में हीरा मूल्यवान है, उसी तरह से आध्यात्मिक जगत में हमारे आचार्यप्रवर भी अपने नाम के अनुरूप गुणों से सम्पन्न एक महिमावन्त बिरले संत है।

मैं अपनी बात एक जौहरी की भाषा में कहूँ तो हीरे की विशिष्टता चार मानदंडों पर आँकी जाती है- पहली कसौटी है, उसका Cut यानि कटाई एवं तराशना। हीरे को जितनी कुशलता से तराशा जाता है उसका प्रकाश परावर्तन उतना ही प्रखर एवं सौन्दर्यपूर्ण बन जाता है और वह लोगों के आकर्षण का केन्द्र हो जाता है। उसकी विशिष्टता की दूसरी कसौटी है, उसका Colour, अर्थात् वर्ण। शुभ्र वर्ण का होने से वह रत्नों में श्रेष्ठ गिना जाता है। उसकी तीसरी विशिष्टता है Clarity अर्थात् पारदर्शिता। हीरे की पारदर्शिता मन को मोह लेती है। उसकी चौथी विशिष्टता है Carat यानी उसका भार। हीरे का जितना भार होगा वह उतना ही कीमती होगा। कोहिनूर हीरा 300 कैरेट का है,अतः दुनिया में वह सबसे कीमती हीरा है। हमारे आचार्यश्री भी एक ऐसे हीरे हैं जिनको गुरु हस्ती जैसे कुशल शिल्पी ने तराशा है, जिसके फलस्वरूप उनमें आत्मगुणों की रश्मियाँ प्रस्फुटित हो रही हैं। आज वे प्रखर बनकर भक्तजनों के अज्ञान-अंधकार को मिटा रहे हैं। उनकी आत्मिक रश्मियों के सौन्दर्य से हम अभिभूत हैं। हीरे के शुभ्रवर्ण की तरह ही वे उज्ज्वल ज्ञान के धारक हैं। उनके ज्ञान में जीव और जगत का स्पष्ट स्वरूप प्रतिबिम्बित है। इसी तरह उनका निर्मल चरित्र भी हीरे की तरह पारदर्शी है। जैसे वे बाहर में है, वैसे ही अन्तर में हैं। उनकी कथनी और करनी एक ही तरह की है। एक भारी कैरट वाले मूल्यवान हीरे की तरह उनका गुरुत्व भी इतना गरिमामय है कि लोग बरबस उनकी ओर खिंचे चले आते हैं।

इन विशिष्टताओं के अलावा भी हीरे में अनेक गुण हैं। यह विश्व के सबसे कठोर

पदार्थों में गिना जाता है। इसके साथ ही इसका विखण्डन भी शीघ्र हो जाता है। आचार्य श्री भी व्रतपालन में वज्र की तरह कठोर हैं, लेकिन उनका अन्तर्मन इतना कोमल है कि किसी के दुःख से वे शीघ्र पिघल भी जाते हैं। हीरा द्रव्य जगत में समृद्धि और ऐश्वर्य का प्रतीक है। लोग उसका संग्रह अपनी प्रभुता के लिए करते हैं। आचार्य श्री का जीवन रत्नत्रयी से समृद्ध है। अतः उन्हें पाकर धर्मसंघ अपने को ऐश्वर्यशाली समझता है। निर्ग्रन्थ पथ का वरण भी उन्होंने प्रभु की प्रभुता को प्राप्त करने के लिए ही किया है। उनके सद्गुणों की प्रतिष्ठा चहुँ ओर फैल रही है। कहते हैं हीरा जहाँ भी रहता है, चमकता ही रहता है। आचार्यप्रवर भी अनुकूल या प्रतिकूल, किसी भी परिस्थिति में हों, सदैव सम रहते हुए अपनी साधना से चमकते ही रहते हैं। भूमि में असंख्य वर्षों के ताप और दबाव से हीरे का निर्माण होता है। आचार्यप्रवर भी अनेक प्रकार के परीषहों के ताप सहकर ही आध्यात्मिक जीवन में हीरा बने हैं। हीरा कठोर से कठोर वस्तु को काट देता है। आचार्यश्री भी अपनी संयम साधना से पूर्व संचित कठोर कर्मों को काट रहे हैं।

आप देखते हैं कि रत्न विशेषज्ञ अशुभ ग्रहों के निवारण के लिए हीरा धारण करने की सलाह देते हैं। यह तो सांसारिक मंगल की बात हुई। पर मैं कहता हूँ कि अगर आप अपने पाप रूपी ग्रहों के निवारण के लिए आचार्यप्रवर को हृदय में धारण कर लेंगे तो आपका जीवन मंगलमय हो जाएगा। विज्ञापनों में कहा जाता है-Diamond is for ever, यानी हीरा सदैव के लिए है। यह आपके संसार की बात है, पर जहाँ तक आचार्यप्रवर की बात है, आपने आत्मा की अमरता को आत्मसात् कर लिया है और उसी की प्राप्ति के लिए आप साधनारत हैं। इस तरह आचार्यप्रवर आज एक सच्चे हीरे की तरह अपने प्रभा-पुंज से धर्मसंघ को आलोकित कर रहे हैं।

संत कबीर ने हीरे के रूपक से एक बड़ी सुन्दर बात कही है-

बड़े बड़ाई न करै, बड़ा न बोलै बोल।
हीरा मुख से कब कहै, लाख हमारो मोल।।

जो वास्तव में महान् होते हैं वे अपनी महानता का स्वयं बखान नहीं करते। महान् पुरुषों की इस प्रवृत्ति को समझाने के लिए संत कबीर ने हीरे का ही रूपक लिया। आचार्य प्रवर गुणों के सागर हैं, पर वे कभी अपने गुणों का कथन नहीं करते, बखान नहीं करते। मैं तो देखता हूँ कि दूसरे लोग जब आपके गुणगान करते हैं, तब आप माध्यस्थ भाव में रहते हुए अपनी प्रशंसा से उदासीन ही रहते हैं। जहाँ आज कई लोग अपनी पद-प्रतिष्ठा के लिए कितनी जोड़-तोड़ करते हैं, वहाँ हमारे आचार्यश्री संयम-जीवन के प्रारम्भ से ही अपनी महिमा-पूजा से पूर्णतया निरेपक्ष रहे हैं।

बन्धुओं, आचार्यप्रवर अध्यात्म जगत के हीरे तो हैं ही, जैसा कि मैंने पहले कहा है, परन्तु उनका जीवन अनेक अन्य गुणरत्नों से भी शोभायमान हो रहा है।

अप्रमत्त संयत

आचार्यश्री की दीक्षा की अर्धशती पर जब दीक्षा की बात करते हैं तो हमारे मन में एक प्रश्न उठता है कि दीक्षा क्या है? आगमकारों ने दीक्षा को प्रव्रज्या या चारित्र भी कहा है। शास्त्रों में जहाँ दीक्षा का वर्णन आता है, वहाँ यह पाठ आता है-"अगाराओ अणगारियं पव्वइए" अर्थात् अगार से अणगार व्रत ग्रहण करना। अणगार बनकर दीक्षा लेने वाला घर की ममता से मुक्त हो जाता है। संयमपूर्वक साधना करने के लिए जो उपयुक्त वातावरण अणगारवृत्ति में मिलता है, वह घर में रहने पर नहीं मिल सकता। जीवन में संयम का बहुत महत्त्व है और इसकी पालना अणगार बनकर समीचीन रूप से हो सकती है। हमारे जीवन में बाह्य समृद्धि कितनी भी हो, परन्तु यदि संयम नहीं है तो वह समृद्धि हमारे आत्मोत्थान में सहायक नहीं हो सकती। अतः जो साधक संयम का पूर्ण रूपेण पालन कर धर्म की आराधना करना चाहता है, उसके लिए प्रव्रज्या अंगीकार करना ही श्रेयस्कर है।

दीक्षा, राग को प्राणिमात्र के प्रति प्रेम में परिवर्तित करने का राजमार्ग है, संकीर्ण स्वार्थ को परमार्थ से जोड़ने का मार्ग है और ममता से समता की ओर जाने का मार्ग है। दीक्षा संयम के मार्ग का द्वार है, एक भव्य नई चेतना का प्रकटन है, अहं का उन्मूलन है जिसमें परम त्याग की अग्नि में समस्त वासनाओं को विदग्ध कर दिया जाता है। संयमी न तो विषयों में आसक्ति करता है और न ही उनके लिए कोई युक्ति ही करता है। प्रव्रजित के लिए तृण और कनक में समान बुद्धि रहती है। शास्त्रों में कहा है कि मनुष्य का शरीर रथ है, बुद्धि उसकी सारथि है और इन्द्रियाँ उस रथ के घोड़े हैं। इनको वश में करने वाला धीर पुरुष ही संयम के मार्ग पर चलकर संसार सागर को पार कर लेता है। अतः प्रव्रजित होकर जो अपने को जीत लेता है, उसी का संन्यास सफल होता है। मुनि रामसिंह ने कहा है कि जिसने न तो पाँच बैलों (पाँच इन्द्रियों) से अपनी रक्षा की, जो न नन्दनवन (आत्मा) में गया, न ही जिसने आत्मा को जाना और न ही पर को जाना, ऐसे व्यक्ति का संन्यास धारण करना व्यर्थ है। (पाहुड़ दोहा 44)

संयम कहो, चारित्र कहो या आचार कहो, सबका एक ही अर्थ है, एक ही भाव है। महान् श्रुतधर आचार्य भद्रबाहु के शब्दों में "सारो परूवणाए चरणं" (आचारांग निर्युक्ति 17)- समस्त जैन प्ररूपणा (जिन प्रवचन) का सार है, आचार। भावना की पवित्रता, उद्देश्य की उत्कर्षता और प्रवृत्ति की निर्दोषता- बस इन्हीं तीन सूत्रों में समस्त जैन दर्शन का सार समाया हुआ है और यही हमारी आध्यात्मिकता का मूल आधार है। व्यक्ति

की बुद्धि और योग्यता उसे ज्ञानार्जन का लाभ देकर ऊँचाई तो प्रदान कर सकती है, पर चारित्र ही उसे ऊँचाई पर बनाए रखता है।

आचार्य श्री का जीवन शुद्ध रूप से आगमानुसारी है। उनमें चारित्र की उत्कृष्टता के जीवन्त दर्शन होते हैं। आचार्यश्री के स्वयं का पुण्य कहिए, घर-परिवार के सुसंस्कार कहिए, गुरु हस्ती का प्रभाव कहिए अथवा स्वयं का सत्पुरुषार्थ कहिए, यह हीरा हमेशा हीरा ही रहा है, कभी भी मैल की हल्की सी रंज भी अपने उपर नहीं लगने दी। आपका जीवन भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त है। आपने जीवन में कभी भी शैथिल्य को प्रवेश नहीं होने दिया। 'काले कालं समायरे' की उक्ति को आपने अपनी दैनिकचर्या में पूर्णरूप से आत्मसात् कर लिया है। ज्ञानीजन कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करते हैं, अन्य पुरुष भी उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। इस दृष्टि से आचार्य श्री अपनी आचार संहिता में अपवाद करने से प्रायः बचते रहते हैं, भले ही वह अपवाद शास्त्र मर्यादा का उल्लंघन न करता हो। आप परीषहजयी हैं। शारीरिक अस्वस्थता में भी आपका आत्मबल सुदृढ़ बना रहता है। दक्षिण भारत प्रवास में घुटनों में भीषण पीड़ा का प्रकोप होने पर भी आप अप्रतिहत रूप से विहार करते रहे और अपनी साधुचर्या की लौ को कभी मन्द नहीं होने दिया। उनकी मौन साधना नियमित रूप से चलती रहती है। आचार्यप्रवर प्रकृति से गम्भीर एवं अल्पभाषी हैं। आपका वाणी विवेक अनुकरणीय है। आप निरर्थक चर्चाओं में तनिक भी रुचि नहीं लेते हैं। आपको देखकर दशवैकालिक सूत्र की वह गाथा याद आ जाती है। जिसमें कहा है-

दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं।।

(दशवैकालिक सूत्र 8.49)

आत्मार्थी साधु दृष्ट, परिमित, असंदिग्ध, परिपूर्ण, व्यक्त, वाचालता और उद्विग्नता रहित भाषा बोले। आचार्यश्री के साथ जब भी कोई वार्ता होती है तो वाणी के ये सभी गुण उनमें परिलक्षित होते हैं। वे हमेशा दोषपूर्ण भाषा से बचते हैं। शब्द पत्तियों की तरह होते हैं। जब वे ज्यादा होते हैं तो अर्थ के फल नहीं दिखते हैं। अतः शब्द जितने आवश्यक हों, उतने ही बोलने चाहिए। आचार्यश्री के कम बोलने का सम्भवतः यही रहस्य है।

लोक संयोगों का परित्याग कर आचार्यप्रवर निर्ग्रन्थ-पथ पर अबाध रूप से गतिमान हैं। ऐसे धीर-वीर कभी असंयम की आकांक्षा भी नहीं करते, वे तो निरन्तर समाधि भावों में रहकर स्व-पर हित में रत रहते हैं। संयम और समाधि मानो उनके जीवन का

मधुरतम काव्य है, जीवन का आधार है, निज सम्पदा का द्वार है और दुःखों का विश्राम है। संयम ही जिनका आनन्द है, दया ही जिनका हृदय है, जिनवचन ही जिनके लिए उपादेय हैं, भला वे किसके वन्दनीय नहीं होंगे? ज्ञान, दर्शन और चारित्र का उनके जीवन में ऐसा सुयोग है कि वे एक आदर्श सन्त की गौरवशाली पंक्ति में आ गये हैं। स्वीकृत कर्म के प्रति उनकी निष्ठा समादरणीय ही नहीं, अपितु अनुकरणीय भी है। उन्होंने अपने जीवन में भगवान द्वारा अपने प्रिय शिष्य गौतम को दिये गये अन्तिम उपदेश-*''समयं गोयम! मा पमायए''* (हे गौतम! क्षणभर का प्रमाद मत कर) को अपने जीवन में उतारने का सफल प्रयास किया है। आपका जीवन निर्मल और निर्द्वन्द्व है, जिसमें शक्ति, शील और सौरभ का विरल संयोग है। उन्होंने कषायों की उष्णता को शान्त कर अपने जीवन में समरसता भर दी है। आगम में भी कषायों को उपशम करने वाले साधक को श्रमण कहा है। *''जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा''* (बृहत्कल्प सूत्र 1.35) अर्थात् जो उपशान्त होता है उसके संयम की आराधना होती है। ऐसा श्रमण ही धर्म का आराधक होता है। धर्म के उत्कृष्ट आराधक के रूप में आचार्यप्रवर श्रमण वर्ग के सतत प्रेरणा स्रोत हैं। आचार्य के दायित्व का निर्वाह करते हुए वे एक सूरज की तरह जीते हैं जो खुद तपकर भी संघ को रोशन करते हैं। वे उस पेड़ की तरह हैं जो धूप में तप कर भी आने वाले को शीतल छाया प्रदान करता है। वे एक फूल की तरह हैं जो अपने गुणों की खुशबू बिखेर कर अपने सान्निध्य में आने वालों को प्राणवान बनाता है। इसके अतिरिक्त वे उस साधु की तरह हैं जो अपने दुःख को न देख, दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए आतुर रहता है।

प्रवचन प्रभावक

बन्धुओं, दो शब्द हैं, एक वचन और दूसरा प्रवचन। वचन का अर्थ है-सहज या साधारण रूप से कही गई बात या उक्ति। लेकिन जिस वचन में लोक-कल्याण की भावना, आत्म-विकास के साथ-साथ समाज सुधार की प्रेरणा और जन-जागरण का उद्घोष रहता है, वह प्रवचन की श्रेणी में आता है। इस दृष्टि से संतों एवं आत्मज्ञानी पुरुषों की वाणी ही प्रवचन के रूप में मान्य है। जिनशासन में द्वादशांगी गणिपिटक को प्रवचन कहते हैं। आगमों के तलस्पर्शी ज्ञान द्वारा जिनशासन की प्रभावना करना प्रवचन-प्रभावना है। रत्नकंरड श्रावकाचार में कहा गया है कि अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करके जिनेन्द्र भगवान के शासन की महिमा प्रकट करना, प्रभावना है। शास्त्रों में ऐसी आठ प्रकार की प्रभावनाएँ कही गई हैं, जिनमें प्रथम है प्रवचन प्रभावना और दूसरी है धर्मकथा प्रभावना। जिनशासन की महिमा का प्रसार करना सम्यक्त्व का एक भूषण है। अतः आगमों का अध्ययन करके प्रवचन करना संत के लिए स्वाध्याय है, उसके ज्ञान की अनुभूति की

अभिव्यक्ति है और उसके शास्त्रज्ञान की कसौटी भी है। यही कारण है कि प्रवचन को संत की दिनचर्या में एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वस्तुतः प्रवचन एक ऐसी विधा है, जिसमें साधक का स्व-पर हित निहित है। ज्ञानी कहते हैं कि पाँच ज्ञान में से चार ज्ञान तो साधक के स्वयं के लिए हैं, परन्तु श्रुतज्ञान ही एक ऐसा ज्ञान है जो स्व-पर उपकारक होता है। प्रवचन श्रुतज्ञान का एक पहलु है। प्रवचन और धर्मकथा, स्वाध्याय के ही भेद हैं। हितबुद्धि से प्रवचन और धर्मकथा करने वाला स्वयं का भी हित करता है और श्रोताओं का भी हित करता है। इससे तीर्थंकर प्ररूपित धर्म के प्रति अनुराग बढ़ता है और कर्म की महानिर्जरा होती है।

आचार्यप्रवर की प्रवचन कला से स्वयं पूज्य गुरुदेव को आत्मतोष था, जिसके लिए वे उन्हें निरन्तर प्रोत्साहित करते थे। आगम ग्रन्थों का विशद ज्ञान होने के कारण उनकी वाणी मूल स्रोत से प्रवाहित होती है। उनकी वाग्धारा उनके ज्ञान को तो प्रकट करती ही है, परन्तु उसमें उनकी अनुभूतियों के आत्म-विश्वास के कमल भी खिले होते हैं। उनकी व्यञ्जन शैली अत्यन्त सारगर्भित होती है। आचार्यप्रवर आगम के गूढ़ सूत्रों को इतनी सरलता के साथ व्यक्त करते हैं कि श्रोताओं की उपयोग रुचि जाग्रत हो जाती है। वे दुरुह और बोझिल भाषा से बचते हुए सामान्यजनों के लिए बोधगम्य, किन्तु अत्यन्त प्रभावी तरीके से उत्तम दृष्टान्तों के साथ अपनी बात इस तरह से कहते हैं कि वह श्रोता के हृदय में सीधी उतर जाती है। उनके प्रवचनों की यह विशिष्टता है कि जिस विषय को लेकर वे बोलते हैं, उसमें प्रवचन के अन्त तक प्रायः किसी भी तरह का विषयान्तर नहीं होता है और नियत समय में, युक्ति-युक्त तरीके से, वे अपनी बात कहकर प्रवचन का समापन कर देते हैं।

आचार्यश्री के प्रवचन लोकरंजक नहीं होते हैं। उनकी वाणी में प्रायः आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के उपाय ही होते हैं। संयमी जीवन के लिए सम्यक् रूप में व्रत पालन पर वे अधिक जोर देते हैं। तप करने में आन्तरिक शुद्धि पर ध्यान नहीं देने से तप के फूल तो खिल सकते हैं, पर उनमें सुवास नहीं होती है। श्रावक कहलाने वाले व्यक्ति, जब श्रावक के साधारण गुणों से भी रिक्त होते हैं तो आचार्य श्री को गहरी वेदना होती है, जिसे वे अपने प्रवचनों में यदा-कदा व्यक्त करते रहते हैं। उस समय श्रोताओं को अपने अकर्तृत्व की वेदना चुभने लग जाती है और वे स्वयं को बदलने के लिए तत्पर हो उठते हैं। उनके प्रवचनों में प्रायः उत्तराध्ययन सूत्र की उस गाथा (22.47) का संदेश प्रतिध्वनित होता है, जिसमें कहा गया है-

कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं चं सव्वसो।

इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे।।

अर्थात् तुम क्रोध, मान, माया, लोभ का सभी प्रकार से निग्रह करो, इन्द्रियों को विषयों से हटाओ और आत्मा को संवर में लगाओ।

अपने उत्प्रेरणामय जीवन से वे श्रद्धालु गृहस्थों को सद्धर्म की ओर प्रेरित करते रहते हैं। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्णाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु आदि सुदूर प्रान्तों में पदयात्रा एवं वर्षावास करते हुए उन्होंने जिनवाणी का जो अव्याहत रूप में प्रसार किया है, वह उनके सतत कर्मठ जीवन का सजीव साक्ष्य है। आचार्य श्री के उपदेश साधनामय जीवन जीने के सही तरीकों पर सोचने की दिशा देते हैं। जब वे प्रवचन देते हैं तो ऐसा लगता है कि वे मानो विद्यारूपी रथ पर आरूढ़ वे जिनेश्वर प्रवर्तित ज्ञान की अनुपम प्रभावना करने वाले उत्तम सारथि हैं। एक शायर के शब्दों में अपनी बात कहूँ तो-

गले पे उनके खुदा की अज़ीब बरक़त है।
वे बोलते हैं तो एक रोशनी निकलती है।।

ऐसे सन्त अपनी सुभाषित वाणी से यथाकाल बरसने वाले मेघ के सदृश यश प्राप्त करते ही हैं। *(क्रमशः)*

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

जीवन-सुमन

जीवन
एक सुमन है,
सेवा उसकी
सुवास है,
और
पराग उसका
विराग है।

वचन-विवेक

वचन को
न बना
तीखा
तीर,
बना
मीठा
नीर।

काया से कथन

काया से
कह दो-
'तू नहीं मेरी
मैं नहीं तेरा'
सम्बन्ध
जाएगा कट
मुक्ति मिलेगी झटपट।

गुरु-चरण

नहीं चाहता
गम
तो
गुरु चरणों में नम।

आराधन

कर मत
धन-धन
अब कर
जिनमत का आराधन।

विधेय चिंतन

वही पाते हैं
ध्येय,
जिनका चिन्तन
होता है विधेय।

-संकलित

प्रवचन

अपनत्व एवं एकत्व की साधना

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा 02 सितम्बर, 2012 को राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित अध्यात्म-चेतना शिविर की सम्पूर्ति के अवसर पर फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वरिष्ठ निजी सहायक, वन-विभाग, जयपुर ने किया है। **-सम्पादक**

समाधि के लिये निश्चय में एकत्व और व्यवहार में अपनत्व के साथ पूर्ण आत्म विकास कर मुमुक्षुओं को एकत्व व अपनत्व की जागृति प्रदान करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों और सबका ध्यान रखते हुए भी स्वयं के ध्यान में लीन यानी अपनत्व के साथ एकत्व की साधना में तल्लीन संघ के नायक आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात् ।

अभी मुनि श्री फरमा रहे थे कि सबका ध्यान रखते हुए खुद ध्यान में लीन होना सही जीवन जीने की कला है । ऊपर उठने की कला है । सेवा तथा त्याग के लिये सभी अपने हैं, यह है अपनत्व की साधना तथा अपनी पूर्ति के लिये अपना कोई नहीं है, यह है एकत्व की साधना । जब तक इन्द्रिय दृष्टि में जीव जीता है तब तक उसे दुनिया स्वार्थी नज़र आती है । अपना स्वार्थ पूरा होता है तो वह रोना नहीं रोता है और अपना स्वार्थ पूरा नहीं होता है तो दुनिया को दोष देता है, उसे स्वार्थी बताता है।

दुनिया मतलब की है, दुनिया स्वार्थी है,सब अपना-अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं, यह सोचना यह कहना भी भीतरी द्वेष की भूमिका में ही होता है । अपना प्रयोजन सिद्ध नहीं हो पा रहा है,अपनी कामना पूरी नहीं हो पा रही है, दूसरा हमारी अपेक्षा पूर्ति में सहकारी नहीं बन पा रहा है, तभी तो हमें उसमें अन्यथा बुद्धि होती है । किसी से अपेक्षा रखने पर ही तो उपेक्षा के शिकार होते हैं । साधक के भीतर तो सदा वीतराग वाणी के स्वर गूंजते हैं । पर्युषण पर्व पर अन्तगडसूत्र में सुन ही चुके हैं - क्या कह रहे हैं भगवान- **' मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि,** हे कृष्ण! तू उस पुरुष के दोष मत देख, तू उस पुरुष को दोषी मत कह । क्या कह रहे हैं हरिकेशीबल अणगार- **' पुव्विं**

च इण्हिं च अणागयं च मणप्पओसो ण मे अत्थि किंचि !' मेरा भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों के प्रति किसी प्रकार का मन में द्वेष नहीं है। गजसुकुमाल के सिर पर अंगारे रख कर जीवन लीला समाप्त कर दी गई है तथा हरिकेशीबल पर दण्डों,मुक्कों का प्रहार किया गया है, पर उन महापुरुषों को अपने शरीर में अन्यत्व अनुभूत हो रहा है। इसीलिये प्रत्येक जीव के प्रति अपनत्व है, और स्वयं के असंख्यात आत्म-प्रदेशों में, अपने उपयोग गुण में - उपयोग के अनुरूप अध्यवसाय, परिणाम और जीवन की धारा में एकत्व है । काया भी प्रशस्त योग में है, वचन एवं मन भी प्रशस्त है। तीनों की समाधारणता है । समकित के आठों अंग इसी एकत्व एवं अपनत्व की कला भी सिखा रहे हैं:-

णिस्संकिय णिक्कंखिय,णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उवबूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ।।

उत्तराध्ययन, 29.31

समकित के आठ अंग हैं- निःशंकित, निष्कांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपबृंहण, स्थिरीकरण, वात्सल्य और प्रभावना। इनमें से प्रारम्भिक चार अपने लिये हैं,एकत्व के लिये हैं, शरीरादि में अन्यत्व अनुभूति के लिये हैं । किसी से अपेक्षा नहीं करने के लिये है। अपनी पूर्ति के लिये अपना कोई नहीं है, इस समझ के लिए है। पीछे के चार सामूहिक जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं- सेवा तथा त्याग के लिये सभी अपने हैं,इसका पाठ पढ़ा रहे हैं, किसी की उपेक्षा नहीं करने का गीत गुनगुना रहे हैं । शंका कब होगी ? आकांक्षा कब होगी ? अपनी क्रिया के प्रति सन्देह कब होगा ? इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विचारक जे. कृष्णमूर्ति को उनके गुरु ने अध्यात्म पथ पर चलने के लिये विवेक, वैराग्य, सदाचार और प्रेम के रूप में चार आवश्यक गुण बताते हुए कहा था- "निजी स्वार्थ की सभी इच्छाएँ समाप्त होने पर भी अपने कार्यों का फल देखने की इच्छा बनी रह सकती है । किसी की सहायता करने पर आप यह देखना चाहें कि आपने उसकी कितनी सहायता की है, संभवतया आप यह भी चाहें कि वह जान भी ले कि आपने उसकी कितनी सहायता की है और उसके लिये वह कृतज्ञ भी हो, परन्तु यह भी एक इच्छा ही है और आत्मविश्वास का अभाव भी । जब आप अपनी शक्ति किसी की सहायता में लगाते हैं तो उसका फल तो होगा ही, चाहे आप उसे देख सकें या न देख सकें । यदि आप कर्म के नियम को जानते हैं,तो यह भी जानते हैं कि ऐसा अवश्य ही होगा । इसलिये आपको सत्य का अनुसरण सत्य के लिये ही करना चाहिये ,बाहरी फल की आशा से नहीं। "

सिद्धां जैसो जीव है। सिद्ध के सारे गुण जीव के भीतर विद्यमान हैं। आवरण आया हुआ है, विस्मरण हो गया है,पर ज्ञान भीतर है, सुख भीतर है, दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट है, फिर

कहाँ शंका रहेगी ? कहाँ सुख के लिये बाहरी भागदौड़ होगी ? कहाँ जड़ से सुख की कामना रहेगी। उस एकत्व भाव का दिग्दर्शन करा रहे हैं नमिराजर्षि-

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ।।

उत्तराध्ययन, 9.16

अपने ध्यान में लीन होकर एकत्व को अनुभव करने वाले मुनि सर्वतः विप्रमुक्त होते हैं। कल इसी की चर्चा चल रही थी। आचार्य भगवंत ने सामाचारी का विवेचन फरमाते हुए गृहस्थ जीवन में, घर की व्यवस्था में मर्यादा सहित शांति,समाधि कैसे बढ़े, इसका सुन्दर विवेचन किया था। समकित के अन्तिम चार अंग उसी का विवेचन कर रहे हैं। वैयक्तिक साधना में आगे बढ़ने के लिये भी ये अनिवार्य हैं। अन्तर में अकेले रहने वाले साधकों को भी शरीर की आवश्यकता-पूर्ति में दूसरों पर अवलम्बित रहना ही होता है। अपशब्द का सेवन नहीं करने वाले, बस्तियों से दूर रहने वाले,उत्कृष्ट आराधना में लीन जिनकल्पी को भी शरीर की आवश्यकता-पूर्ति के लिये गांव में, नगर में, गृहस्थों के यहां जाना ही होता है। विशेषावश्यक भाष्य में जिनकल्पी की साधना की तैयारी का दिग्दर्शन है। जीतकल्पभाष्य आदि में भी विवेचन है। एकत्व के उत्कृष्ट साधक भी अपनत्व में कैसे रम जाते हैं। यदि देव उपसर्ग देते हुए स्थण्डिल भूमि को जीवादि एवं हरी से व्याप्त कर अस्थण्डिल बना दें तो जीव मात्र के प्रति अपनत्व रखने वाले वे महात्मा छः मास तक मल मूत्र की बाधा को रोकने का सामर्थ्य वर्धित कर लेते हैं, किन्तु अस्थण्डिल पर नहीं परठते हैं।

सामाचारी सामूहिक जीवन जीने की कला है। स्थविरकल्पी गुरुकुल में रहकर एकत्व भावना द्वारा, एकाकी विचरण के दूसरे मनोरथ के द्वारा अन्तर में उतरते हुए भी अपनी किसी भी प्रवृत्ति से किसी भी क्रिया से साथियों को बाधा नहीं पहुँचाते हैं। सेवा तथा त्याग के लिये सभी को अपना मानते हैं, वे पीछे के चारों अंगों को सार्थक करते हैं। प्रतिमा को स्वीकार करने वाले अणगार के जीवन से भी यह उद्घोषित होता है।

अपने जीवन में कैसी जागृति है? शरीर में परायापन अनुभव करने वाले तथा आत्मभावों में लवलीन साधक के सामने कोई जानवर कुपित होकर आ रहा है तो वे भी रास्ता नहीं छोड़ते, किन्तु जानवर उनसे डर रहा है तो रास्ता बदल लेते हैं। साधना मार्ग में, आत्मा के हित को साधने के मार्ग में साधक को दुनिया स्वार्थी नहीं, अपनी सहकारी प्रतीत होती है। संसार की सच्चाई दिखाकर वह संसार से मुक्त होने की प्रेरणा प्रदान करती है, संसार से लिये कर्जे को चुकाने का अवसर प्रदान करती है, शाश्वत सुखों को प्रकटाने में सहकारी बनती है। कदाचित् ऐसा भी सुनने को मिलता है, यह तो हवाई उड़ान है,कपोल

कल्पनाएँ हैं, कहाँ संभव है ऐसा ? आज तो चारों तरफ भीड़ में,नये-नये सबंध बनाने में, मित्र बनाने में सांसारिक प्राणी जुड़े हैं। वहाँ कौनसा श्रावक अकेला साधना करता नज़र आता है? साधु-साध्वियां भी जहां भक्तों की संख्या कम आती हो, थानक सूना सा पड़ा रहता हो, वहां रुकने को, चौमासा करने को कहाँ तैयार हैं? यदि कोई बताने वाला,बोलने वाला नहीं मिले तो बोरियत लगती है । एकत्व के गान शास्त्रों में ही अच्छे हैं । अन्दर के रस का स्पर्श नहीं होने तक भले ही यह सही प्रतीत हो सकता है, पर साधना का सत्य कुछ और है- जिसे उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्याय की दूसरी गाथा में कहा गया है :-

समिक्ख पंडिए तम्हा,पास जाइपहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मित्ति भूएहिं कप्पए ।।

दुःखों से छुटकारे का यही राजमार्ग है । ज्यों-ज्यों साधक अन्तर में जागरूक बनेगा, अपने ध्यान की गहराई में डूबता जायेगा, निःशंकित होता चला जायेगा, निःकांक्षित होता चला जायेगा तो सारे जीवों में अपनत्व बढ़ता ही जायेगा । अपने से सत्य का अन्वेषण करेगा। पुद्गल में परायेपन की अनुभूति होगी, जीव मात्र में शुद्ध आत्मा ही दिखेगी,समस्त प्राणियों में मैत्री की अजस्र धारा प्रवाहित होगी। इसीलिये कषाय-मुक्त या कषाय मुक्ति के निकटस्थ यथाख्यात चारित्र और सूक्ष्म संपराय चारित्र वाले कल्पातीत ही होते हैं । इस मार्ग में आगे बढ़ने में यम, नियम और संयम उपयोगी होते हैं। पंच महाव्रत को पातंजल योगसूत्र में यम कहा गया है। निज के लिये नियन्त्रण नियम और समूह के लिये नियन्त्रण संयम भी आवश्यक है। कषाय का उदय ही यम, नियम एवं संयम की पालना में बाधक होता है, शुक्ल ध्यान तो खंति,मुत्ति,अज्जवे,मद्दवे की निर्मल आराधना में ही प्राप्त होता है । शुक्ल ध्यान में शंका,कांक्षा आदि दोष हो ही नहीं सकते, वहां तो एकत्व-अपनत्व की भव्य आराधना होती ही है । पर हमें तो शुक्ल ध्यान की भूमिका स्वरूप धर्म-ध्यान में आगे बढ़ना है । यह श्राविका संघ का शिविर उसी भूमिका को विकसित करने के लिये आयोजित हुआ है, आज उसकी पूर्णता का दिवस है । जो यहां सीखा है उसे अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर फेरना है, साथियों को सिखाना है । दायित्व बहुत बढ़ गया है । 'मैं' और 'मेरे' की हवा में केवल अपनी सुख-सुविधा में समाज एवं सह अस्तित्व को नकारने के वातावरण में, धूम्रपान जैसे नशीले जहर में आकण्ठ निमग्न होती युवा पीढ़ी को दिशा प्रदान करने का दायित्व पूरा वही कर सकता है जो सामूहिक जीवन के इन अंगों को आत्मसात् कर चलता है ।

समकित का एक अंग है- उवबूह अर्थात् उपबृंहण, गुणों का अनुमोदन, गुणीजनों को देख प्रफुल्लित होना, प्रमुदित होना। जहाँ साधक मिले जहाँ साधना हो वहाँ देखकर

अन्तर में आनन्द व्याप्त हो जाए । पंच परमेष्ठी तो सर्वश्रेष्ठ हैं ही, उनका तो प्रतिपल स्मरण करना ही है, पर सम्यक्दृष्टि तो सड़े हुए कुत्ते में भी चमकीले दांत को देखता है । सामने वाला किस भाव से कह रहा है इसे जानना है। मुनि गजसुकुमाल ने जिस दिन दीक्षा ली, उसी रात्रि में सोमिल ब्राह्मण के सिर पर धधकते अंगारे रख दिए, किन्तु अर्हन्त अरिष्टनेमि मुनि गजसुकुमाल के भ्राता वासुदेव श्रीकृष्ण को न केवल सोमिल के प्रति द्वेष करने से, दोष देखने से रोक रहे हैं,अपितु मार्ग में कृष्ण के द्वारा अन्दर ईंट पहुँचा कर वृद्ध पुरुष को की गई सहायता के सदृश सहायता बतला रहे हैं । सामान्य जन की दृष्टि में,लोक व्यवहार में कितना अधम कार्य है,जघन्य कृत्य है । नव दीक्षित, छोटी अवस्था,अत्यन्त सुकुमार, छ:काय रक्षक, प्राणिमात्र का हितचिन्तक, उसके माथे पर खैर के अंगारे,जाज्वल्यमान अग्नि..... कौन कह सकता है इसे सहायता? किसे नज़र आये इसमें उपकार? दो शब्द कोई विपरीत बोल दे, जरा सा कोई बाहरी नुकसान कर दे, कोई हमारी बात को ठुकरा दे तो हम उखड़ जाते हैं, किन्तु अपनत्व या आत्मीयता का साधक वहाँ भी अपनत्व को अपनाता है। उसके लिए कोई गैर नहीं। ''सव्वभूयप्पभूयस्स समं भूयाइं पासओ , अप्पसमं मन्निज्ज छप्पिकाए'' । वह समस्त षट्कायिक जीवों को अपने समान मानता है। सामूहिक जीवन में गुणों का अनुमोदन अनिवार्य है । सम्यग्दृष्टि को तो मुक्ति पथ पर आगे बढ़ना है। यह अवश्य है कि ऐसी गुण दृष्टि उसे संसार में और अच्छा, और अच्छा ही बनाती जाती है।

कतिपय लोग इस गुणदृष्टि की निन्दा करते हुए भी देखे जाते हैं, किन्तु हमें उन पर भी क्षुभित नहीं होना है,जिसे केवल गुणों को देखना है उसे अरिहंत-सिद्ध पर ही ध्यान एकाग्र करना चाहिये, क्योंकि सम्पूर्ण दोषमुक्त वीतरागी ही हो सकते हैं । सरागी जीव में मोह के उदय से कुछ न कुछ न्यूनता रहती ही है, वहाँ हमें एक-एक गुण को देखकर भी अनुमोदना करनी है। उन लड़खड़ाने वालों की सेवा कर उन्हें सन्मार्ग में स्थिर करना भी सम्यक्त्व का अंग है । आचार्य भगवन्त फरमाते हैं ''बाहर में किसी की इज्जत जाने ना पाए, भीतर में दोष रहने ना पाए'', दो दिन से इसी की चर्चा चली यही विकास का मार्ग है। प्रथम दिन ब्राह्मीजी सुन्दरीजी के द्वारा बाहुबली को मान के मदोन्मत्त हाथी से उतारने की चर्चा चली, तगरा नगरी के पितृ-संत के वियोग के कारण से भिक्षा की गर्मी से भटके अर्हन्नक जी को उनकी माता द्वारा आत्म भावों में लौटाने का आख्यान आया, तो रथनेमि जी को रूप से हटाकर स्वरूप में अवस्थित कराने वाली महासती राजीमती जी के भी गुण-कीर्तन किये गये । दूसरे दिन श्राविकारत्नों के रूप में मातृशक्ति के गुणगान किये गये । गागिला के रूप में भावदेव को स्थिर करने वाली,उपासकदशांग में विविध नामों से माता,पत्नी के रूप में श्रावकों को स्थिर करने वाली सम्यक्त्व के इसी अंग की आराधना

करने वाली सन्नारियाँ रहीं। वात्सल्य शब्द तो इन्हीं मातृशक्ति की वत्स के प्रति रहने वाले आंतरिक भावों का बोधक है।

स्वधर्मी विसरो नहीं, क्रोड़ जनों के बीच ।
धेनु सम उनसे मिलो, वत्सल भाव उलीच ।।

संघीय साधना के सूत्र, मिले हुए के सदुपयोग के सूत्र, प्राणिमात्र को आत्मवत् देखने के सूत्र जीवन का विकास करने वाले हैं। आज हम सामान्य नारी के आदर्श उदाहरण देखने का प्रयास कर रहे हैं । साध्वियों की चर्चा हुई, श्राविकाओं की वार्ता हुई, जैनेतर सामान्य सद्गृहिणी के संस्कार की बात करनी है। धर्म को नहीं जानने वाली बहनें भी सदाचार के उच्च आदर्श को कायम कर सकती हैं, तब धर्म की अनुयायी इन बहनों का जीवन कैसा प्रभावक होना चाहिये, यह चिन्तन करना है। प्रभावना समकित का आठवां अंग भी कहा गया है।

'महाराष्ट्र की मर्दानगी' में पढ़ने को मिला-बड़े काम बड़े व्यक्ति ही कर सकते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होता । पांच करोड़ का अस्पताल श्रीमंत ही बनवा सकता है, यह समझ में आये वैसी बात है । पचास लाख का बगीचा श्रीमंत ही लगा सकता है, यह भी समझ आये वैसी ही बात है। परन्तु.....महान कार्य तो छोटे लोग भी कर सकते हैं । अपराधी को क्षमा देने में गरीबी बिल्कुल प्रतिबंधक नहीं बनती । मन को सरल रखना हो तो इसके लिये अमीरी होनी अनिवार्य नहीं है । अनीति के मार्ग पर कदम न रखने की गरीबी में कोई मनाही नहीं है । संतोषवृत्ति के स्वामी बनने के लिये विपुल संपत्ति होना आवश्यक नहीं है ।

संक्षिप्त में, पैसे से ही होने वाले काम भले ही धनवान कर सकते होंगे, परन्तु जो कार्य प्रचण्ड सत्त्व से और निर्मल श्रद्धा से हो सकते हैं वे कार्य तो गरीब भी आसानी से कर सकते हैं । छोटे व्यक्ति के महान् कार्य का अनुभव एक श्रीमंत को कैसा हुआ, यह उसी के शब्दों में....

महाराज साहब, उस शहर में मैं पहली बार गया था । दर्शनीय स्थल देखने की मेरी प्रबल इच्छा थी और इसलिये मैंने एक रिक्शा वाले से सम्पर्क किया ।

मेरे रिक्शे में बैठ जाइए। भाड़ा? सौ रूपये लगेंगे। उस रिक्शा चालक की उम्र शायद 19-20 वर्ष से अधिक नहीं होगी, पर उसका बात करने का तरीका मुझे भा गया । मैं रिक्शे में बैठा और दर्शनीय स्थलों पर ले जाने के लिये उसने रिक्शा आगे बढ़ाया । कई ऐसी जगहों पर भी वह मुझे ले गया जहां ले जाने की उससे कोई बात भी नहीं हुई थी । सेठ, पहली ही बार..... हां, इस शहर में पहली बार ही आया हूँ तो मुझे इस शहर के

सभी दर्शनीय स्थल आपको बताने हैं, यह कहकर वह मुझे अनेक स्थानों पर ले गया। आखिर शाम हुई। उसने रिक्शा खड़ा किया। मैंने जब उसे पाँच सौ रूपये का नोट निकालकर दिया तो वह चार सौ रुपये वापस करने लगा।

तुम्हें रुपये वापस नहीं देने हैं अर्थात् ? तुम ये 500 रुपये रख लो। पर क्यों? मैं खुशी से तुम्हें दे रहा हूँ। यह संभव नहीं है, पर क्यों? शाम या रात को जब घर पहुँचता हूँ तब सारे रूपये मुझे मम्मी को देने होते हैं, घर में हम दो लोग ही हैं। आप 500 रुपये दोगे और मैं घर जाकर मम्मी को ये रूपये दूँ तो मुझे मम्मी डांटेगी।

क्यों ?

उन्होंने मुझे संस्कार दिये हैं कि बेटा ! कम मिले तो कम लाना। हमें एक दिन भूखा रहना पड़े तो रह लेंगे,किन्तु बिना अधिकार के पैसे तुम इस घर में कभी मत लाना, पर ये बिना अधिकार के पैसे कहा हैं ? मैं स्वयं प्रसन्न होकर तुम्हें दे रहा हूँ। आपकी बात सच है, पर ये रूपये बहुत ज्यादा हैं। आप मुझे इनाम ही देना चाहते हो तो भाड़े के सौ रुपये के बजाय एक सौ पचास रुपये दे दीजिए, पर पाँच सौ रुपये तो हर्गिज नहीं लूँगा, क्योंकि इससे मेरी मम्मी को दु:ख भी होगा और वे मुझे डांटेगी भी। महाराज साहब, हम दोनों के बीच चल रही यह बात वहां स्थित एक होटल मैनेजर सुन रहा था। वह उस रिक्शा ड्राइवर को पहचानता था। उसने कहा- "तुम्हारी मम्मी से मैं बात कर लूंगा, पर भाई खुशी से तुम्हें दे रहे हैं तो ले लो।" पर इसके बाबजूद जब वह पाँच सौ रुपये लेने को तैयार नहीं हुआ तब मैंने उसकी जेब में पाँच सौ रुपये का नोट रख दिया। वह बड़े असमंजस भाव से मेरे सामने देखता ही रहा। यह हुई एक माता द्वारा दिये गये संस्कारों की चर्चा,पर यह महाराष्ट्र की घटना है।

इसी महावीर नगर के निवासियों की घटना भी सुनने को मिली। आपके ही यहां से निकले श्री सुभाष मुनिजी से। वर्षों पुरानी बात भले ही हो, पर आज भी प्रेरक है। लाखों का माल लेकर जा रहे श्रेष्ठी का बैग टू व्हीलर से गिर पड़ा। पिता पुत्र दोनों ही परेशान, सुना 30-35 लाख का माल, आज की तारीख में मूल्यांकन करें तो करोड़ से ऊपर हो सकता है। साधुपने की बात करनी है, श्रावकपने की बात करनी है, साध्वी बनना है, श्राविका बनना है, व्रताराधन करना है। पर जब तक सम्यक्त्व नहीं,धन सम्पत्ति एवं शरीर में परायापन की अनुभूति नहीं तब तक एकत्व-अपनत्व भाव नहीं हो सकता। तब तक आराधना होने वाली ही नहीं है। धर्म का भव्य प्रासाद समकित की नींव पर ही खड़ा होगा और वह सम्यग्दर्शन इस पैसे को भगवान समझने से प्राप्त नहीं होता। पैसे से मुक्त, पुद्गल से मुक्त भगवान पर दृष्टि एकाग्र करने से होता है। भीतर में,दृष्टि में मोह मूढ़ता समाप्त होने पर होता है। उसी पवित्रता के लिये चर्चा चल रही है- बैग मिल गया, वैल्डिंग करने

वाले,सामान्य स्थिति में जीने वाले 100-150 रुपये रोज कमाने वाले एक सरदार को। समय निकाल कर वह दिन का काम पूरा कर अपनी साइकिल पर घर की ओर लौट रहा था तब बैग मिल गया। खोला बैग,दिखा माल, फिर भी उसकी नीयत में कोई परिवर्तन नहीं। जिन्दगी भर का दारिद्र्य मिट सकता है, किन्तु भव-भव में दरिद्री बना देगा यह लोभ,यह अतृप्ति वांछा रसातल में पटकने वाली है। घर पहुँचा,साइकिल अन्दर लाने लगा। पत्नी ने पूछा यह बैग किसका? सरदार जी ने कहा, रास्ते में पड़ा मिला। क्या है इसमें? रत्न हैं, जवाहरात हैं। किसके हैं? मालूम नहीं। श्राविकाओं का उच्चादर्श? अपने-अपने को टटोलने का प्रयास अवश्य करना है। सामान्य स्थिति की, दिन-रात घर के काम में रचने-पचने वाली महिला, लूखा,सूखा खाकर ठण्डा पानी पीकर जीने वाली महिला क्या कह रही है? पराई अमानत को, दूसरे के माल को अपने घर के अन्दर लाने की आवश्यकता नहीं। घर से बाहर ही रखो इसे। वह कहती है- आज तो रात हो रही है,कल इसके मालिक को खोज कर लौटा देना। अपने काम के समय का नुकसान कर मालिक को खोजना। रविवार को काम की छुट्टी चाहने वाली,होटलों में खाना खाने जाने वाली महिलाएँ जरा चिन्तन करें- भोगवाद में फैशन परस्ती में डूबने वाली महिलाएँ जरा सोचें। किस भोग से शान्ति मिलती है? भोग की पूर्ति की अभिलाषा गलत साधनों से सामग्री जुटाने को मजबूर तो नहीं कर रही है? महानता के लिये गरीबी बाधक नहीं, सत्य के लिये, ईमान के लिये पैसों का अभाव बाधक नहीं बन सकता। हम वीतराग के उपासक हैं,हमारा जीवन स्वच्छ होना चाहिये। लाखों का माल और घर की साइकिल भी रात भर घर से बाहर। माल खोने पर मालिक चिन्तित है और माल ही नहीं साइकिल को भी बाहर छोड़कर वो सरदार-सरदारनी निश्चिन्त हैं। सुबह खोजबीन करते हैं, टेलीफोन नम्बर मिल गया, जान में जान आ गई। सरदार ने फोन द्वारा खोज करके लौटा दिया बैग उसके मालिक को। मालिक की तो जान निकल ही रही थी। माल मिलते ही प्रसन्न हो गया। ईनाम देने लगा, ईमान ही जिसका ईनाम हो, वो कब लेगा मुफ्त के ईनाम को- प्रत्येक जीव में भगवान के दर्शनकर अपनत्व को विकसित करके ही जीव अपने भगवान में,एकत्व में जी सकता है।

उपसंहार कर लें, संथारा प्रकीर्णक में भी इन दोनों का दिग्दर्शन कराने वाली गाथाएँ मिलती हैं- प्रतिदिन सोने के पहले आत्मार्थी साधक साधिकाएँ इन्हीं भावों को पुष्ट करते हैं, एगोऽहं णत्थि मे कोई..... और एगो मे सासओ अप्पा..... एकत्व भावना को और उसी के पश्चात् 'खमिअं खमावह' मेरा किसी से वैर नहीं- सभी मेरे अपने हैं। प्रसंगवश अल्प निवेदन ही हो पाया इन आठ अंगों का, पर इतना भी मेरे लिये विशेष-विशेष उपयोगी है- अन्तर में जागृति बढ़ती रहे, प्रीति बाहर में फूटे, रोम-रोम से मैत्री हो।

प्रवचन

सार्थक करें समय को

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 15 जुलाई, 2012 को राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में दिये गये प्रवचन का संकलन श्री अशोक कुमार जैन, जयपुर ने किया है।-**सम्पादक**

भय का भंजन कर भगवत् पद को प्राप्त होने वाले अभयदाता अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात्।

भव्य प्राणियों को भव-मुक्ति और भय-मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले वर्तमान में भक्त के लिये भगवान सदृश अनन्त उपकारी पूज्य आचार्य भगवन्त के चरणों में कोटिशः वन्दन।

संसार की विविधता, विचित्रता और विषमता का बोध प्राप्त करके आत्मा को संयम में अवस्थित करने वाले रत्नादिक मुनि पुंगवों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्।

जिज्ञासु बंधुओं,

बात एक कथानक से शुरु करूँ। एक बार एक राजा ने प्रसन्न होकर एक निर्धन और दरिद्री आदमी को उसकी दरिद्रता दूर करने के लिये बगीचा प्रदान किया। उस बगीचे में चन्दन के बहुत पेड़ थे। राजा ने निर्धन व्यक्ति की दरिद्रता दूर करने के लिये बगीचा दिया था किन्तु दरिद्री आदमी ने सोचा "महाराजा ने दरिद्रता दूर करने के लिये धन देने की बजाय बगीचा दे दिया, इसका मैं क्या करूँगा? प्रायः जितनी आदमी की बुद्धि होती है, वह उतना ही सोच पाता है। निर्धन आदमी सोचने लगा राजा ने जो मुझे बगीचा दिया है उसका मैं करूँगा क्या? खाने में तो काम आयेगा नहीं। उस निर्धन आदमी ने विचार किया कि इस बगीचे में जो चन्दन के पेड़ हैं, उन्हें काटकर कोयला बनाऊँ और उनको बेचकर जो पैसा आयेगा उससे अपना और अपने परिवार का पेट भर लूँगा। वह निर्धन व्यक्ति जिसको राजा ने चन्दन के पेड़ों का बगीचा दिया था, दरिद्रता दूर करने के लिये वह उन पेड़ों को जलाकर कोयले बनाने लगा। लकड़ी के कोयलों को बनाकर उदर पूर्ति हेतु बाजार में बेचने लगा। चंदन की लकड़ी को कोयला बनाकर बेचने से जो रुपये पैसे मिलते उनसे वह उदरपूर्ति करने लगा। कुछ समय बाद राजा ने उधर से निकलते हुए सोचा, मैंने जिस दरिद्री को धनवान बनने के लिए चन्दन का बगीचा दिया था, उसे देखता चलूँ। राजा ने सोचा वह दरिद्री अब पैसे वाला बन गया होगा। पुण्यवान हो गया होगा। जब राजा बगीचे को देखने

गया तो देखा कि सारा बगीचा काला पड़ा हुआ है और एक-दो पेड़ शेष बचे हुए हैं। राजा ने दरिद्री को बुलाया कि सारे के सारे पेड़ कहाँ चले गये। दरिद्री ने कहा- "आपने मुझ पर मेहरबानी की, मैं इस बगीचे के पेड़ों को जलाकर कोयला बनाकर बाजार में बेचता हूँ उससे प्राप्त आय से मेरी उदर पूर्ति हो जाती है।" राजा ने कहा- "अरे! भोले जीव क्या करना था और तूने क्या कर दिया? इसका उपयोग क्या हो सकता है और तूने किसमें उपयोग ले लिया।" राजा ने उस दरिद्री से कहा- "इस बगीचे में कोई पेड़ बचा है क्या?" दरिद्री ने कहा- "एक दो पेड़ बचे हैं। जा! बचे हुए पेड़ का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर आ।" दरिद्री ने कहा- "अभी काट कर लाता हूँ।" वह व्यक्ति बगीचे में जो एक-दो पेड़ बचे थे उसमें से एक छोटा सा टुकड़ा काट कर लाता है। राजा ने उस दरिद्री से कहा- इस टुकड़े को बाजार में बेच कर आओ। वह दरिद्री उस छोटे से टुकड़े को बाजार में दुकानदार के पास बेचने के लिये जाता है। लकड़ी का टुकड़ा व्यापारी को बताया तो व्यापारी ने दरिद्री को उस छोटे से लकड़ी के टुकड़े के लिए 100 मोहरें उसके सामने रख दी। छोटे से लकड़ी के टुकड़े की कीमत इतनी थी, तो मैंने तो बहुत बड़ा नुकसान कर दिया। इनते सारे पेड़ व्यर्थ ही जला डाले।

कथानक के माध्यम से यह बताना चाहता हूँ कि हमारे एक-एक श्वास चन्दन के पेड़ हैं। श्वास रूपी चन्दन के पेड़ों को हम भोग रूपी कोयले बनाकर बेच रहे हैं। श्वास रूपी पेड़ कोयला बनाकर भोगों में आसक्त बनने के लिये नहीं मिला। जैसे चन्दन मूल्यवान है वैसे ही हमारी एक-एक श्वास मूल्यवान है। लाख-लाख मोहरों की कीमतवाला है। हमने मनुष्य भव की कीमत नहीं आंकी है, भगवान ने मनुष्य जन्म को प्राप्त करना दुर्लभ बताया है- "दुल्लहे खलु माणुसे भवे"। यह मनुष्य जीवन भोगों में व्यर्थ करने के लिए नहीं मिला है। इसका सही उपयोग करना है। जिस प्रकार रेगिस्तान में जल दुर्लभ है, पतझड़ में फल दुर्लभ है। आज की बात नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि आज तो बारह मास ही फल मिल जायेंगे। पुराने जमाने के अन्दर फेमिली गुरु हुआ करता था, परन्तु आज जमाना आ गया, फेमिली डॉक्टर का। डॉक्टर शरीर के रोग दूर कर सकता है, परन्तु गुरु हमारे दोष को दूर करते हैं, दोषों से मुक्त करते हैं। डॉक्टर दिल चेंज कर सकता है, बदल सकता है, परन्तु मनुष्य के चित्त को नहीं बदल सकता। चित्त में रहे हुए दोष और दुर्गुणों को समाप्त नहीं कर सकता। गुरु हमारे चित्त के दोषों को समाप्त कर देता है। दोषों में, दुर्गुणों में रत रहकर यह जीव बीमारियों को न्यौता देता चला जाता है। बीमारी में शरीर का बल घट जाता है। कहते हैं एक बार का बुखार छह महीने की ताकत ले जाता है। तीन दिन के लिये आता है तो आदमी बुखार में ढीला हो जाता है। इसी प्रकार संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है। दुर्लभ को प्राप्त कर

उसका प्रयोग करना अलग है। प्राप्त तो कइयों ने किया, किन्तु प्राप्त का उपयोग तो ज्ञानी ही कर पाये। कीमती समय का उपयोग होना चाहिये। हम समय की कीमत नहीं समझ पा रहे हैं। समय के कई अर्थ होते हैं- समय का मतलब है, काल। समय यानी आत्मा, सिद्धान्त आदि। समय रहते आत्मा की संभाल कर लेना है। हमारा टाइम मूल्यवान है। टाइम इज मनी (Time is Money) जो समय हमारा भगवान के भजन में लगना था वह भोगों को भोगने में व्यर्थ हो रहा है।

एक भक्त रोज अर्चा करता था। एक दिन एक देव आ गया। पूछने लगा- बोल! क्या चाहिये? प्रभु आपके पास क्या है? मेरे पास तो बहुत है, तुझे क्या चाहिये? मेरे दो प्रश्न हैं, आपका एक पैसा और एक मिनट, मेरे लिये कितना? भक्त! मेरा एक पैसा तेरे लिये एक करोड़ और एक मिनट सौ साल जितना है। भक्त ने कहा- "प्रभु! फिर तो आप मात्र एक पैसा ही दे दो आपके लिये वह कुछ भी नहीं है।" देव ने कहा- "बस एक मिनट। वह एक मिनिट का समय था 100 वर्ष का।

हम संसार में जगह-जगह कहते हैं-'एक मिनिट आया'। बाप बेटे से कहे- अरे! इधर आना, तो जवाब आता है-'एक मिनिट आया' अध्यापक विद्यार्थी से, जो दूसरे से बात कर रहा है या कोई अनावश्यक कार्य कर रहा है, कहता है- पढ़ाई में ध्यान दो तो विद्यार्थी कहता है-'सर! एक मिनिट' यह एक मिनिट कितना कीमती है ध्यान दें। आपसे महाराज कहे पौषध, दया कर लो, प्रत्याख्यान कर लो। आप कहते हैं- महाराज थोड़े दिन रुको। यह रुको करते-करते ऐसे ही समय चला जाएगा। जिसने समय को संभाल लिया उसने सबको संभाल लिया। महापुरुष कहते हैं संसार के जितने भी भोग हैं, वे वर्तमान के अन्दर सुखदायी नज़र आ सकते हैं, लेकिन बहुत काल के लिये दुःख का कारण बन सकते हैं। भोगों की समाप्ति पर ही व्यक्ति योग की ओर बढ़ सकता है। मनुष्य जन्म बड़ा ही दुर्लभ है। समय की कीमत नहीं करेंगे, तो किस्मत नहीं बचेगी। जीवन में पुरुषार्थ सबसे बड़ा है। लेकिन हम किस पर भरोसा करते हैं? सभा में से आवाज़ आई- लक पर भरोसा करते हैं। ढाई अक्षर का भाग्य तीन अक्षर का नसीब साढ़े तीन अक्षर की किस्मत और चार अक्षर की तकदीर इन सबसे बड़ा है साढ़े चार अक्षर का पुरुषार्थ। पुरुषार्थ कर लिया तो ये सब चीजें अपने आप प्राप्त हो जाएगी। लक को सुधारने के लिये पुरुषार्थ करना होगा। मनुष्य जन्म पाकर पुरुषार्थ करता जा। पुरुषार्थ अध्यात्म की ओर होना चाहिये। कर्म को स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाना मुक्ति है। संसार की ओर पुरुषार्थ पतन का कारण बनता है। आप किसी व्यक्ति के आफिस में पहुँचे, उससे रूपये लेने बाकी है। आफिस में बातचीत करते-करते एक घंटा पूरा हो गया। जिस व्यक्ति से रुपये लेने थे उस व्यक्ति ने रुपये लौटा दिये।

बैग में रुपये आ गये जेब में नोट आते ही चमक आ जाती है। वह व्यक्ति रुपयों से भरा बैग लेकर बाहर निकला तो पाया कि चप्पल गायब है। आप क्या सोचेंगे, चप्पल गई सो गई, लेकिन रुपये तो आ गये।

आप व्याख्यान श्रवण करने के लिये बैठे हैं। व्याख्यान सुनने के बाद स्थानक से बाहर आते हैं और आपकी नई-नई चप्पल नज़र नहीं आए तो उत्साह बढ़ेगा या घटेगा? मन में विचार आयेगा महाराज के आये और चप्पल चली गई। यह नहीं सोचा कि कीमती वाक्यों को श्रवण किया। संसार के अन्दर ज्यादा विश्वास रखते हैं। आत्मा पर भरोसा नहीं कर रहे हैं। आत्मा पर भरोसा हो गया तो भगवान जग जाएगा। आज सबसे बड़ा त्यौहार मान रहे हैं रविवार को। हर कार्य रविवार को करना चाहते हैं। यहाँ तक कि कोई मरे भी तो रविवार को मरे, जिससे दुकान आदि की छुटटी नहीं करनी पड़े। आनन्द गाथापति भगवान के समक्ष प्रभु के सान्निध्य में उपस्थित हुआ। प्रभु आपका मार्ग निसंग है। आपके वचनों पर पूर्ण श्रद्धा है। आपके निर्ग्रंथ प्रवचनों को सुनकर मेरी पूर्ण श्रद्धा हो गई है, विश्वास हो गया है। मैं महाव्रत तो नहीं ले सकता, परन्तु अणुव्रत के लिये तैयार होता हूँ। संत नहीं बन सकते तो संतोषी तो बन जाएं। क्योंकि जो संतोषी होता है घर में रहते हुए वह संत होता है। संतोष आ जाता है तो मन में आनन्द जग जाता है। मनुष्य भव को सार्थक कर लें। श्वास-श्वास का उपयोग करे। आनन्द श्रावक भगवान् से निवेदन कर रहा है- एक-एक अणुव्रत का सार समझना चाहता हूँ। एक बार प्रभु को देखने के साथ आनन्द के मन में श्रद्धा हो गई। उसने जान लिया इसके अलावा और कोई मार्ग नहीं है। आनन्द उस मार्ग पर चलने को तैयार हो गया। आपको न मालूम कितने संतों ने, गुरु भगवन्तों ने कहा होगा कि तैयार हो जाओ। आप में से कितनों ने व्रत स्वीकार किये हैं। जिसने व्रत स्वीकार किये हैं, वह सोचे कि मैं व्रत-पालन निर्दोष रीति से कर रहा हूँ या नहीं, इसकी समीक्षा की या नहीं। या मैंने व्रतों को पन्नों पर ही लिखा है। हमारे व्रत अतिचार रहित हों। मनुष्य जन्म पाना दुर्लभ है। फिर बताया आप्त के वचन श्रवण करना दुर्लभ है। आप्त किसे कहते हैं? जिसने संपूर्ण को प्राप्त कर लिया, वो आप्त है। आप्त के पास पर्याप्त होता है।

तेरे बिना गुरुवर, हमारा नहीं कोई रे तेरे बिना गुरुवर सहारा नहीं कोई रे।
गहरी नदिया नाव पुरानी, बड़े-बड़े भंवरे गहरा पानी।
डूबन लागी नांव बचाया नहीं कोई रे।
तेरे बिना गुरुवर, हमारा नहीं कोई रे।

व्यक्ति को अपने पुरुषार्थ को निरन्तर जगाते रहना चाहिये। पुरुषार्थ जग गया तो धरती का देव बन जाएगा। पुरुषार्थ के साथ पुण्य होना चाहिये। अकेला पुण्य लाभ देने

वाला नहीं है। पुरुषार्थ की ओर नज़र रहनी चाहिये। ज्योतिषी कहते हैं कि जातक की कुण्डली के केन्द्र में गुरु हो तो एक लाख दोष टल जाते हैं। उसी प्रकार हमारे केन्द्र पर यानी हृदय में गुरु है तो संसार के सभी दोष समाप्त होने की संभावना रहती है। ऐसे ही गुरु पद को सुशोभित करने वाले धरती के धर्म देव पधार गए हैं हम अहंकारी नहीं, संस्कारी बनें। संस्कारी बन गये तो धरती के देव बन जायेंगे। समय का जीवन में प्रयोग करते जाओ। कपड़े में चावल के दाने बंधे हुए हैं, उस कपड़े में से एक-एक दाना बिखरता चला जाए क्या उन चावल के दानों को वापस इक्टठे कर सकते हो? सभा में से आवाज आई-"नहीं! क्योंकि वे व्यर्थ हो गये, मिट्टी में मिल गये।" एक-एक श्वास व्यर्थ नहीं होनी चाहिये इसका सार निकालना है। महापुरुषों के आप्त वचनों को हृदय में स्थान देंगे तो हमारी मुक्ति का शाश्वत मार्ग मिल सकता है। समय को सार्थक करते हुए आगे बढ़ें, इसी शुभ भावना के साथ।

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

गुणों की खान हो तुम

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

(तर्ज- मेरे सर पर रख दो .....।)

मुनि मान के दर्शन करके, जीवन में आयी सुवास।
जनम-जनम से भटक रहा गुरु, देना आशीर्वाद।
पूरे संघ की शान हो तुम, गुणों की खान हो तुम.....।। टेर।।
मान गुरुवर जैसा ज्ञानी, रत्नसंघ ने पाया है।
धीर-वीर-गंभीर-गुणाकर, उवज्झाय पद भाया है।
पच्चीस गुण से यह सर्जित, जीवन का करें निर्माण।। जनम-जनम..।।1।।
सिंह सम गर्जन करती वाणी, मांगलिक महिमा न्यारी है,
मुख मंडल की छवि निराली, प्रवचन अतिशय धारी है।
श्रोतागण सुन-सुनकर, झुक-झुककर करे प्रणाम।।जनम-जनम..।।2।।
पाट बिराजे गुरुवर ध्यानी, प्रज्ञावान मुनीश्वर हैं,
तीर्थंकर सी करे देशना, इस आरे के श्रुतधर हैं
आगम-वारिधि नायक, मुनिवर ये मान महान्।।जनम-जनम..।।3।।
आत्म-साधना करूँ मैं गुरुवर, प्रगतिपथ पर बढ़ता रहूँ।
'गजेन्द्र' के सिर हाथ रखो प्रभु, गुरुवचनों का मान करूँ।
यात्रा में सहायक रहना, बनकर दिग्दर्शक प्राण।।जनम-जनम..।।4।।

-जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़-304023, जिला-टोंक (राज.)

प्रवचन

आचार्य हीरा : आत्मा और आत्मीयता के अनुपम साधक

श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. द्वारा 19 नवम्बर, 2012 को राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में आचार्य हीरा दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में अभिव्यक्त विचारों को श्री सौभाग्यमल जी जैन 'व्याख्याता' द्वारा संकलित किया गया है।-सम्पादक

अध्यात्म जगत के महानायक, श्रमण संस्कृति के समुन्नायक चरम तीर्थेश, प्रभु महावीर स्वामी को भाव पूर्वक वंदन।

आराधना के आयोजन से, मोक्ष पाने के प्रयोजन से, सद्गुणों का संयोजन करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी पूज्य आचार्य भगवंत एवं चाह के पद से मुक्त होकर, चारित्र के पथ पर चरण बढ़ाने वाले चारित्रात्माओं के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन!!

धर्मानुरागी सज्जनों!

जीवन जीने के मौलिक दो आधार हैं। दो प्रकार के आधार के धरातल पर हम अपना जीवन जी सकते हैं। सर्व प्रथम आत्मा के आधार पर दूसरा आत्मीयता के आधार पर।

निश्चय में आत्मा के आधार पर जीया गया जीवन हमें निश्छल बनाता है, निर्दोष बनाता है, निर्विकारी और निर्लिप्त बनाता है अर्थात् बाहर से निर्लिप्त, किंतु अन्तर में निज में लिप्त करता है।

व्यवहार में आत्मीयता के आधार पर जीया गया जीवन, सृष्टि को सुरम्य बनाता है, सुख की अनुभूति कराता है और प्राणि-मात्र के प्रति प्रीति-भाव जागृत करता है। हम दोनों पक्षों को विशुद्ध रखकर, जीवन का निर्वाह करते हुए जीवन-निर्माण के साथ जीवन-निर्वाण की ओर आगे चल सकते हैं।

हम भाग्यशाली हैं कि निर्वाण का निर्णय जिनके जीवन का लक्ष्य बन चुका है ऐसे परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवंत का जीवन आत्मीयता और आत्मा के आधार पर आधारित है।

1. आत्मा की अनुपम साधना

आचार्य भगवन्त अन्तर में आत्मा के आधार पर जीते हैं और व्यवहार में आत्मीयता

के आधार पर, इसलिए आचार्य भगवंत की आत्मा एवं आत्मीयता दोनों ही महान हैं।

बन्धुओं! महानता का मापदण्ड पद नहीं हुआ करता है, अपितु महानता का मापदंड पथ होता है। भौतिक क्षेत्र में महानता का मापदण्ड प्रतिष्ठा हो सकती है, परन्तु अध्यात्म-क्षेत्र में महानता का मापदण्ड अन्तर में रही निष्ठा होती है। भौतिक-क्षेत्र में महानता का मापदण्ड स्वार्थ-सिद्ध करना हो सकता है, परन्तु अध्यात्म क्षेत्र में महानता का मापदण्ड सर्वार्थ साधना है। भौतिक क्षेत्र में महानता का मापदण्ड पैसा हो सकता है, परन्तु अध्यात्म-क्षेत्र में महानता का मापदण्ड परमेश्वर का भाव है, परोपकार का प्रभाव है। भौतिक क्षेत्र में महानता का मापदण्ड मान-सम्मान हो सकता है, परन्तु अध्यात्म क्षेत्र में महानता का मापदण्ड मान को नमाने में है।

आचार्य भगवन्त आत्मा की अनुपम साधना करते हैं, इसलिए वे मोह के पद का नहीं, मोक्ष के पथ का ध्यान रखते हैं। वे प्रतिष्ठा में नहीं अपितु स्वयं में प्रतिष्ठित होने का प्रयास करते हैं। वे स्वार्थ सिद्ध करने में नहीं, अपितु सर्वार्थसिद्ध के आगे प्रयाण करने का प्रयोग कर रहे हैं। क्योंकि आचार्य भगवन्त स्वयं फरमाते हैं-"स्वार्थ सिद्ध करने वाला, सर्वार्थसिद्ध को प्राप्त नहीं कर सकता।"

आचार्य भगवंत की आत्मा में राग का रोग नहीं, द्वेष का दावानल नहीं, क्लेश की कालिमा नहीं, गर्व का घर नहीं, पराई चर्चा का चिंतन नहीं, पाप का प्रवेश नहीं, मृषा का उपदेश नहीं, प्रशंसा की प्रस्तुति नहीं, प्रलोभन का लोभ नहीं, नाम का काम नहीं, विलास का विकास नहीं, दुर्गुणों की दुर्गंध नहीं है। अपितु आचार्य भगवन्त की आत्मा में अरिहन्त का ज्ञान है, सिद्ध का ध्यान है, आचार्य का आचरण है, उपाध्याय सी उपासना है, साधु सी साधना है, सम्यग्दृष्टि की सम्यक् समझ का सुंदर समन्वय है। चिंतन का चाँद है, अन्तर का अनहदनाद है, प्रभु का प्रसाद है, तो मुक्ति का स्वाद है। आपश्री की आत्मा में गुणों का गगन है, चिन्मयता का चमन है, अन्तर में नयन है, लक्ष्य की लगन है, मोक्ष का मनन है, उल्लसित अन्तर्मन है। भलाई का भाव है, अंतर का प्रभाव है, सद्गुणों का स्वभाव है, तो आपश्री के अनन्त गुण-धर्मा आत्मा में विवेक का विकास है, सम्यक्त्व का प्रकाश है तो अनुभूति का अहसास भी है।

आपश्री की आत्मा राग से रंजित नहीं, अनुराग से अनुरंजित है। आप व्यथा से नहीं, व्यर्थता से व्यथित होते हैं। आप दुःखों को नहीं, दोषों को समाप्त करने के लिए आप्त वचनों को प्राप्तकर उनका पर्याप्त प्रयोग अपने जीवन में कर रहे हैं। आपश्री की आत्म-स्ववेदना से नहीं जीव मात्र की संवेदना से संबंधित है। इसलिए गुरुदेव! आपश्री की आत्मा महान् है।

आपकी आत्मा से अनुभूत सत्य का श्रीमुख से उच्चारण हुआ जो हमारे उच्च

आचरण का प्रतीक बन रहा है। गुरुदेव आपने फरमाया- उपालम्भ की ओर नहीं, उपलब्धि की ओर चलो.....।

गुरुदेव! यह सूत्र आपके जीवन का महामंत्र है। इस मंत्र का उद्गम-स्थल आप श्री का ही जीवन है। आपने इस सूत्र को जीया, इस सूत्र को पीया एवं हम अबोध बालकों के लिए, इस सूत्र को गुणरूपी माला में पिरोया है।

आपने बड़ों से कभी उपालंभ नहीं पाया और छोटों के लिए कभी उपालंभ का आलम्बन नहीं लिया। अपितु बड़े प्रेम से, दुलार से, अबोध बालकों की हर दुविधा को दूर कर दिया। इसलिए गुरुदेव आपश्री का जीवन नित्य-नूतन, चिर-चिरंतन उपलब्धियों की ओर ही अग्रसर होता रहा। आज आप उस उपलब्धि को उपलब्ध कर चुके हो जो क्षणिक नहीं, क्षायिक है, क्षण-भंगुर नहीं, शाश्वत-पथ का निकेतन है।

गुरुदेव आपने फरमाया- आवाज ऊँची मत करो, आचरण ऊँचा और अच्छा करो.....।

गुरुदेव! यह सूत्र आपके जीवन का अनुपम शास्त्र है। जो हम सबके लिए अध्ययन, अनुप्रेक्षा का आश्रय बन रहा है। हम इस शास्त्र का पारायण कर संसार-सागर से पार हो रहे हैं। इस शास्त्र में शब्द कम, सत्य का प्रभाव अधिक है, क्योंकि आपने इसे भाव से जीया है।

गुरुदेव! आपश्री की आत्मा में सम्यक्त्व की सन्निधि का सतत साम्राज्य रहता है, इसलिए- "सही का सहारा, गलत एवं गलती से किनारा।" यह आपके जीवन से प्रस्फुटित हुई सूक्ति है। जो भव्य-भक्तों के लिए उद्धार करने वाली उक्ति बन गई है।

गुरुदेव आपने फरमाया- "मन को खराब करने की आवश्यकता नहीं, अपितु मन को खरा बनाने की जरूरत है। यदि मन को खरा बना लिया तो आप मन के मालिक बनोगे, मन आपका साधना में साधन बनेगा।"

भगवन्! आपकी यह शिक्षा हमारे जीवन की संस्कार-दीक्षा बन रही है। क्योंकि आपश्री ने अपने मन को इस सूत्र से ही शिक्षित एवं सुरक्षित किया है। आपका जीवन आज सब जीवों के लिए संरक्षक बन रहा है। हम आपके अनुचर हैं, आपका अनुसरण करने वाले है। आपश्री ने विपरीत परिस्थितियों में, संघर्षों की शृंखला में भी अपने मन को खराब नहीं किया, अपितु मन को मौलिकता की मूल्यवान कसौटी पर कसा, और खरा बनाया। इसीलिए आज आपका अंतर्मन अच्छा है, स्वस्थ है, सुन्दर है, सुखरूप है, आनन्द-भावन है, कार्य की कुशलता में कुशल है, करुणा की कमनीयता में कल्पनातीत है।

गुरुदेव ने फरमाया- "शौर करने की जरूरत नहीं, शौर्य जगाने की जरूरत है।"

गुरुदेव! यह सुवाक्य आपके अंतरंग जीवन से प्रसूत है, जो हमारी ऊर्जा को उपयोगी बनाता है, ऊर्ध्वीकरण की ओर ले जाता है, क्योंकि आज संघ, समाज, संस्था, संसार में शोर का जबर्दस्त जोर है। जिसके कारण से मानव की महत्ता, महानता, महनीयता, धुँधली सी प्रतीत होती जा रही है। मानव महान् बनता है शौर्य के जागरण के द्वारा। जिन-जिन साधकों ने संयम में, तप में, आत्म-आराधना में शौर्य जगाया वे कर्म जीतने में शूर बने, वीर बने, महावीर बने। हम भी दीक्षा अर्द्धशती वर्ष का सिर्फ शोर करके ही न रहें, अपितु अपने अंतर में शौर्य जगाकर कर्म शूर बनने का प्रयास और पुरुषार्थ करें, क्योंकि अज्ञानी इस संसार में आकर उधम करता है। जबकि ज्ञानी इस संसार में रहते हुए उद्यम करता हुआ अधम से उत्तम बन जाता है। आज का यह पावन दिवस हमारे भीतर प्रसन्नता का प्रकाश दान कर रहा है। हम इस प्रकाश में निश्चित रूप से आत्म-विकास कर सकते हैं।

गुरुदेव! आपश्री की आत्मा की साधना के साथ आत्मीयता की आराधना भी श्रेष्ठ है। जो सृष्टि को सरसब्ज कर रही है, संघ को समुन्नत एवं समुज्ज्वल बना रही है।

2. आत्मीयता की अनुपम आराधना

आपकी आत्मीयता की आराधना भी अनुपम है। आपश्री की आत्मा से आत्मीयता का अनुपम अमृत का झरना निरन्तर प्रवाहित होता है, जिसमें भव्य प्राणी अवगाहन करके अधोगति से मुक्त हो जाता है। क्योंकि, बंधुओं! आज विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है। अणु-आयुधों की विभीषिकाएँ उमड़-घुमड़ कर मँडरा रही हैं। सभी के हृदय धड़क रहे हैं। न अमीरों को चैन है, न गरीबों को शान्ति। न शासक को सुख है, न शासित को आराम। न मालिक को संतोष है, न मजदूर को विश्राम। सभी परेशान हैं, हैरान हैं। आज ऐसे दुःखित संसार में सभी जीव त्रस्त हैं, संत्रस्त हैं। इसका मूल कारण है- आत्मीयता का अभाव। यदि आज जन-जन के मन में आत्मीयता की मंदाकिनी प्रवाहित हो जाय तो विश्व में शान्ति की हरियाली लहलहा उठे, सुख के सुन्दर सुगंधित सुमन खिल उठें, विश्व में विश्वव्यापी भावना का विस्तार हो उठे।

गुरुदेव! आपके अणु-अणु से अनुकंपा एवं आत्मीयता का स्रोत प्रवाहित होता है। जिसमें सुस्त व्यक्ति चुस्त बन जाता है। रोगी भी नीरोगता का अनुभव करता है। गुरुदेव! मेरे वीरान बनते जीवन उद्यान को वसंतमयी बनाने का श्रेय आपश्री की आत्मीयता को ही जाता है।

आत्मीयता का बोध एवं आत्मा के शोध का बोधपाठ गुरुदेव! आपके जीवन से ही मिलता है।

"एक-एक व्यक्ति को जोड़ने की कला जो आपकी आत्मीयता में रही हुई है, वो

अन्यत्र देखने को कम मिलती है, और उसमें भी विशेष बात यह है कि जोड़ते हुए भी स्वयं न जुड़ने की जो दक्षता आपश्री की आत्मा में है वह बोधगम्य है।''

गुरुदेव! आपकी आत्मीयता की आराधना में, आराधना का आकर्षण है, आराधक भाव का आह्लाद है, अनुकंपा का अनुसरण है, अनुशासन का आलंबन है, आशीर्वाद का आश्रय है, अनासक्ति की अनुगूँज है, आचार की आधार-शिला है, आत्मा की अनुभूति है, आगम का आख्यान है, आगे बढ़ने का आह्वान है।

बन्धुओं! जो अपनी आत्मा को तोल लेता है, वही आत्मीयता से बोल पाता है। आगम के अनमोल वचन गुरुदेव! आपकी आत्मा एवं आपकी आत्मीयता में प्रतिबिंबित होते हैं। जैन वाङ्मय का आद्य आगम आचारांग सूत्र एवं अन्य आगमों के वे स्वर-

'जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ.....

'आयतुले पयासु.....

'सव्वभूयप्पभूयस्स.....

आदि-आदि सूत्र आपकी आत्मीयता में अंतर से प्रकाशित होते हैं। गुरुदेव! आपके ये मौलिक गुण चतुर्विध संघ को मूल्यवान ऊर्जावान बना रहे हैं- गुरुदेव! आपके इन मौलिक गुणों से चतुर्विध संघ मालामाल हो रहा है। इसी की फलश्रुति है कि- गुरुदेव! आप-

'मान' की अभिराम शान हो।
'महेन्द्र' के महतो-महीयान् हो।।

'गौतम' के गीत-गौरव हो।
'नंदीषेण' के सेवा-सौरभ हो।।

'प्रमोद' के ध्यान-वेत्ता हो।
'योगेश' के प्रेरणा-प्रणेता हो।।

'मनीष' के अंतर के ईश हो।
'यशवंत' के साधना गिरीश हो।।

'देवेन्द्र' के देवाधिदेव हो।
'लोकचन्द्र' के आत्म-गुरुदेव हो।।

'मोहन' के मीत मनोहर हो।
'दर्शन' की दर्श धरोहर हो।।

'जितेन्द्र' के वीर जिनेन्द्र हो।

'सुभाष' के सुभाषित केन्द्र हो।।

'आशीष' के अंतर-ताज हो।
'मैना' के मयूर राज हो।।

'तेज' के दिव्य-प्रकाश हो।
'रतन' के आत्म-विकास हो।।

'सुशीला' के शील पुञ्ज हो।
'सौभाग्य' के खिले-खिले कुञ्ज हो।।

'मनोहर' के मुग्ध उपासक हो।
'सोहन' के सिंह समभाषक हो।।

'सरला' की सिद्धि के बिन्दु हो।
'इन्दु' के शांति-सिंधु हो।।

'ज्ञान' के गहरे मझधार हो।
'चारित्र' के चमकते अणगार हो।।

'निःशल्य' के शरण लोगुत्तम हो।
'मुक्ति' के मंगलमुक्किट्ठं हो।।

'विमलेश' के विमलतम चित्र हो।
'रुचिता' के यथाख्यात-चारित्र हो।।

'श्रावक-श्राविकाओं के, अरिहंत-सम गुणवान हो।
सभी श्रद्धालु भक्त-जनों के, महावीर सम भगवान हो।।

गुरुदेव! आपकी आत्मा की साधना, आपको सतत साध्य के सन्निकट पहुँचा रही है। आपकी आत्मीयता की अनुपम आराधना, अखण्ड-अविराम गति से गंतव्य की ओर प्रयाण कर रही है। दीक्षा अर्द्ध-शती वर्ष के शुभ प्रसंग पर, गुरुदेव! आपके श्री चरणों में यही नीति है....यही विनति है.....

संयम की शुभ अर्द्धशती पर, गुरुवर को शत-शत वंदन।
स्वीकारो, गुरु चरणाम्बुज में, विनय-भक्ति सह चर्चित वंदन।।
दीर्घ-काल देते रहिये, पावन आत्म-भावों का स्पंदन।
संयम-श्रेष्ठ सुमेरू सम गुरुवर को, सदासमर्पित है आत्म-भावों का वंदन।।
सदा करते हैं आत्म-भावों से अभिनंदन।।

दीक्षा-अर्द्धशती

THE NAME OF ENDLESS QUALITIES, ACHARAYA SHREE HEERA CHANDRA JI MAHARAJ

Smt. Purvi Lodha

A- An austere soul, leading and guiding us to lead a Non-violent and generous life.

C- Compassionate towards all beings on this earth, trying not to hurt even minutest of life by thoughts, speech or deeds.

H- Humble, despite being at the highest level of religious hierarchy.

A- A mighty soul, showing people the path to moksha.

R- Retaining and strictly following the teachings of Lord Mahaveer, in an era where most saints are not able to adhere to stringent religious practices.

Y- Yielding pious saints out of worldly people, by telling them about the influx of karmas in worldly life.

A- Amazing, miraculous and simply 'simple', such is our great guru, Acharya Shree Heera Chandra jiMaharaj Saab.

S- Saviour of the misled, supporter of the wise, relief of the grieving, balancer of the overwhelmed.

H- Honing his skills, imparting his knowledge to guide shravak and shravikas to set limits in this life of endless materialistic desires.

R- Radiating like a diamond with his humbleness, knowledge and character.

E- Encouraging people to do tyag, vrat and daan to cleanse the soul from bad karmas.

E- Empowering and practicing the belief, 'Religion is in being compassionate'.

H- Harmonious towards followers and provides flexibility to them in taking niyams according to their capabilities.

E- 'Extremely knowledgeable' in a world where people rarely have extreme religious knowledge.

E- Equal to all beings, impartial to the entire chaturvidhsangh.

R- Regarded by all saints, shravaks and shravikas as their embodiment of god.

A- Anxiety free soul, without any aggression or anger.

C- Conqueror of not just worldly desires, but also of all senses.

H- Holy life, high morals and simple life leader.

A- Aiming at a world free of kuvyasan.

N- Nurturing Shravaks and Shravikas who wish to take diksha.

D- Determined in his rigorous religious practices, and always striving to do more

R- Reasonable in his preaching, having a solid reasoning behind all his beliefs.

A- Agreeable and approachable to shravaks, shravikas and laymen.

J- Judicious in allocating responsibilities to saints in accordance to their potential and capabilities.

I- Inspirational to saints, Jain community and even followers of other religion.

M- Motivating at heart, forgiving in his nature, and letting every being who comes to him go content.

A- Advising beginners on how they can practice religion in worldly life even if they are not able to relinquish all worldly things.

H- Healing worldly sorrows, grief, and confusions by explaining that these affect only body and not the soul.

A- Activist of Non-violence, Non-possessiveness, Non-stealing, purity and truthfulness.

R- Right minded and self-less in his preaching with a sole motive of liberating all souls.

A- An admirable soul, who like his name shines with all the above virtues, whose mere presence makes one feel calm.

J- Jolly in his attitude yet serious in his actions. An ideal student of an ideal guru, teaching his students in a disciplined way. Blessed are we to be around such a divine soul!

-A-8, Mahaveer Nagar, Tonk Road, Jaipur (Raj.)

जिनवाणी का उप कार्यालय जोधपुर में

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित 'जिनवाणी' पत्रिका का उप कार्यालय जोधपुर में प्रारम्भ हुआ है, कृपया सम्पादकीय पत्र-व्यवहार निम्नांकित पते पर करें-

जिनवाणी

सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क

जोधपुर-342003 (राज.), फोन नं. 0291-2626279

जीवन-व्यवहार

खुश रहना सीखें

श्री महेन्द्र पारख (आर.ए.एस.)

संसार में किसी भी व्यक्ति को बुझा हुआ मायूस चेहरा अच्छा नहीं लगता। हर व्यक्ति को खुश रहना तथा खुशमिज़ाज लोगों के बीच रहना पसंद है। जिंदादिल खुशमिज़ाज इंसान कहीं भी लोगों का मन जीतने में सफल होता है। आइये! हम चिंतन करें कि किस प्रकार प्रतिदिन मन के भीतर आनंद और प्रसन्नता की स्थिति बनाये रख सकते हैं।

किसी भी बालक को देखें, उसके जीवन का हर क्षण प्रसन्नता और आनंद से सराबोर है। उसे खिन्न करने के लिए किसी दूसरे को कुछ करना पड़ता है। फिर भी कितने मिनटों के लिए। किसी के द्वारा चांटा मारने या डांटने के बाद या फिर किसी से झगड़ने के बाद भी अगले ही पल फिर से वही आनंद की स्थिति। 24 घण्टे में चंद मिनट ही अप्रसन्नता के। जैसे-जैसे बड़े हुए इस स्थिति में बदलाव आने लगा। अब पूरे दिन में खुशी या प्रसन्नता के चंद मिनट ही। सबके साथ ऐसा नहीं है। कुछ लोग बड़े होने के बाद भी अपनी खुशमिज़ाजी को जीवंत रखते हैं। ऐसे लोग न केवल स्वस्थ रहते हैं बल्कि उनके चेहरे की आभा भी देखते ही बनती है। फिर ऐसे लोग अपने व्यावहारिक जीवन में भी अधिक कामयाब होते हैं। खुशमिज़ाज लोगों में कुछ खास बातें होती हैं। आइए इन पर गौर करें-

1. **नम्र बनें-** व्यवहार में और भाषा में नम्रता किसी भी व्यक्ति को सम्मान ही दिलाती है। ऐसे व्यक्ति से कोई भी व्यक्ति अपनी बात खुलकर कहेगा। मुश्किल परिस्थितियों में नम्र व्यक्ति अपना काम कम समय में बखूबी पूरा करेगा।
2. **व्यवहार कुशल बनें-** दूसरे लोग सदा ही आपके कार्यों से संदेश लेते हैं और देखते हैं कि आप जैसा बोलते हैं वैसा ही आप काम भी करते हैं।
3. **मुस्कुराएँ-** मदर टेरेसा के शब्दों में 'मुस्कुराहट के साथ ही शांति की शुरुआत होती है।' तुम मुस्कुराओ, मुस्कान लौट के आयेगी। ऐसा व्यक्ति कभी तनावग्रस्त हो ही नहीं सकता। एक ताजा मुस्कान क्रोधी को शांत, निरुत्साहित को अभिप्रेरित और चिंतित को उल्लसित बना सकती है। लटके हुए चेहरों की तुलना मुरझाये हुए फूल और मुस्कुराते चेहरे की तुलना खिले हुए फूल से की जा सकती है। आप किसे पसंद करेंगें, अपने आप चुनें।
4. **गुस्सा-** ना बाबा ना- तौबा करें- अगर आ जाये तो कुछ देर मौन का सहारा लें। हर ऐसी घटना को स्मरण रखें और यत्न करें कि भविष्य में न दोहरायें। आज तक गुस्से से

किसी को लाभ नहीं हुआ। गुस्सा करने वाला व्यक्ति अपना स्वयं का नुकसान करता है।

5. **हर परिस्थिति में शान्त रहें**–विवाद/विषाद की स्थिति को शांत और स्थिरचित्त रहकर निपटे। ऐसी स्थितियों का आप अधिक कुशलता पूर्वक एवं कम समय में समाधान कर पायेंगे।
6. **दोस्ताना व्यवहार**– किसी से मिलें तो मित्रवत्। इसमें मिलने वाले का पद, स्तर, जाति, धर्म, कद, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का कोई महत्त्व नहीं होना चाहिये। बेरुखी और निष्क्रियता से पेश आने वाले लोग कम ही याद रहेंगे।
7. **अच्छाई देखें**– दूसरों में अच्छाइयाँ देखें। उनमें कोई कमी है तो उस ओर ध्यान न दें, न ही उसका उल्लेख करें। करें तो सिर्फ किसी की तारीफ। आपको भी तो यही अच्छा लगता है ना। जब मौका मिले, किसी की तारीफ करें। किसी की निंदा न करें, न सुनें।
8. **मनोविनोदी बनें**– विनोदी स्वभाव लोगों में आनंद की लहर बिखेरता है। गंभीर तर्क, कुतर्क एवं उलझन भरे वार्तालाप के बीच हास्य या विनोद की हल्की फुहार माहौल को एकाएक बदल कर शांत बना सकती है।
9. **अच्छा श्रोता बनें**– दूसरे व्यक्ति के स्थान पर अपने को रखकर उसकी व्यथा समझें। आप तब सहायक सलाह देकर मिलनेवाले की मदद कर सकेंगे।
10. **शालीन प्रतिक्रिया करें**– जब कोई गलती करे तो शालीनता से प्रतिक्रिया करें। तत्काल ही उछल कर बुरी तरह से न बिगड़ें। गलती होना स्वाभाविक है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि आपने कभी कोई गलती नहीं की हो। दुनिया में कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण नहीं है।
11. **माफी मांगें और माफ करें**– अपनी गलती पर तत्काल माफी मांगें। दूसरे की गलतियों को माफ करना सीखें। ऐसा करने पर आपमें तनाव की स्थिति कभी नहीं आयेगी।

याद रखें उदास और लटके हुए चेहरे किसी को भी अच्छे नहीं लगते, आपको भी नहीं। प्रसन्नता ही वह अवस्था है जो आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने के साथ कठिन स्थितियों से भी कुशलतापूर्वक निपटने में मदद करती है। इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि आप जो भी कार्य करते हैं उसे दिल से पसंद करें, प्यार करें और अपनी क्षमता तथा चेष्टा का शत-प्रतिशत उस काम में लगायें। आप पायेंगे कि आपकी कार्यकुशलता में निखार आयेगा और आपके मन के भीतर संतुष्टि और प्रसन्नता की लहर सदैव विद्यमान रहेगी।

-अतिरिक्त निदेशक, आइ.ई.सी., चिकित्सा एवं स्वास्थ्य निभाग,

नारी-स्तम्भ

काश! मैं भी एक बूँद होती

सुश्री रूपाली सुराना

काश! मैं भी एक बूँद होती
तो सागर में तिर जाती
काश! मैं भी एक पक्षी होती
तो आसमान में खुला लहराती
सुन लेता अगर भगवान मेरे दिल को भी
तो आज मैं भी जग को अपने गीत सुनाती।
काश! मैं भी एक तितली होती
तो सबका दिल लुभाती
काश! मैं भी एक कोयल होती
तो आज मैं मधुर वचन में जग को अपना दुःख सुनाती।
काश! मैं भी एक हवाईजहाज होती
तो अपनी उड़ान खुद भर पाती।
सुन लेता अगर भगवान मेरे दिल की
तो आज मैं भी जग को अपना दर्द बताती।
क्या पाप किया है मैंने
जिसकी वजह से मुझे ठुकराया जा रहा है
मैं एक सिगरेट नहीं, जो धुएँ में खत्म हो जाऊँ
मैं एक नारी हूँ जो, इंसान को इंसान बनाऊँ
नारीत्व का धर्म मैं क्यों न निभाऊँ
क्यों मैं अपने अस्तित्व से वंचित रह जाऊँ,
नारी ही देवी है तो नारी ही अग्निकाया है।
नारी ही नफ़रत है तो नारी ही ममता की माया है।

-सुपुत्री श्री रमेश सुराना, ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)

युवा-स्तम्भ

जीवन का प्राण है चरित्र

डॉ. दिलीप धींग

एक कहावत है कि यदि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। चरित्र सोने-चाँदी और हीरे-मोती से भी महंगी चीज़ होती है। किसी के पास पद है, पैसे हैं और चरित्र नहीं है तो उसका पद, पैसा सब व्यर्थ है। कोई विद्वान् आदमी भी है और यदि उसके पास चरित्र नहीं है तो उसका ज्ञान भी व्यर्थ है। चरित्र जीवन का प्राण है। प्राण ही जीवन की सुरक्षा करता है। प्राण नहीं हो तो दूसरी सारी चीजें फालतू हो जाती हैं। इसलिए जीवन की सुरक्षा के लिए चरित्र की रक्षा आवश्यक है।

सवाल उठता है कि आखिर चरित्र है क्या? चरित्र का अर्थ है- उत्कृष्ट मानवीय सद्गुणों का समूह। इन सद्गुणों के अन्तर्गत हमारे जीवन की सारी अच्छाइयाँ आ जाती हैं। इन अच्छाइयों को हम यहाँ 12 सद्गुणों में बाँट सकते हैं। बारह सद्गुणों (जीवन -मूल्यों) से मिलकर उच्च और उत्तम चरित्र का निर्माण करते हैं। इन चारित्रिक गुणों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. **अहिंसा-** सभी प्रकार की हिंसा, तोड़फोड़, उपद्रव आदि से दूर रहना तथा किसी भी निरपराध जीव को नहीं मारना, नहीं सताना अहिंसा है। पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं की रक्षा करना भी अहिंसा है। अहिंसा को जीवन का अंग बना लिया जाए तो देश और दुनिया में स्थायी शान्ति हो सकती है, पर्यावरण भी अच्छा हो सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अहिंसा की ताकत से हमारे देश को आजादी दिलवाई।
2. **करुणा-** दीन-दुःखी, असहाय मानवों और निरीह प्राणियों पर दया करना करुणा है। जिस मानव के हृदय में करुणा का निवास होता है, वह मानव कभी किसी पर अत्याचार नहीं करता है। पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं पर करुणा करके ही भारत के ऋषि-मुनियों ने मांसाहार का निषेध किया।
3. **सदाचार-** अच्छे आचरण और सही चाल-चलन को सदाचार कहते हैं। हर व्यक्ति को अपने व्यवहार में पवित्रता रखनी चाहिये और कभी किसी के साथ कोई गलत बर्ताव नहीं करना चाहिये। सदाचार की राह पर चलने के लिए नशाखोरी और दुराचार जैसी बुराइयों को छोड़ना पड़ता है। सदाचार अच्छे चरित्र का मुख्य आधार है।
4. **सत्य-** हमारे देश के राष्ट्रीय चिह्न के साथ जो आदर्श वाक्य अंकित है, वह है-

'सत्यमेव जयते'। यानी सत्य की विजय होती है। यह वाक्य उपनिषद् से लिया गया है। बापू ने कहा था कि अहिंसा साधन है तो सत्य साध्य है। सत्य सिर्फ वाणी की सच्चाई तक ही सीमित नहीं होता है।

5. **नैतिकता**– हमें हमारे लेन-देन, व्यवहार आदि में नीति-नियमों का पालन करना चाहिये। नैतिकता से ही आदमी नीतिवान, न्यायवान और प्रामाणिक बनता है। प्रामाणिक आदमी का सब जगह विश्वास किया जाता है। नैतिकता के पूर्ण पालन के लिए चोरी और रिश्वतखोरी से भी दूर रहना चाहिये। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति मानी जाती है।

6. **प्रेम**– अच्छे चरित्र के लिए जरूरी है कि हम सब आपस में प्रेमभाव, भाईचारा और सहृदयता बनाए रखें। मानव-मानव से प्यार करेगा तो अनेक झगड़े समाप्त हो जायेंगे। कबीर ने कहा था कि ढाई आखर प्रेम रा पढ़े सो पण्डित होय। यानी कितना ही बड़ा विद्वान् हो, लेकिन प्रेम के बिना उसका ज्ञान भी अधूरा है।

7. **सेवा**– जो व्यक्ति अपने जीवन को सद्गुणों से सजाना चाहे, उसे सेवा धर्म का पालन अवश्य करना चाहिये। एक कहावत है कि करोगे सेवा तो मिलेगा मेवा। यानी सेवा करने वाले को बहुत लाभ होता है। लेकिन हमें बिना अपेक्षा सेवा धर्म निभाना चाहिये। परिवारजनों के बीच सेवा-भावना हमेशा बनी रहनी चाहिये। जो कोई बीमार, वृद्ध या असहाय हैं, उनकी सेवा करना मानवीय फर्ज है।

8. **परोपकार**– दूसरों की भलाई करने को परोपकार कहते हैं। महर्षि व्यास ने 18 पुराणों का सार बताते हुए कहा कि "परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्" अर्थात् परोपकार करने से पुण्य होता है और दूसरों को पीड़ा देना, कष्ट देना पाप है। परोपकार करके मानव जीवन को सार्थक करना चाहिये।

9. **विनय**– अच्छे चरित्र के लिए विनय और नम्रता बहुत जरूरी है। विनय को सद्गुणों का मूल भी कहा गया है। विद्या से विनय आता है- "विद्या ददाति विनयम्।" शिक्षित व्यक्ति को नम्र होना चाहिये। विनयवान होकर आदमी अपने घमण्ड को छोड़ सकता है। विनय से ही व्यक्ति बड़ा बनता है। इसलिए माता, पिता और बड़ों का विनय करने की शिक्षा दी जाती है।

10. **मर्यादा**– मर्यादा चरित्र की रक्षा करती है और चरित्र जीवन की रक्षा करता है। खाने, पीने, रहने, बोलने आदि में मर्यादा का बड़ा महत्त्व है। भगवान् महावीर ने कहा- "संयमः खलु जीवनम्" अर्थात् संयम ही जीवन है। संयम और मर्यादा जैसे उच्च चारित्रिक गुण जीवन को अनुशासित बनाते हैं।

11. **देशभक्ति–** हमें हमारे देश और देश की महान् विरासत के प्रति प्रेम और आदर रखना चाहिये। देशभक्ति अथवा राष्ट्रीयता की भावना होने से कोई भी नागरिक गलत कार्य नहीं करेगा। अच्छे कार्यों को कर्त्तव्यनिष्ठा से करना भी राष्ट्रीयता है। देश के लिए जिन लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया, उन महामनाओं के प्रति पूर्ण सम्मान रखना चाहिये।

12. **विश्वबंधुत्व–** हमारा भारत देश बहुत ऊँचे आदर्शों तथा ऊँचे चरित्र वाला देश है। राष्ट्रीयता की भावना रखते हुए भी हमारा नारा है–''वसुधैव कुटुम्बकम्'' यानी सारा संसारा हमारा परिवार है। इस भावना से मानव–मानव के बीच प्रेम बढ़ता है और मानवता की महती भावना विकसित होती है।

इस प्रकार इन बारह बिन्दुओं को आचरण में ढाल कर कोई भी व्यक्ति अपने चरित्र को ऊँचा बना सकता है। जिस व्यक्ति का चरित्र ऊँचा और उत्तम होगा, उस व्यक्ति का जीवन भी श्रेष्ठ होगा। अच्छा चरित्र जीवन की सुरक्षा तो करता ही है, साथ ही अच्छे चरित्र से परिवार, समाज, देश, मानवता और पर्यावरण की सुरक्षा भी हो जाती है। मेरे एक मुक्तक के साथ मैं विराम लेना चाहूँगा:–

दक्षता पाने के लिए अभ्यास चाहिए।
सफलता पाने के लिए विश्वास चाहिए।
इन्हें बनाए रखने के लिए जीवन में,
पवित्र-चरित्र की सुवास चाहिए।।

–उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

अभिमत

श्री राजूलाल माणिकचंद कोचर

जिनवाणी संग्रहणीय तथा ज्ञान की गंगा

मैं कई साल से जिनवाणी का सदस्य होने से, जिनवाणी का पूरी तरह आस्वाद लेता हूँ। दिन–ब–दिन जिनवाणी आकर्षक, ज्ञानयुक्त तथा संग्रहणीय लगती है। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की ''विष को अमृत बनाने की कला'' श्री हीराचन्द्र जी की ''समूह में जीने की कला'', श्री धर्मचन्द जी जैन की ''आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ।'' आत्मा ही सामायिक आदि रचनाएँ पढ़कर मस्तिष्क को अनेक प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं। युवा स्तम्भ, नारी–स्तंम्भ, बाल–स्तम्भ रोचक तथा उपयुक्त लगते हैं।

किताब पूरी पढ़े बगैर रखी नहीं जाती। जिनवाणी ऐसे ही प्रगति पथ पर बढ़ते रहे, यही मनोकामना।

–'सौभाग्य'', नागजी हॉस्पीटल के पीछे, वडाला रोड, नासिक-422011 (महा.)

बाल-स्तम्भ

किशोर मन की जिज्ञासाएँ

श्री मनोहरलाल जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 15 जनवरी 2013 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

किसी नगर में मैं संत-दर्शन को गया था। सम्भवतः वह दिन सामूहिक दयाव्रत का था। संतप्रवर अपनी गोचरी-पानी के पश्चात् आये हुए तथा स्थानीय व्यक्तियों से चर्चा कर रहे थे। मैं भी सामायिक लेकर एक ओर बैठा था तथा चिन्तन कर रहा था कि इतने में ही कतिपय किशोर जिनकी संख्या सात-आठ होगी, मेरे पास आ गये। मैं बिल्कुल ही अपरिचित था तथा समझ नहीं पा रहा था कि क्या किया जाए? एक-दो मिनिट तक किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति बनी रही, उसको तोड़ते हुए मैंने बालकों से पूछा- "आप लोगों को सामायिक पाठ तो याद होंगे?" बालकों का उत्तर था कि हमको सामायिक-पाठ आदि कुछ भी याद नहीं है। केवल नवकार मंत्र याद है। उन्होंने बाल सुलभ भोलेपन से यह भी बताया कि हमारे इस मित्र के मामाजी दबाव देकर यहाँ ले आये। हमको तो अब यह भी ज्ञात नहीं कि खा पी लेने के बाद अब क्या करना है?

मैंने उनको समझाया कि अब आये हो तो धीरे-धीरे सारी प्रक्रिया भी समझ जाओगे। अब आप लोग यदि सामायिक में हैं तो थोड़ी धर्म चर्चा कर सकते हैं। चर्चा में जब कभी थकावट आ जावे तो आप लोग निःसंकोच मुझे कह देना तो हम चर्चा बंद कर देंगे।

हाँ, तो आपको नमस्कार मंत्र आता है, पहले नमस्कार मंत्र पर ही चर्चा करते हैं। जिज्ञासा यह हो सकती है कि पहले अरिहंत भगवान को ही क्यों नमस्कार किया गया अन्य को क्यों नहीं? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए हम विचार करें तो परिवार में पहला उपकार माता का होने से वह पहले वन्दनीय है। हम जब बिल्कुल नादान थे, जन्म के पश्चात् एक-दो दिन के भी नहीं हुए होंगे, तबसे हमारा सबसे पहला परिचय हमारी माता से हो चुका था।

माता को यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि "मैं तुम्हारी माता हूँ" हमने तो स्वतः ही स्वीकार कर लिया था कि यह हमारी माँ है। माता का ही उपकार है कि उसने हमको संसार से परिचित कराया कि ये तुम्हारे भाई हैं, बहन हैं या मामा हैं आदि-आदि। इसी प्रकार अरिहंत भगवान का हम पर उपकार है कि उन्होंने धर्म का मार्ग बतलाया तथा तीर्थ की स्थापना कर साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका का पद प्रदान किया। अरिहंत भगवान ने यदि धर्म दिपाया नहीं होता तो हम इस संसार सागर में भटकते रहते। इसी कारण माता के समान अरिहंत भगवान भी हमारे लिये प्रथम पूजनीय एवं वंदनीय है।

हमारी यह जिज्ञासा भी हो सकती है कि अरिहंत भगवान तो एक हैं जिन्होंने धर्म दिपाया फिर नवकार मंत्र में अरिहंताणं अर्थात् अनेक अरिहंत शब्द क्यों लगाया? अरे! बालक अनेक नहीं अनन्त अरिहंत हो चुके हैं तथा आगे भी होते रहेंगे। उन सभी को नमस्कार किया गया है। पुनः प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि धर्म तो एक है, फिर अनन्त अरिहंत भगवान कैसे? समाधान यह है कि धर्म को भुलाया नहीं जा सके इसलिये समय-समय पर अरिहंत भगवान द्वारा धर्म को दिपाया जाता है। धर्म शाश्वत है, वह अरिहंत द्वारा प्रकाशित किया जाता है। वंश की निरंतरता जैसे वंश परम्परा में संतति के जन्म लेने से चलती है, अन्यथा वंश परम्परा समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार यदि अरिहंत परम्परा निरंतर नहीं रही तो धर्म का भी लोप हो जाएगा।

यह भी सम्भव है कि हम भी कभी अरिहंत पद प्राप्त करें। अन्तर केवल यही है कि अरिहंत पद में तीर्थंकर पद प्राप्त नहीं भी किया तो भी उनके समकक्ष केवली पद अवश्य ही प्राप्त होगा। तीर्थंकर भगवान तथा केवली भगवान में मात्र इतना ही अन्तर है कि तीर्थंकर भगवान धर्म तीर्थ की स्थापना करते हैं। इस प्रकार जब अरिहंत भगवान को नमस्कार करते हैं तो परोक्ष में हम अपनी शुद्ध आत्मा को ही नमस्कार करते हैं।

हमको ज्ञात है कि हम भी अरिहंत पद प्राप्ति की पात्रता रखते हैं तो इसके लिये प्रयास अभी से ही प्रारम्भ कर दिये जाने चाहिये। इसके लिये हमारा प्रारम्भ यह हो कि हम सदा सत्य बोलें तथा कभी भी बिना आज्ञा के किसी की कोई भी वस्तु नहीं लें, चाहे अपने घर में रखी हुई विशिष्ट वस्तु ही क्यों न हो, हमको अपने माता-पिता या वरिष्ठ सदस्य से अनुमति अवश्य लेनी चाहिये।

आजकल बचपन से ही हमको झूठ बोलने की जरा ज्यादा ही आदत हो गई है। स्कूल में दिया गया गृहकार्य नहीं किया तो झूठा बहाना बनायेंगे। स्कूल नहीं जाना हो तो बहाना, बात-बात में झूठ बोलने की आदत सी बन गई है, इस पर जितनी जल्दी नियंत्रण होगा उतनी ही जल्दी इस जीवन में तो लोकप्रियता प्राप्त करेंगे, साथ ही अशुभ कर्मों का भी क्षय करेंगे। बस आज इतना ही।

एक किशोर ने प्रश्न किया कि क्या इतना याद करने पर आप आगे बतायेंगे? मैंने कहा कि भाई याद करने जैसा तो मैंने कुछ भी नहीं बताया है। आपको समझाया अवश्य है कि अरिहंत भगवान कौन हैं उनको प्रथम नमस्कार क्यों किया जाता है? हमको क्या करना है सत्य बोलना तथा चोरी नहीं करना, इसमें याद करने जैसी तो कोई बात नहीं है। केवल आचरण में उतारना भर है। प्रारम्भ में गलतियाँ अवश्य होंगी, किन्तु इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिये अपने से बड़ों के समक्ष अपनी गलती स्वीकार करना अत्यधिक सटीक उपाय है। इससे आपके आत्मबल का भी विकास होगा। एक दिन अवश्य ही ऐसा आयेगा जब आप बिना त्रुटि के व्रतों का पालन कर सकेंगे।

प्रश्नः-

1. बालकों ने दयाव्रत किसके कहने पर किया?
2. 'नमस्कार मंत्र' के अन्य नाम बताइये?
3. अरिहंत को पहले नमन क्यों करते हैं?
4. धर्म शाश्वत कैसे रहता है?
5. तीर्थंकर और अरिहंत में क्या अन्तर है?
6. जैन तीर्थ के नाम बताओ, जिसका निर्माण तीर्थंकर ने किया है।
7. इस आलेख में आपको कौनसे गुण ग्रहण करने की प्रेरणा प्राप्त हुई है?

-74, महावीर मार्ग, धार-454001 (मध्यप्रदेश)

बाल-स्तम्भ [अक्टूबर-2012] का परिणाम

जिनवाणी के अक्टूबर-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'दंभ में दम नहीं' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 39 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	अतिका मेहता-गुलाबनगर, जोधपुर(राज.)	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	अमन जैन-खेरली (राज.)	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़शहर (राज.)	19
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	तुषार जैन-खेरली (राज.)	19
	नमन जैन-इन्दौर(म.प्र.)	19
	सोनू जैन-जयपुर (राज.)	19
	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी (राज.)	18
	श्रेयांस जैन-सांघीपुरम्-कच्छ(गुजरात)	18

स्वास्थ्य-विज्ञान

सूर्य किरण चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरडिया

सूर्य किरण चिकित्सा की प्राचीनता

सूर्य ताप, प्रकाश एवं ऊर्जा का सबसे बड़ा प्राकृतिक स्रोत है, जो प्राणिमात्र को सहज उपलब्ध है। सूर्य अपने अमूल्य स्रोतों के उपयोग के बदले में अन्य बिजली उत्पादन कम्पनियों की भांति हमारे पास भुगतान हेतु बिल नहीं भिजवाता, न हमारे से कुछ अपेक्षाएँ रखता है और न अपने प्रभुत्व पर गर्व करता है। सूर्य तथा प्राणिमात्र का आपस में घनिष्ठ संबंध होता है। सूर्य के बिना पृथ्वी पर किसी भी प्राणी, पशु और वनस्पति के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। अथर्ववेद, सूर्योपनिषद् पुराण, महाभारत, रामायण आदि प्राचीन ग्रन्थ सूर्य विज्ञान से भरे पड़े हैं। वैदिक काल में भारतीय लोग सूर्य के गुणों से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने सौर पुराण की रचना की, सौर सम्प्रदाय बनाया तथा अनेक सूर्य मन्दिरों का निर्माण किया। अनादि काल से सूर्य नमस्कार एवं सूर्य स्नान का हमारे राष्ट्र में प्रचलन है।

भगवान महावीर की कठोर साधना में सूर्य की आतापना (धूप सेवन) का विशेष उल्लेख मिलता है। जैन साधुओं को दिन के तीसरे प्रहर अर्थात् धूप में आहार एवं विहार हेतु आने जाने का शास्त्रीय विधान है, भले ही आधुनिक युग में उस निर्देश की प्राय: पालना कम होती है। परन्तु आज हम सूर्य की ऊर्जा का लाभ लेना नहीं जानते। घर एवं व्यावसायिक स्थलों पर दरवाजे बंद कर, पर्दे लगाये जाते हैं और बिजली की रोशनी में कार्य करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप वहां रहने एवं कार्य करने वालों की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होती जा रही है।

कठोर परिश्रम करने वाले गांव के किसानों एवं मजदूरों को काफी ज्यादा केलोरी खर्च करनी पड़ती है। परन्तु उनके भोजन में प्राय: बहुत कम केलोरी ही उपलब्ध होती है। बाकी सारी आवश्यक ऊर्जा उन्हें सूर्य से ही प्राप्त होती है।

प्रात:कालीन उदित सूर्य दर्शन से लाभ

सूर्योदय के समय वायुमण्डल में अदृश्य पराबैंगनी किरणों (Ultra Violet Rays) का विशेष प्रभाव होता है जो विटामिन डी का सर्वोत्तम स्रोत होती हैं। ये किरणें रक्त में लाल और श्वेत कणों की वृद्धि करती हैं। श्वेत कण बढ़ने से शरीर में रोग प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ने

लगती है। परा बैंगनी किरणें तपेदिक, हिस्टीरिया, मधुमेह और महिलाओं के मासिक धर्म संबंधी रोगों में बहुत लाभकारी होती है। ये शरीर में विकारनाशक शक्ति पैदा करती हैं तथा रक्त में कैलशियम की मात्रा भी बढ़ाती हैं, जिससे शरीर में हड्डियाँ मजबूत होती हैं। आंतों में अम्ल-क्षार का संतुलन एवं शरीर में फास्फोरस-कैल्शियम का संतुलन बना रहता है।

सूर्य किरणों का स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव

प्रात:कालीन सूर्योदय के सामने चन्द मिनटों तक देखने से नेत्र ज्योति बढ़ती है, परन्तु सूर्योदय के 40-50 मिनट पश्चात् सूर्य को खुले नेत्रों से देखना हानिप्रद हो सकता है। उदित होते हुए सूर्य दर्शन से शरीर के सभी आवश्यक तत्त्वों का पोषण होता है। हृदय रोग, मस्तिष्क विकार, आंखों का विकार आदि अनेक व्याधियाँ दूर होती हैं।

प्रात:कालीन हल्की धूप में सूर्य की तरफ मुख कर तथा आंखें बंद कर शरीर को दाएं-बाएं, आगे-पीछे धीरे-धीरे चारों तरफ घुमाने से गर्दन के रोग दूर होते हैं। मस्तिष्क में रक्त का संचार सुव्यवस्थित होता है तथा तनाव दूर होता है। सूर्योदय के सामने वज्रासन में बैठ सिंहासन मुद्रा में जीभ को जितना निकाल सकें, बाहर निकाल कर, आंखे पूरी खोलकर, नाक से श्वास लेते हुए, सूर्य को निहारते हुए यथा शक्ति जोर से दहाड़ने से गले, नाक, कान, मुंह, छाती, फेंफडों आदि के रोग दूर होते हैं तथा वायु नली, स्वर नली और भोजन नली सशक्त होती है।

सूर्य किरणें जीवन-शक्ति बढ़ाती हैं, स्नायु दुर्बलता कम करती हैं, पाचन और मल निष्कासन की क्रियाओं को बल देती हैं, पेट की जठराग्नि प्रदीप्त करती हैं, रक्त परिभ्रमण संतुलित रखती हैं, फोस्फोरस और लोहे की मात्रा बढ़ाती है, अन्त: स्रावी ग्रन्थियों के स्राव बनाने में सहयोग करती है।

सूर्य किरणों में विभिन्न रंग

सूर्य की किरणों में सात दृश्यमान एवं दो अदृश्यमान रंगों की किरणें होती हैं। दृश्यमान सात रंग निश्चित क्रम से होते हैं, जिन्हें इन्द्रधनुष के समय अथवा विशेष प्रयोगों द्वारा आसानी से देखा जा सकता है। विभिन्न रंगों का मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक रंग के अपने विशेष स्वास्थ्यवर्धक गुण होते हैं। सूर्य की किरणों से होने वाले सात रंग बैंगनी (Violet), नीला (Indigo), आसमानी (Blue), हरा (Green), पीला (Yellow), नारंगी (Orange), लाल (Red) के क्रम से होते हैं।

पहले तीन रंग शरीर में गर्मी को नियंत्रित करने तथा कष्ट में शांति पहुँचाने में सहायक होते हैं। ये रंग शरीर के अवयवों में रासायनिक परिवर्तन करने में अहं भूमिका निभाते हैं। अत: सूर्य की इन तीन रंग की किरणों तथा पराबैंगनी किरणों को रासायनिक किरणें भी

कहते हैं। मध्य वाला हरा रंग गर्मी एवं सर्दी के प्रभाव को संतुलित रखने में सक्षम होता है। अन्तिम तीन रंग शरीर में गर्मी पहुँचाने वाले होते हैं। वर्तमान में सूर्य किरण चिकित्सा में सात रंगों के स्थान पर प्रत्येक समूह में से एक रंग का ही उपयोग करने का अधिक प्रचलन है। जिससे चिकित्सा पद्धति अधिक सरल बन गयी है। प्रथम तीन रंगों के समूह में से प्राय: नीला रंग, अंतिम रंगों के समूह में से नारंगी एवं बीच के हरे रंग का अधिकतर उपयोग किया जाता है। परन्तु विशेष एवं लम्बे रोगों की स्थिति में बैंगनी एवं लाल रंग का भी उपयोग किया जा सकता है। रोगी के लिये कौनसी किरणों का उपचार किया जाये, यह रोग की स्थिति पर निर्भर करता है।

आयुर्वेद के त्रि-दोष सिद्धान्त से समानता

आयुर्वेद के आधारभूत त्रिदोष सिद्धान्त के अनुसार कफ , वात एवं पित्त रूपी तीन दोषों का असन्तुलन ही रोग उत्पत्ति का प्रमुख कारण होता है। सूर्य किरण चिकित्सा में कफ प्रधान अथवा सर्दी के कारण होने वाले रोगों में नारंगी तथा लाल रंग का, वात प्रधान या शरीर में गन्दगी बढ़ जाने एवं उसका सही विसर्जन न होने से उत्पन्न होने वाले रोगों में हरे रंग का तथा पित्त प्रधान अथवा गर्मी की अधिकता से होने वाले रोगों में नीले रंग के विधिवत् प्रयोग द्वारा कफ , वात एवं पित्त को संतुलित कर रोगी को रोगमुक्त किया जा सकता है। सूर्य किरण चिकित्सा शारीरिक रोगों के साथ-साथ हमारे स्वभाव तथा मानसिक स्थिति बदलने में भी सहायक होती है, जिससे क्रोधी व्यक्ति शान्त एवं सुस्त व्यक्ति, फुर्तीला बन सकता है।

तीन रंग की विशेषताएँ

नारंगी रंग की विशेषताएँ

आमाशय, तिल्ली, लीवर, आंतों, फेंफड़ों व हाथ-पैर के रोगों में इसका अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ता है। यह आयोडीन की कमी को मिटाता है। रक्त में लाल कण बढ़ाता है। मांसपेशियाँ स्वस्थ बनाता है और झुर्रियां मिटाने में सहायक होता है। रक्त संचालन एवं स्नायु संस्थान को सक्रिय बनाता है। गतिहीन अंगों की जड़ता दूर कर उसमें गति लाने की क्षमता रखता है। भूख न लगना, गैस, जोड़ों का दर्द, खांसी, दमा, बच्चों की बिस्तर में पेशाब करने की आदत, निम्न रक्त चाप, स्नायु दुर्बलता आदि रोगों को मिटाने की अद्भुत क्षमता रखता है। सुस्ती आने, जम्भाइयाँ लेने, अधिक नींद आने, नाखून नीले पड़ जाने आदि रोगों में नारंगी रंग काफी लाभप्रद होता है।

नारंगी रंग के सेवन से पेट की गैस दूर होती है। अम्लता वाले रोगियों को विशेष लाभ

होता है। खून में लाल कणों की वृद्धि होती है। वृद्धों के लिये ताकत की दवा के समान होता है। स्त्रियों की माहवारी के समय दर्द होने अथवा कम आने पर नारंगी पानी पीने तथा लाल तेल की मालिश नसों और कमर पर करने से लाभ होता है। नारंगी पानी पीने से मलेरिया से बचाव होता है। बारी-बारी के अन्तराल से बुखार आने पर जिस दिन बुखार नहीं आया हुआ हो, मुंह फीका हो, उस दिन नारंगी रंग का पानी देना चाहिए, परन्तु बुखार वाले दिन नीला पानी देना अधिक प्रभावशाली होता है।

नारंगी रंग मानसिक प्रभाव की दृष्टि से साहस, उत्साह एवं इच्छाशक्ति बढ़ाने में सहायक होता है। नारंगी रंग की दवा का प्रयोग सदैव भोजन या नाश्ते के 15 मिनट बाद और 30 मिनट के भीतर करना चाहिये।

हरे रंग की विशेषताएँ

हरा रंग गर्म और ठण्डे रंग के बीच का रंग होने से गर्मी तथा सर्दी के प्रभावों को संतुलित करता है। यह शरीर की गन्दगी बाहर निकालने, शरीर का ताप सन्तुलित रखने, कब्जी मिटाने तथा खून को साफ करने में विशेष सहायक होता है। मानसिक दृष्टि से हरा रंग राग एवं द्वेष को घटाकर समभाव लाने में सहायक तथा मन को प्रसन्न रखने वाला होता है। शरीर के विषैले तत्त्वों को शरीर से बाहर निकाल फैंकने की अद्भुत क्षमता के कारण छूत की बीमारियों के निवारण में यह बहुत ही उपयोगी होता है।

अल्सर, टाइफाइड, चेचक, सूखी खाँसी, खुले घाव, दाद, पथरी, रक्तचाप, मिर्गी, हिस्टीरिया, मुंह में छाले तथा शरीर के किसी भी भाग में पीब पड़ने की अवस्था में उनको नष्ट करने में काफी लाभप्रद होता है। आँतों, गुर्दो, मूत्राशय, त्वचा, कमर व पीठ के नीचे के अंगों से संबंधित रोगों में हरा रंग अधिक प्रभावशाली होता है। शरीर में इस रंग की कमी से विभिन्न चर्म रोग तथा दोषों की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। नेत्र रोगों में भी यह विशेष लाभकारी होता है।

मोतियाबिम्ब पकने से पूर्व नियमित हरे पानी से आंखें धोने से मोतिया बिम्ब (Cataract) होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। चर्म रोग में हरा पानी तथा नीला तेल रोग ग्रस्त त्वचा पर अथवा दाद पर लगाने से रोग जड़ मूल से नष्ट हो जाता है।

हरे रंग की बोतल में बनाई गई दवा का प्रयोग सदैव प्रात:काल खाली पेट या आधा घण्टे से एक घण्टे भोजन के पहले करना चाहिये।

नीले रंग की विशेषताएँ

नीला रंग ठण्डा, शान्तिदायक, कीटाणुनाशक एवं सिकुड़न वाले स्वभाव का होने से गर्मी के प्रकोप से उत्पन्न रोगों में विशेष प्रभावशाली होता है। इसके उपयोग से मानसिक

तनाव कम होता है तथा साधक आध्यात्मिक विकास एवं ध्यान में सरलता पूर्वक विकास कर सकता है। कीटाणुनाशक होने के कारण मवाद पड़ने की अवस्थाओं में काफी लाभप्रद होता है। शरीर की गर्मी, हाथ पैरों की जलन, प्यास की अधिकता, तेज बुखार, हैजा, अजीर्ण, दस्त, अनिद्रा, मिर्गी, पागलपन, हिस्टीरिया, उच्च रक्तचाप मूत्रावरोध, मूत्र में जलन, शरीर में किसी प्रकार का जहर फैल जाना, जैसे रोगों में नीले रंग की दवा काफी लाभप्रद होती है। नीले रंग की दवा शरीर के अन्दर अथवा बाहर से बहने वाले खून को बन्द करती है। गर्मी से गला बैठने पर नीले पानी के गरारे से लाभ होता है। गले, गर्दन, मुँह, मस्तिष्क एवं सिर से संबंधित रोगों पर नीले रंग का अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ता है। नीले रंग का प्रयोग सदैव भोजन या नाश्ते के आधा घण्टे पूर्व करना चाहिए।

लकवा, सन्धिप्रवाह, छोटे जोड़ों का दर्द (गठिया), विभिन्न वात, कम्पनजन्य रोग व ठण्ड से उत्पन्न विकार और अधिक कब्ज की शिकायत में नीले रंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए। नीले रंग के दुरुपयोग में होने वाले कष्ट और विकार नारंगी या लाल रंग के उचित प्रयोग से दूर हो जाते हैं।

दवा बनाने की विधि

सूर्य किरण चिकित्सा में पानी की दवा, चीनी अथवा मिश्री की दवा, सूर्यतप्त तेल, ग्लिसरीन की दवा, सूर्यतप्त हवा एवं सूर्य की किरणों का सीधा उपयोग करने से रोगों का उपचार किया जा सकता है।

पानी की दवा तैयार करने की विधि

रोग के अनुसार जिस रंग का पानी तैयार करना हो, उस रंग की बोतल लेकर उसको पूर्णतया साफ कर लें। यदि कोई कागज चिपके हुये हों तो, उन्हें हटा दें, अगर विशेष रंग की कांच की बोतल न मिले तो सफेद रंग की बोतल पर इच्छित रंग का सेलोफेन कागज दोहरा कर लपेट लें। बोतल को तीन चौथाई शुद्ध पानी से भर लें। बोतल का मुँह बन्द कर किसी लकड़ी के पट्टे पर रख, उसे धूप दिखाने से सूर्य की किरणों का प्रभाव पानी में आने लगता है। 6-8 घण्टे धूप में रखने से साधारण पानी दवा का रूप ग्रहण कर लेता है। सूर्यतप्त पानी को धूप जाने के पश्चात् सुरक्षित स्थान पर रख स्वयं ठण्डा होने देना चाहिए। एक बार पानी दवा बनने के बाद तीन दिन तक उसमें रोग निवारक शक्ति रहती है, परन्तु जो बोतल रोजाना धूप में रखी जाती है, उसका पानी अधिक शक्तिशाली बन जाता है।

सफेद रंग की बोतल में तैयार किया गया पानी

पीलिया या महामारी के दिनों में सफेद बोतल का धूप में रखा हुआ पानी पीने से महामारी से बचा जा सकता है। यह पानी बच्चों को ताकत देता है एवं दांत निकलते समय

इस पानी को देने से दांत सरलता से निकल जाते हैं। हड्डी टूटने की स्थिति में सफेद पानी पीने से हड्डी के जुड़ने में सहायता मिलती है।

जल बनाने में सावधानी

सूर्यास्त होते होते बोतल को धूप से हटा देना चाहिए। चन्द्रमा, तारों या दीपक आदि अन्य प्रकार का प्रकाश (सूर्य के अलावा) बोतल पर पड़ जाने से वह कभी-कभी निरुपयोगी ही नहीं, अपितु हानिकारक भी हो सकता है। अत: उसे सफेद कपड़े से ढ़क कर रखना चाहिए। अलग-अलग रंग की बोतलें धूप में पास-पास में नहीं रखनी चाहिए।

तेल, चीनी या अन्य दवा बनाने की विधि

पानी की भांति सूर्य तप्त तेल, मिश्री, चीनी, गिलिसरीन आदि से भी तैयार किया जा सकता है, परन्तु ये दवाइयाँ लगातार 50 से 60 दिन तक सूर्य की धूप में रखने से तैयार होती हैं। दवा का प्रभाव भी दो तीन माह तक रहता है। तीन माह पश्चात् पुन: तीन दिन तक उसी रंग की धूप में रख देने से उसमें पुन: रोग नाशक प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। वैसे बीच में समय-समय पर धूप दिखाने से उनकी रोग निवारक क्षमता बढ़ जाती है।

नीले तेल के विशेष लाभ

1. नारियल के नीले रंग के तेल की सिर में मालिश करने से सिर दर्द, अनिद्रा, बुखार दूर होता है। दिमागी कार्य की क्षमता बढ़ती है। स्नायु तंत्र शांत होता है।
2. मच्छर अथवा विषैले जानवरों के काटने पर अथवा जलने पर नीला तेल लगाने से तुरन्त आराम मिलता है।
3. नीला तेल गर्म करके कान में डालने से कान का दर्द शीघ्र ठीक होता है।
4. बवासीर के मस्सों पर नीला तेल बहुत गुणकारी होता है।
5. बच्चों के दांत निकलते समय नीले तेल की सिर में मालिश करने से दांत आराम से निकल जाते हैं।

सूर्य की किरणों को सीधा डालने की विधि

15 से 30 मिनट तक सहनशक्ति के अनुसार रोगग्रस्त अंगों पर सीधी रंगीन सूर्य किरणें डालने से शीघ्र प्रभाव पड़ता है। पुरानी तथा कठोर सूजन में लाल या नारंगी रंग का प्रभाव व गर्म तथा लालीयुक्त सूजन की अवस्था में नीले प्रकाश से आराम मिलता है। आँखों की बीमारी में हरे रंग की किरणें डालना लाभप्रद होता है। चीनी पंच तत्त्व के सिद्धान्तानुसार हरे रंग की किरणों से यकृत एवं पित्ताशय, लाल रंग की किरणों से हृदय और छोटी आंत, पीले रंग की किरणों से तिल्ली, पेन्क्रियाज और आमाशय, सफेद रंग की किरणों

से फेंफडे और बड़ी आंत तथा नीले रंग की किरणों से गुर्दे एवं मूत्राशय सशक्त होते हैं।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.com

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी में 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ में प्रकाशित आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 जनवरी 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. सूर्य किरण चिकित्सा की प्राचीनता के प्रमाण लिखिये।
2. उदित सूर्य की किरणों को लेने से होने वाले कोई पाँच लाभ बताइये।
3. शरीर में गर्मी को नियंत्रित करने वाले कौनसे रंग हैं, नाम लिखिए।
4. नारंगी, हरे और नीले रंग की विशेषताओं का एक चार्ट बनाइये।
5. एक मरीज जिसके हाथ में पिछले 6 महीने से सूजन है, वह आपसे सलाह मांगे तो सूर्य किरण चिकित्सा विधि के अनुसार उसे आप क्या सलाह देंगे?
6. किसी बच्चे को पेट में दर्द होता है तो किस प्रकार की चिकित्सा की जानी चाहिये?
7. कब्ज अधिक रहे तो क्या करना चाहिये?

दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष

नमो नमो

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो।
हस्ती कृति को, गुरु भक्ति को, हीराचन्द्र को नमो नमो।
समताधारी को, गुण भंडारी को, हीराचन्द्र को नमो नमो ।
सुआराधना, सम्यक् साधना, हीराचन्द्र को नमो नमो ।
अर्द्ध शती पे, दीक्षा तिथि पे, हीराचन्द्र को नमो नमो ।
आचार्य देव को, संघ सिरमौर को, हीराचन्द्र को नमो नमो ।

संकलित : श्री अशोक कुमार जैन, जयपुर (राज.)

कविता

समाधान : बढ़ाये ज्ञान

श्री जितेन्द्र चौरड़िया 'प्रेक्षक'

सम्यक् प्रश्नों द्वारा खुद से, खुद की पहचान करायें।
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।।

उचित प्रश्न हमारे मन का, करते रहते हैं संशोधन,
समुचित उत्तर उनके हमको, देते रहते हैं प्रतिबोधन।
परिष्कृत कर विचार खुद को, प्रगति सोपान बढ़ायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 1।।

प्रश्नोत्तर रूपी रत्न-कण, अखूट निधि है ज्ञान की,
प्रदान करते सुबोधि और, अमूल्य ऋद्धि निर्वाण की।
दुर्लभ नर-तन को बोधि का, हम परिधान पहनायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 2।।

निज स्वरूप को आओ देखें, जिज्ञासा के दर्पण में,
वास्तविकता से अवगत होकर, फंसें नहीं आकर्षण में।
श्रद्धा के स्वच्छोदक से निज, आत्मा को स्नान करायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 3।।

निरर्थक प्रश्न तो मात्र ज्ञान, प्रदर्शन का एक पुर्जा है,
आत्मा को शक्ति देने वाला, उपयोगी प्रश्न एक ऊर्जा है।
सार्थक प्रश्नों से आत्मा को, हम ऊर्जावान बनायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 4।।

पर दोष दर्शन करते, नहीं निज को निहारा है हमने,
स्वयं की झाड़ू से औरों के, घर को बुहारा है हमने।
निज घर की गंदगी को भी, अब कूड़ादान दिखायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 5।।

अनंतकाल से कर रहे, व्यवहार दृष्टि से अवलोकन,
उपादान को भूल निमित्त पर, कर रहे दोषारोपण।
खोलें निश्चय-नेत्र स्वयं को, चक्षुष्मान बनायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 6।।

सतत साधना से भी हमारा, जीवन क्यों नहीं बदल रहा?
क्योंकि दैत्य कषाय रूपी, उसका सुफल है निगल रहा।
'प्रेक्षक' सुफल की रक्षा हेतु, समता अभियान चलायें,
हल प्राप्त कर ज्ञानी जनों से, अपना ज्ञान बढ़ायें।। 7।।

-11/ 5, गौतम मार्ग, नयापुरा, उज्जैन-456006 (म.प्र.)

गुरुवर का नाम लेना

विरक्ता प्रभा एवं अन्तिमा जैन

(तर्ज- वो दिल कहाँ से लाऊँ)

गुरुवर का नाम लेना, भक्ति में रमने वाले।
चरणों की धूल लेना, चिन्मयता पाने वाले।। टेर।।

श्वासों में हीरा गुरुवर, हो बस तेरा बसेरा।
जिह्वा मेरी रुके ना, गुणगान गाते-गाते।। 1।।
गुरुवर का.....।।

हो संघ के 'प्रभाकर', मृदुता जो तेरी पाकर।
धन्य हुए हैं प्राणी, जिनवाणी सुनने वाले।। 2।।
गुरुवर का.....।।

रत्नसंघ के गगन में, ध्रुवतारा एक हो तुम।
दिव्य देशना है तेरी, सिद्धता को चाहने वाले।। 3।।
गुरुवर का.....।।

देह से विदेही बनना, लक्ष्य यही है मेरा।
'रुचि' जगी है तुमसे, संयम दिलाने वाले।। 4।।
गुरुवर का.....।।

-विज्ञान नगर, कोटा (राज.)

प्रेरक-प्रसंग

जीवन दृष्टि का झरोखा

एक युवा दम्पती के पड़ौस में दूसरे युवा जोड़े ने आकर रहना आरम्भ किया। पहले से रह रहे दम्पती सुबह का नाश्ता करने के लिए भोजन की मेज पर बैठे तो महिला की नज़र सामने वाले दम्पती द्वारा सुखाये गये कपड़ो पर पड़ी। महिला ने कहा- "उस महिला के द्वारा धोये गये वस्त्र अच्छी तरह साफ नहीं हुए हैं। या तो उसके द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला साबुन अच्छी किस्म का नहीं है या फिर उसे कपड़े धोना अच्छी तरह से नहीं आता है।" उनके कपड़े सुखाने और इनका नाश्ता करने का समय लगभग निश्चित था। एक महीने तक वह महिला यही टिप्पणी उसके कपड़ों के लिए करती रही और पति रोज चुपचाप सुनता रहा।

प्रतिदिन की भांति उस महिला ने अपनी आदत के मुताबिक ज्योंही कपड़ों की ओर देखा तो वह आश्चर्यचकित होकर बोली- "आज तो उसके कपड़े बहुत ही साफ हैं। किसने सिखाया उसके इतने अच्छी तरह से कपड़े धोना?" उसके पति ने कहा- "मैं आज सुबह बहुत जल्दी उठ गया था। मैंने अपनी खिड़कियों के शीशों को बहुत ही अच्छी तरह से साफ कर दिया था।" पत्नी भौंचक रह गई एवं उसे सच्चाई का अहसास हुआ।

ऐसा हमारे वास्तविक जीवन में भी होता है। जब हम दूसरों के जीवन को देखते हैं तो हमारी दृष्टि की पवित्रता पर निर्भर करता है कि उनमें हम क्या और कैसा देखते हैं। हमारी मानसिकता जैसी होती है वैसा ही हम दूसरों को देखते हैं, मूल्यांकन करते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि दूसरों की आलोचना करने से पूर्व हम अपनी मानसिकता का मूल्यांकन करें। दूसरों में अच्छाई की अपेक्षा करने से पूर्व अपने में उस अच्छाई का विकास करने का प्रयास करना बेहतर उपाय है। *-संकलन : सुधीर सुराणा, चेन्नई*

अध्यात्म

श्री अरविन्द लोढ़ा

1. नियम की सार्थकता उसके गुण बनने में है, नियम का तब तक पालन करना चाहिए जब तक वह हमारा गुण नहीं बन जाए।
2. गुण ही धर्म है, अवगुण ही पाप है। अहिंसा ही सत्य है और हिंसा ही असत्य है।
3. भगवान के अलावा इस संसार में सबको बदलाव की आवश्यकता है, इसलिए हम किसी के शत्रु नहीं, साथी बनें।

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (32)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह पांचवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जनवरी 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.241 से 300 तक से प्रश्न)

-इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये:-

1. पोय्सल राजवंश की कुलदेवी के रूप में कौन विख्यात हुई?
2. बौद्ध और अन्य धर्मावलम्बी ने मंत्र-तंत्र का सहारा लेकर किसका प्रचार किया?
3. कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राजवंश से किसे छीन लिया?
4. तीर्थंकर की मूर्ति के स्थान पर किसकी पूजा की परिपाटी थी?
5. राजा किशोर 'सल' ने किसकी आज्ञा से शेर को धराशायी कर दिया?

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये:-

6. एक स्तम्भ लेख में.....परम्परा के आचार्यों की छोटी सी पट्टावली उल्लिखित है।
7. अविनीत गंग राजा परम आस्थावान.....था।
8. जैन संघ के आचार्य सिंहनन्दि ने.....की स्थापना की।

9. पूर्वकाल में पृथ्वी भर में श्रमण लोगों की संख्या.....मात्रा में थी।
10. राजा एक्कल द्वारा आचार्य भानुकीर्ति को.....किया।

संख्या में उत्तर दीजिये:-

11. कदम्बवंशी राजाओं ने.....वर्ष के शासनकाल में दानादि द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया।
12. सिंहनन्दि ने गंग राजवंश को प्रतिज्ञा कराते हुए.....बातों से उन्हें सावधान किया।
13. मयूर शर्मा ने .....अश्वमेध यज्ञ किये।
14. शिवकुमार के युद्धों में उसके शरीर पर शस्त्रों के .....घाव लगे।
15. सब अभिलेखों में नगर का लेख संख्या.....सबसे पहले का है।

इन प्रश्नों के उत्तर में नाम लिखना है:-

16. शिलालेख में से चार आचार्यों के नाम लिखो।
17. दक्षिण के शासकों के रूप में किसे-किसे निर्धारित किया।
18. इक्ष्वाकुवंश के राजाओं में से किन्हीं चार के नाम लिखो।
19. कृष्ण राजा के समय में तीन बड़े-बड़े जैनाचार्य कौन हुए?
20. तिन्त्रीणिक गच्छ के किन्हीं चार आचार्यों के नाम लिखो।

रिक्त स्थान की पूर्ति 'स' अक्षर से करनी है:-

21. यादव किशोर को पोय्सल के नाम से.....करना प्रारम्भ किया।
22. राजा तंडगाल माधव निष्ठा.....जैन धर्मावलम्बी था।
23. दक्षिण में जैन संघ का बहुत बड़ा.....समाप्त हो गया।
24. जैन संघ शक्तिशाली धर्मसंघ के रूप में .....जीवित रह सकता है।
25. गंगराज ने 1550 के आसपास शिव.....की स्थापना की।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (30) का परिणाम

जिनवाणी अक्टूबर, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 182 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- चन्द्रकला मेहता-बैंगलुरु

द्वितीय पुरस्कार- चेतना बी. बोहरा-मुम्बई

तृतीय पुरस्कार- मोनिका जैन-इन्दौर

सान्त्वना पुरस्कार-

1. प्रमिला कैलाश कोठारी-जोधपुर
2. रीमा दिनेश जैन-लुधियाना
3. महावीर तातेड़-चेन्नई
4. हेमा कृष्ण बाघमार-सिकन्दराबाद
5. प्रिया मुकेश चौपड़ा-इचलकरंजी

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता- Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anil Kumar Jain-Kota, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Babu Lal Jain-Jaipur, Balwant Singh Choradia-Jhalara Patan, Bhopal Chand Setiya-Jodhpur, Chandrakala Dilipji Ranka-Jalgaon, Chetana B.Bothra-Malad (Mumbai), Devendra Nath Modi-Jodhpur, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Dharmendra jain-Sawai Madhopur, Dilkhushraj Jain-Vadodara, Dr.Padam Chand Munot-Jaipur, Gyan Chand Kothari-Ajmer, Hema Kishore Bagmer-Secunderabad, Hemlata Jain-Beawar, Hemraj Surana-Jaipur, Jagadish Prasad jain-Kota, Joharimal Chambor-Jodhpur, Kamala Singhvi-Jaipur, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Khimji .R. Shah-Mumbai, Kuntal kumari Jain-Jaipur, Kusum Singhvi-Jodhpur, Leelabai Prakashchandji Munot-Ichalkaranji, Maaya Alijar-Secunderabad, Madhubala Pramodkumarji Bora-Ichalkaranji, Manju Dilip Jain-Mumbai, Meena Choradiya-Chennai, Meena Vijay Bora-Malad, Mohlata Hansraj Jain-Jaipur, Monika Jain-Indore (M.P), Mrs.Reema Jain-Ludhiana, N.Mahaveer Tater-Sowcarpet (Chennai), Natmal Kothri-Balod, Padam Chand Gandhi-Jodhpur, Padam Chand jain-Bharatpur, Paras Jain-Bellary, Parasmal Daulat Rajji Baghmar-Barmer, Prabha Gulecha-Bangalore, Prasan Gang-Mumbai, Prasan Kothari-Jodhpur, Preeti Nahar-Chittorgarh, Priya Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pushpa Devi Brdia-Jaipur, R.T.Jain-Jalgaon, Ragini Jain-Sawai Madhopur, Rajendra Tejmal Chhajed-Jalgaon, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Shabnam Khan-Jaipur, Shakuntala Devi Tater-Chennai, Shanu Jain-Sawai Madhopur, Shobha Nandalalji Gugale-Ichalkaranji, Shobha R.Chhajed-Jalgaon, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Smt.Anjana Rajendra Karkani-Devas, Smt.Chandrakala Mehta-Bangalore, Smt.Kamal Chordia-Jaipur, Smt.Kamala Modi-Jodhpur, Smt.kamlesh Gelda-Ajmer, Smt.Pramila Kailash Kothari-Jodhpur, Smt.Reena Kothari-Balod, Smt.Siddhi Kothari-Balod, Sudha Bansali-Jodhpur, Suresh Chand jain-Kherali, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Bhadari-Bangalore, Urmila Choradiya-Surat, Usha Lunawat-Ajmer, Vandana .D/O.Anil Khicha-Surat, Vijaya Devi Rikab Chandji-Gajendragarh, Vinod Jain-Shimoga.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Amita Tamby-Jaipur, Anshu Jain-Ajmer, Anurag Surana-Ajmer, Arihant Bafna-Chennai, Aruna Jain-Hoshiarpur, Ashok Jain-Chennai, Bhagvanraj Singhvi-Pali, Dharam Chandra Dhammani-Ahmedabad, GhewarChand chhajed-Bellary, Gunmala Jain-Chittorgarh, Harsha Jain-Pali, Indu Kamaleshji Jain-Mumbai, Jaya Bhandari-Beawar, Jethmal Jain-Jodhpur, Jyoti

Bhansal-Bangalore, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kamala Surana-Jodhpur, Kanak Badner-Delhi, Kanchan Lodha-Nasik, Kavita Jain-Mumbai, Kiran Kothari-Jaipur, Lad Mehta-Bhilwara, Lalita Ganeshchandji Surana-Solapur, Madanlal Sancheti-Hyderabad, Meena Bai .R. Nahar-Ichalkaranji, Meenakshi Lodha-Gurgaon, Narendra Gopichand-Thane, Neelam Jain-Gurgaon, Neelam Jain-Ajmer, Neetu Golecha-Secunderabad, Nen Chand Bafna-Jodhpur, Nirmala H.Surana-Bikaner, Nirmala K.Lunavat-Katraj (Poona), Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Pooja Jain-Chennai, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prachi Singhvi-Bangalore, Pramila Mahta-Jaipur, Pramila Pokarna-Dhulia, prem Jain-Alwer, Premlata Lodha-Jaipur, Premlatha Saand-Pali, Pushpa Jain-Jaipur, Raj Kumar Banthiya-Pali, Ratan Kanawat-Jaipur, Rekha Kothari-Ajmer, Renu Virendra Jain-Mumbai, Rikhab Raj Bohra-Delhi, Sagar Malji Nahar-Chittorgarh, Shashikala Pradeepji-Nasik, Shilpa Surana-Ajmer, Smt. Shiromani Jain-Shajapur, Subhash Mohanlalji Dhadiwal-Mumbai, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chhajer-Jodhpur, Sunil Kumar Jain-Karoli, Sunita oswal-Jaipur, Sunitha Singhvi-Chennai, Suvarna Nitin Bora-Kolhapur, Uagam Dosi-Secunderabad, Upma Choudhary-Ajmer, Usha Singhvi-Jodhpur, Vasantha Bai-Hospet, Vidhya Sanghvi-Badnawar, Vijaya Laxmi Mohnot-Jaipur, Vijaya Laxmi Mohnot-Ajmer, Vikas Bamb-Mumbai, Vinod Palrecha-Jodhpur, Vivek Mehta-Jaipur.

23 या उससे कम अंक प्राप्तकर्ता – Anjana Chopra-Coimbatore, Dal Chand Jain-Jaipur, Lalita Jain-Hyderabad, Manila Parakh-Jaipur, Meenu Mehta(jain)-Jaipur, Milap Parasmal Lunawat-Ahmedabad, Pavan Jain-Belgaum, Pramila Bhandari-Bangalore, Pramila Mahta-Ajmer, Pramila Vinod Kumar Bohra-Jaitaran, Priti Gugaliya-Bhilwara, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Raj Kumarji Lodha-Jaipur, Rohit Oswal-Jaipur, Saroj Nahar-Delhi, Shakuntala Bohra-Secunderabad, Shobha Nahar-Secunderabad, Smt. Chandralata Mehta-Jaipur, Smt. Madhu Pipda-Bhilwara, Smt.Mohanbai Prakash Mal Lodha-Ajmer, Smt.Neelamji Chipad-Jaipur, Smt.Pista Golecha-Jaipur, Smt.Sumita Navlakha-Kota, Tara Kumari Runiwal-Jaipur, Vikram Chopra-Coimbatore, Babulal Jain-Bharatpur, Bhavika M.Shah-Belgaum, Chandan Mal Palrecha-Jodhpur, Deepmala Singhvi-Pali, Dharmesh Punamia-Pali, Prakash chand gadiya-Hyderabad, Suresh Kumar Saand-Pali, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Vandana Punamiya-Pali, Veena Tarunji Kimtee-Rampura (M.P), Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Raj Kumar Jain-Mumbai, Renumal Jain-Jodhpur.

श्रीमती पारसकंवर जी भण्डारी का संथारा

आदर्श श्राविकारत्न श्रीमती पारसकंवर जी भण्डारी, चेन्नई ने दिनांक 10 नवम्बर 2012 को प्रातः 7.50 बजे चौविहार संथारा ग्रहण किया है। 3 दिसम्बर 2012 को संथारे को 24 दिन हो गए हैं।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

राजुल आख्यान- प्रो. अनिल जैन, ***प्रकाशक***- जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.), ***पृष्ठ***- 6+106, ***मूल्य***-150 रुपये, ***सन्***- 2012

राजुल एवं तीर्थंकर नेमिनाथ के प्रसिद्ध इतिवृत्त को आधार बनाकर राजस्थान, गुजरात एवं ब्रज क्षेत्र में विभिन्न रागों में सरस पद लिखे गए हैं, जो हिन्दी साहित्य के विकास की कहानी कहते हैं। भक्त कवि सूर, तुलसी, मीरा की भांति जैन सन्त-कवियों ने भी अपनी काव्यमयी लेखनी से साहित्य को समृद्ध किया है। राजुल-नेमि के आख्यान भी उसी कड़ी के साक्षी हैं। डॉ. अनिल जैन ने ऐसे आख्यानों का संकलन कर उपयोगी विशद भूमिका लिखी है तथा अन्त में राजुल-आख्यान विषयक उपलब्ध रचनाओं की उपयोगी सूची दी है, जो शोद्यार्थियों के लिए अतीव उपयोगी है। डॉ. जैन ने पुस्तक में ब्रह्मयशोधर, रत्नकीर्ति, भट्टारक कुमुदचन्द्र, हर्षकीर्ति, भट्टारक शुभचन्द्र, द्यानतराय, भूधरदास आदि 28 कवियों का परिचय एवं उनकी राजुल-आख्यान सम्बन्धी रचनाओं को भी प्रस्तुत किया गया है। ये रचनाएँ विभिन्न रागों में गेय हैं। इनमें राजुल की जो भावनाएँ व्यक्त हुई हैं, उनमें वैराग्य, संयम आदि मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है। हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के लिए एवं काव्य पदों से प्रेरणा ग्रहण करने वालों के लिए ये आख्यान नितान्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण हैं। डॉ. जैन ने रचना शैली की विभिन्न विधाओं यथा-हिंडोलना, दूतकाव्य, बारहमासा, प्रबन्धकाव्य, फागु, रास संवाद आदि में प्राप्त राजुल-नेमि के आख्यानों की सूची दी है। डॉ. अनिल जैन ने शोध के इस अछूते विषय की ओर ध्यान आकृष्ट किया है, अतः वे बधाई के पात्र हैं।

उपाध्याय पुष्कर मुनि जैन हिन्दी कथा साहित्य एवं अनुशीलन- साध्वी डॉ. प्रज्ञा श्री (चन्द्रकला गादिया), ***प्रकाशक***- नवकार तीर्थ अतिशय क्षेत्र, घेवरा मोड़, दिल्ली-110041, ***प्राप्ति स्थान***- (1) सौ. मीना मोतीलाल जी राठौड़, 414, मंगलवार पेठ, आशा कॉम्प्लेक्स, ग्वाल धक्का चौक, पूना-11 (मो.098220-63619), (2) श्री वैभव प्रवीणचन्द गादिया, श्री जनरल स्टोर्स, घोड़नदी, तालुका शिरूर, जिला-पुणे (महा.) मोबाइल-092255-24182, ***पृष्ठ***-444, ***मूल्य***-500 रुपए, ***संस्करण***-दिसम्बर-2011

उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी एक सफल साहित्यकार एवं कुशल कथाकार थे। जैन कथाओं पर आपकी 111 पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। उन्हीं को आधार बनाकर लिखे शोधग्रन्थ पर साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से पी-एच्. डी. उपाधि प्राप्त की है। इस शोधग्रन्थ में छह अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में कथा साहित्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय में कथाओं के विविध रूपों की चर्चा है। तृतीय अध्याय पूज्य पुष्कर मुनि जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बद्ध है। चतुर्थ अध्याय में उपाध्याय श्री के द्वारा रचित कथाओं का अनुशीलन किया गया है, जिसमें कथा तत्त्व, कला-सौन्दर्य, जीवन-निर्माण, परिस्थिति-मूल्यांकन, शैली आदि की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में कथाओं में धार्मिक चिन्तन एवं षष्ठ अध्याय में सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्याकंन किया गया है। ग्रन्थ पर पूज्य उपाध्याय श्री के सुशिष्य उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी शास्त्री ने विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लिखी है।

'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' (संक्षिप्त चार भाग) का गुजराती अनुवाद प्रकाशित

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी, इतिहास मार्तण्ड आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज द्वारा प्रणीत "जैन धर्म का मौलिक इतिहास" के संक्षिप्त चार भागों का गुजराती अनुवाद प्रकाशित हो गया है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर द्वारा प्रकाशित चार भाग हैं- 1. तीर्थंकर खण्ड (24 तीर्थंकर), 2. केवली तथा पूर्वधर खण्ड भाग-प्रथम (वीर निर्वाण संवत् 1 से 1000 तक), 3. सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम (वीर निर्वाण संवत् 1001 से 1475 तक), 4. सामान्य श्रुतधर खण्ड -द्वितीय (वीर निर्वाण संवत् 1476 से 2000 तक)। इन चार भागों के गुजराती अनुवाद की दीर्घकाल से प्रतीक्षा थी, जिसे संघनिष्ठ समर्पित श्रावकरत्न श्री पदमचन्द जी कोठारी, पालड़ी-अहमदाबाद ने इस कार्य में रुचि लेकर पूर्ण किया है। अपने भ्राता श्री चैनराज जी एवं डॉ. योगेन्द्र पारेख (चतुर्थ भाग) ने भी गुजराती अनुवाद में अपनी लेखनी का सहयोग दिया है। गुजराती में प्रकाशन होने से गुजराती संत-सती, विद्वज्जन एवं अनेक जिज्ञासु पाठक मौलिक इतिहास की महत्त्वपूर्ण सामग्री से लाभान्वित हो सकेंगे। चारों भागों की पृष्ठ संख्या क्रमशः 432, 382, 288 एवं 280 है तथा प्रत्येक भाग का मूल्य 75/- रुपये है। इन्हें प्राप्त करने के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क किया जाए- मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302004 (राज.), दूरभाष-0141-2575997/2570753

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर का जयपुर चातुर्मास बना एक यादगार

तप-त्याग, मासखमण एवं शीलव्रतियों से सुरभित बनी नगरी
संघ द्वारा वीर परिवार समारोह एवं बृहद् अधिवेशन का आयोजन
श्रद्धा का उमड़ा सैलाब

परमाराध्य, परम श्रद्धेय, परम-पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन वर्षावास का सुयोग पाकर गुलाबीनगरवासी श्रद्धा-भक्ति एवं शक्ति-समर्पणता के साथ सवाये चातुर्मास को सवाया बनाने की भूमिका में सफल हुए। प्रायः उत्तरार्द्ध समय में तप-त्याग, व्रत-नियम ग्रहण करने वालों की संख्या न्यून रह जाया करती है, प्रवचन में भी गिनती के भाई-बहिन होते हैं, लेकिन जयपुर का परिदृश्य आदि से अन्त तक उल्लेखनीय रहा। दर्शन-वन्दन हेतु आगतों के आने का क्रम प्रायः हर दिन अनवरत बना रहा। उपनगरों से भी भाई-बहिनों में पूज्य आचार्य भगवंत के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ लेने का लक्ष्य बराबर रहा, पर्व तिथियों व रविवार के दिन तो विशाल प्रवचन-स्थल पूरा खचाखच भर जाया करता था। प्रवचन में सभी की सामायिक करने की भावना बनी रही। खुले या जाजम पर बैठने वालों की संख्या अति अल्प रही।

प्रातःकालीन प्रार्थना नवदीक्षित श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. फरमाते थे। उसके पश्चात् लगभग 8 बजे से तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के समीप जिज्ञासु संत-सती, विरक्ता बहिनें व श्रावक-श्राविकाओं का लगभग डेढ़ घण्टा आगमों का अध्ययन क्रमवार चलता रहा। गतमाह प्रवचन श्रद्धेय श्री यशवंतमुनि जी म.सा. एवं तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. फरमा रहे थे। आगमों पर आधारित प्रवचन-धारा को सुनने अधिकतर भाई-बहिन समय पर प्रवचन-स्थल में विराज जाते। परम उपकारी, कल्याणकारी पूज्य आचार्य भगवन्त प्रवचन-सभा में प्रायः प्रत्याख्यान समय पर पधार कर दर्शनार्थियों की भावना को सफलीभूत करने के दृष्टिकोण से संक्षिप्त ही सही, किन्तु मार्मिक एवं हृदयग्राही उद्बोधन फरमाकर अनुगृहीत करते रहे। रविवार, पर्व तिथि व संघ के आगमन पर आपश्री का प्रवचनामृत जब प्रवाहित होता, तो विराजे हुए श्रोता प्रेरक वचन सुन आत्मविभोर हो जाते। स्थानकवासी सम्प्रदाय के आपश्री ज्येष्ठ आचार्य हैं। अष्ट सम्पदा के धनी, इन गुरु भगवन्त की सौम्यता, आचारप्रवणता, क्रियानिष्ठता, वाणीमाधुर्य, गुणसम्पन्नता से हर आगत प्रभावित रहा और दर्शन लाभ के पश्चात् मुदिता के भावों के साथ

आत्मानन्दी बनने की प्रेरणा पाकर अपने आपको अतीव गौरवशाली एवं सौभाग्यशाली अनुभव करता रहा।

गत माह दोपहर 2 से 3 बजे तक व्यवहार सूत्र की वाचना पूज्य आचार्य भगवंत की पावन सन्निधि में प्रवाहमान रही। सभी संत-सतीवृंद के साथ आगम रसिक श्रावक-श्राविकाएँ भी इस अमूल्य वाचनी में समय पर उपस्थित हो शांतचित्त से श्रवण का लाभ लेते रहे। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी सरल भाषा में व्याख्या-विवेचन फरमाते। तीन बजे पश्चात् संत-भगवंतों की सन्निधि में सीखने-सिखाने का क्रम चलता रहा।

प्रतिक्रमण में उभयकाल 50 से 100 के मध्य नियमित उपस्थिति रही। रविवार एवं पर्व तिथि को यह संख्या दुगुनी से अधिक रही। प्रायः संवराराधना में भी 60 से 100 के बीच भाइयों की संख्या प्रतिदिन बनी रही। बहिनें महासती-मण्डल की सन्निधि में बराबर संवर साधना में रत रहीं।

श्रद्धेय संतवृंद व महासती-मण्डल तो मानो इस वर्षावास में अधिकतम तप में पुरुषार्थ करने की मानसिकता पूर्व में बना चुके थे। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री मोहनमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री आशीष मुनि जी म.सा., महासतियों में व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. का वर्षावास के कुल दिनों की संख्या से अधिक दिनों का अनुपात उपवास के खाते में रहा। इस संघ की अधिकतर चारित्रात्माएँ एकान्तर तपाराधना या एकासन की आराधना में लम्बे समय से रत हैं। पूज्य आचार्यप्रवर से प्रायः उपवास भी आसानी से नहीं होता, लेकिन उत्तरार्द्ध समय में उन्होंने पहले 2 दिन के अन्तराल से बाद में एक पक्ष तक एकान्तर तपाराधना कर उपवास नहीं हो सकने की धारणा को निर्मूल कर दिया। इस माह में श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने 9 दिवसीय तपस्या गुरु चरणों में स्वास्थ्य-समाधि के साथ समर्पित की। महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा. के सिद्धि तप की आराधना की अंतिम कड़ी में अठाई की तपस्या 30 नवम्बर को सम्पन्न हुई। महासती श्री अंजना जी म.सा. ने नीवी का मासखमण किया है तथा महासती श्री तितिक्षा श्री जी ने अल्प दीक्षा पर्याय में दूसरा मासखमण कर मासखमण की शृंखला में नया अध्याय जोड़ दिया है। दीक्षा लेते ही पहला मासखमण परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर की सन्निधि में किया। जयपुर में मासखमण से आगे बढ़ते हुए 37 की उग्र तपस्या कर पूज्य गुरुदेव के 50 वें दीक्षा दिवस पर स्वर्णिम अनूठा अर्घ्य अर्पित किया। महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा. ऐसी पहली सती है, जिन्होंने एक ही वर्षावास में मासखमण एवं सिद्धि तप की आराधना आत्मबल से गुरु चरणों

में की है। महासती श्री पूनम जी ने भी इस चातुर्मास में दूसरी अठाई की तपस्या कर गुरु-भक्ति का परिचय दिया है। रत्नसंघ का हर एक रत्न तपस्वी है।

भाई-बहिनों में से भी महावीर प्रसाद जी जैन ने इस मास में 36 दिवसीय तपस्या गुरु चरणों में की है। आप पूर्व में इसी चातुर्मास में मासखमण कर चुके हैं। यह आपका दूसरा मासखमण है। इसी प्रकार श्री नवरतनमल जी लुंकड़ ने इस चातुर्मास में दो मासखमण किये हैं। लुंकड़ साहब अब तक 21 मासखमण गुरु चरणों में कर चुके हैं। वयोवृद्ध तपस्वी साधक श्री पूनमचंद जी दुगड़ के इस चातुर्मास में कृत मासखमण के साथ अब तक 25 मासखमण पूज्य गुरु भगवंतों की चरण सन्निधि में हो चुके हैं। ऐसे श्रद्धा-भक्ति-निष्ठा-समर्पण वाले गुरुभक्तों पर इस संघ को गौरव है। इस वर्षावास में मासखमण एवं उससे अधिक तपस्या की आराधना हुई, जिसकी सूची इस प्रकार है-

1. श्री अरूण जी भंडारी-अहमदाबाद (41), 2. श्री महावीरप्रसादजी जैन-जयपुर (36, चातुर्मास में दूसरा मासखमण), 3. श्रीमती उषाबाई गौतमचन्दजी सुराणा-जयपुर (35), 4. श्रीमती सुनीता राजेशजी जैन-हिण्डौन सिटी (35), 5. श्रीमती जया सुरेशचन्दजी गोखरू-जयपुर (31), 6. श्रीमती भावना नवीनजी जैन-जयपुर (31), 7. श्री नवरतनमलजी लुंकड़-जयपुर (31), 8. श्रीमती प्रेमलताबाई कमलचन्दजी बम्ब-जयपुर (31), 9. श्री शेलेन्द्रजी कोठारी-जयपुर (31), 10. श्री मोहनलालजी जैन-सवाईमाधोपुर (31), 11. श्रीमती उषा उम्मेदसिंहजी चौधरी-जयपुर (31), 12. श्री महावीरप्रसादजी जैन-जयपुर (31), 13. श्रीमती मीना अभिनन्दनजी जैन-जयपुर (31), 14. श्रीमती संजूलता रवीन्द्रकुमारजी जैन-जयपुर (31), 15. श्रीमती प्रेमलता रोशनलालजी मेहता-जयपुर (31), 16.श्रीमती आस्थादेवी पारसमलजी छाजेड़-जयपुर (31), 17. श्रीमती सरलादेवी नीलमचन्दजी मुणोत-जयपुर (31), 18.श्रीमती मधु लखपतचन्दजी भंडारी-जयपुर (31), 19. श्रीमती किरणबाई दशरथमलजी लोढा-जयपुर (31), 20. श्रीमती राखी संजयकुमारजी बोथरा-जयपुर (31), 21. श्री नवरतनमलजी लुंकड़-जयपुर (31, चातुर्मास में दूसरा मासखमण), 22. श्रीमती पूजा नितिनजी बुरड-जयपुर (31), 23. श्री पूनमचन्दजी दुगड़-जयपुर (30), 24. श्रीमती निशा रूपेशजी नवलखा-जयपुर (30)

पूज्य आचार्यप्रवर के 50 वें दीक्षा-दिवस की पूर्व संध्या पर पाली संघ के 45 भाई-बहिनों ने 19 नवम्बर 2012 से आगामी वर्ष तक के लिये एकान्तर तपाराधना करने के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से लिये। युवारत्न श्री अमित जी डागा ने मात्र 29 वर्ष की वय में आजीवन शीलव्रत के खंध लेकर जो वीरता, साहस, सांसारिक सुख-सामग्री के उपभोग से अलिप्तता का परिचय दिया है, ऐसा उदाहरण ढूढ़ने पर नहीं मिलता। यह

अनुमोदनीय अभिनन्दनीय, अनुकरणीय एवं प्रेरणीय है। श्री अमित जी वीर भ्राता एवं वीर पुत्र हैं। आपकी सांसारिक भगिनी महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. एवं सांसारिक मातुश्री महासती श्री नव्यप्रभा जी म.सा. कोयम्बतूर में तथा सांसारिक पिताश्री श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा. जयपुर में शासन की महती प्रभावना कर रहे हैं।

गुरुदेव पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस पर 100 से ऊपर भाई-बहिनों (बहिनों की संख्या अधिक) ने सिद्धि तप एकासन की आराधना का अर्घ्य 19 नवम्बर को अर्पित किया। इसी दिन पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से 22 शीलव्रत के खंध हुए।

दीक्षा-दिवस पर पूज्य आचार्य भगवंत के पावन श्री चरणों में तिक्खुत्तो के पाठ से सैकड़ों भाई-बहिनों ने 36 बार, 108 भाई-बहिनों ने 108 बार एवं 7 युवाओं ने 1008 बार सविधि वन्दना कर गुरु-भक्ति का आदर्श उपस्थित किया है। 1008 बार जिन्होंने शरीर स्वास्थ्य की परवाह किये बिना सविधि वन्दना की, उनके नाम इस प्रकार हैं- 1. विरक्त बन्धु जिनेन्द्र कुमार बाफना-जलगांव, 2. श्री गौरव जी नवलखा-जयपुर, 3. श्री विकास जी जैन-निसूरा वाले, 4. श्री कपिल जी जैन-नदबई, 5. श्री नानेश जी जैन (हनी), 6. श्री कोमल जी जैन-गांधीनगर, 7. श्री संदीप जी जामड़-मदनगंज।

50 वें दीक्षा-दिवस पर अनेक तेले हुए तथा विभिन्न प्रकार के तप-त्याग एवं नियम स्वीकार किए गए। उपवास, एकासन एवं दयाव्रत करने वालों की संख्या सैकड़ों में रही। इससे पूर्व भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर भी तेले की आराधना, बेले की तपस्या तथा उपवास भी बहुत विशाल संख्या में हुए।

श्रद्धेय श्री यशवंत मुनि जी म.सा. के आप सांसारिक पिताश्री श्रीमान शांतिलाल जी जैन-चौरू वालों ने चातुर्मास काल में 5 महीने तक अनवरत रोजाना दयाव्रत की आराधना, एकासने का सिद्धि तप, संवत्सरी पर पचोले एवं भगवान् महावीर निर्वाण दिवस पर तेले की साधना की।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी13 नवम्बर 2012 को सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. पर गुणानुवाद सभा रखी गई। उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन 14 नवम्बर 2012 को प्रतिपदा के दिन श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने धारा प्रवाह सस्वर समय पर पूर्ण किया।

सेवानिवृत्त न्यायाधिपति माननीय श्री जसराज जी चौपड़ा ने प्रायः पूरे चातुर्मास में प्रवचन-श्रवण, दर्शन-वंदन का सुलाभ लिया। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत 17 नवम्बर को दर्शनार्थ गुरुचरणों में पधारे। पूज्य आचार्य प्रवर ने भावी पीढ़ी को संस्कारित बनाने के लिये नैतिक शिक्षा को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने

की प्रेरणा दी। मुख्यमंत्री महोदय ने इस संकेत पर पूज्य श्री का आभार प्रदर्शन कर कहा कि आपश्री के मार्गदर्शन के अनुसार योजना बनाई जाएगी। इसका दायित्व श्री डी.आर. मेहता साहब सम्हालें और आगे की क्रियान्विति के लिये योजना का प्रारूप तैयार करायें।

वर्षाकाल में एकासन, उपवास, बेला, तेला, चौला, पचौला, छः, सात, अठाई, एकान्तर उपवास, नीवी, दया, आयम्बिल, पौषध, संवर, ओली, मासखमण, वर्षीतप आदि की हजारों तपस्याएँ हुईं। बारहव्रती, आजीवन शीलव्रती, आजीवन रात्रिभोजन के त्यागी तथा चातुर्मास अवधि में रात्रि भोजन के त्यागी भी सैकड़ों रहें।

प्रवचन सभा का संचालन चातुर्मास में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के मंत्री श्री विमलचंद जी डागा ने सुन्दर शब्दों में किया। आगत संघों का मात्र वचनों से स्वागत होने की परम्परा विगत कई वर्षों से चल रही है। ज्ञान-क्रिया से सम्पन्न रत्नसंघ की यही विशिष्ट पहचान है। जयपुर संघ आगतों के पधारने पर प्रमुदित भावों से यथाशक्य स्वधर्मी वात्सल्य में तत्पर रहा। स्वर्गीय श्री केवलमल जी लोढ़ा की प्रबल भावना चातुर्मास का सुयोग पाकर साकार हुई। चातुर्मास समिति के संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत पूरे पाँच माह व्यवस्था-संचालन में सक्रिय रहे। लोढ़ा बन्धुओं व उनकी टीम ने तत्परता से सारी संघीय व्यवस्था को संभाला। जयपुर शहर वालों ने धर्मध्यान कर संवर की आराधना भी की। महारानी फार्म-मानसरोवर, मालवीय नगर, प्रतापनगर, बजाजनगर, आदि उपनगरों के सहकार से चातुर्मास में समवसरण जैसा माहौल अधिकतर बना रहा। 28 नवम्बर कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को वर्षावास का आखिरी दिवस था। आज अनेक भक्तों ने पूज्य गुरुदेव के उपकार पर कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि ऐसा अनमोल अवसर दर्शन-लाभ-प्रवचन-श्रवण आदि का प्रसंग रह-रहकर स्मृति में चिरकाल तक याद दिलाता रहेगा।

मार्गशीर्ष कृष्णा एकम 29 नवम्बर को आचार्यप्रवर का संत-मंडली के साथ विहार मालवीय नगर हुआ, जिसमें लगभग दो-ढाई हजार श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता की। यहाँ पर धर्मामृत का पान करा कर 1 दिसम्बर को आपश्री आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, बजाजनगर पधारे हैं।

उपलब्धिपूर्ण रहा मेड़ता वर्षावास

कहते हैं कि यदि कोई सच्चे मन से पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरुजनों की प्रतीक्षा करते हैं तो उन्हें आना ही होता है। धर्म नगरी मेड़ता सिटी कई वर्षों से इस प्रतीक्षा में थी। करुणाकर उपाध्यायप्रवर मेड़ता वासियों की श्रद्धा के जल से भीग गये और उन्होंने मुनि मंडल के साथ सन् 2012 का चातुर्मास मेड़ता में करने की स्वीकृति देकर हमें कृतार्थ कर दिया। मेड़ता

कई वर्षों से सन्तों के चातुर्मास की प्रतीक्षा में था। ज्ञान से भीगे भावों से स्थिर, समतारस में रमण करने वाले मुक्ति पथ के पथिक उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज साहब, मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी, तत्त्वजिज्ञासु मुनि श्री लोकचन्द्र जी, शान्त स्वभावी सेवाभावी श्री जितेन्द्र मुनि जी, भजनानन्दी श्री दर्शन मुनि जी के पावन चरण जब इस भूमि पर पड़े तो सभी लोग आनन्द से झूम उठे। श्रद्धा से सराबोर जन-जन चातुर्मास के प्रारम्भ में अपनी अन्तर्मन की अभ्यर्थना पूरी होते देखकर गुरुजनों के सान्निध्य में धर्म-साधना की भूमिका तैयार करने को आतुर हो गये। इस वर्ष का वर्षावास अधिक मास होने से पाँच महीने का था। मेड़ता वासियों के लिये उपाध्यायप्रवर का बहुप्रतीक्षित चातुर्मास किसी वरदान से कम नहीं था, अतः सबके चेहरे उल्लास से प्रफुल्लित थे। उनके लिए यह चातुर्मास एक तीर्थ था, जिसकी फल प्राप्ति के लिए वे अधीर थे।

मेड़ता का यह वर्षावास यहाँ के निवासियों के लिए जीवन रूपान्तरण की मानो एक प्रयोगशाला बन गया। क्षेत्र भले ही छोटा हो, पर भावनाएँ गहरी और उदात्त हैं। प्रतिदिन संतों कें प्रवचन में सभी वर्गों के व्यक्तियों से प्रवचन हॉल ठसाठस भरा रहता। पूर्ण शान्ति के साथ सभी लोग बड़ी लगन से जब प्रवचन सुनते तो एक समवसरण का दृश्य सा लगता। सबसे पहले होनहार लघु सन्तों का प्रवचन होता। उनके ज्ञान में भविष्य की आशाएँ स्पष्ट झलक रही थीं। उनके बाद श्री गौतममुनि जी का प्रवचन उनकी चिर परिचित मधुर एवं प्रभावी शैली में होता, जिसमें व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को उल्लसित, आनन्दपूरित करने के साथ ही मानवीय चेतना को ऊर्ध्वमुखी करने के आध्यात्मिक संदेश होते। मुनि श्री के प्रवचनों में हमारी ज्ञान संपदा, भावनात्मक संवेदना और जीवन व्यापी आत्मबोध के चिन्तन की धारा प्रवाहित होती है। ऐसे संत जागरण के दूत, संयम के रक्षक, मानवीय सम्बन्धों में मातृत्वभाव, वात्सल्य और परस्पर बन्धुता के पोषक होते हैं। अंत में उपाध्यायप्रवर उसी विषय को संक्षेप में बड़ी सूक्ष्मता और सहजता से उसमें बिखरी भावनाओं को अपने अनुभव की गहराई से उद्घाटित करते। उपाध्याय भगवन्त की प्रेरणा में ध्वनित होते भावों में जीवन स्पर्शिता का ऐसा प्रकाश मिलता जो हमें अन्तर्मुखी बनाता, ताकि हम भीतर से जागते रहें, हमारी संसार भावना कम हो, धर्म भावना प्रबल हो और अन्तश्चेतना जगे। ऐसे तत्वदर्शी, तपस्वी, निस्पृही, यश-कामना से रहित संतों का लक्ष्य जिन-शासन की प्रभावना के साथ ही साथ लोक मंगल भी होता है।

उपाध्यायप्रवर की वाणी से प्रेरणा ग्रहण कर कई व्यक्तियों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्रत ग्रहण किये। चातुर्मास में करीब 100 के ऊपर अठाइयाँ या उनके ऊपर की तपस्याएँ हुईं। 4 मासक्षपण हुए। तेला और 6 की तपस्या करीब 180 हुई। इनके

अतिरिक्त भी कई उपवास, आयंबिल, एकासने और द्रव्य संयम के तप की आराधनाएँ हुई। कई लोगों ने रात्रि-भोजन के त्याग किये। तपस्या के क्षेत्र में ज्ञानार्जन में भी लोग पीछे नहीं रहे। 76 व्यक्तियों ने प्रतिक्रमण सीखा। कइयों ने दशवैकालिक सूत्र, पुच्छिसुणं और थोकड़े सीख कर अपनी ज्ञान संपदा में वृद्धि की। रविवार के दिनों में बच्चों के धार्मिक शिविर में उनमें धर्म की जानकारी और संस्कारों का बीजारोपण का प्रशंसनीय कार्य हुआ। भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक हो, परमपूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. का 50 वाँ दीक्षा-दिवस हो, या अन्य कोई विशिष्ट पर्व हो, लोगों ने उसे विशेष उत्साह और त्याग-तप से मनाया। दया की नवरंगी, पचरंगी और धर्म चक्र की आराधना में विशाल उपस्थिति रही।

पर्युषण के दिनों में विशेष धर्म आराधना हुई। मध्याह्न में आगुन्तकों के साथ उनकी ज्ञान पिपासा को तृप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न आगमिक विषयों पर गौतममुनि जी की ज्ञान चर्चाएँ हुईं। तत्पश्चात् उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में प्रतिदिन आगम-वाचन का क्रम चलता। इस तरह से यह चातुर्मास उपासना (इष्ट के समीप जाना), आराधना (इष्ट के प्रति श्रद्धा से समर्पण) और साधना (इष्ट प्राप्ति के लिये त्याग, तप, सामायिक-स्वाध्याय आदि करना) की दृष्टि से ऐतिहासिक कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसने मेड़ता में समय-समय पर पधारे पूर्वाचार्यों के काल को जीवन्त कर दिया।

प्रवचन सभा के संचालक श्री हस्तीमल जी डोसी, मंत्री-वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अपनी चिरपरिचित शैली में प्रवचन के सार को रेखांकित करते हुए अपना बोधपूर्ण संदेश देते।

बाहर से पधारे दर्शनार्थी बन्धुओं के उमड़ते प्रवाह को मेड़ता वासियों ने पूर्ण सम्मान देकर उनके आतिथ्य सत्कार का लाभ लेने का प्रयत्न किया। इस चातुर्मास को सफल बनाने में मंत्री श्री हस्तीमल जी डोसी एवं सभी संघ-सदस्यों ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति प्रदान करने में किसी तरह की कसर नहीं रखी। -*गौतमराज सुराणा, चेन्नई*

महासती-मण्डलों के चातुर्मास में धर्माराधन

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में दया-संवर आदि की आराधना नियमित रूप से होती रही। सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. के समाधिमरण के दूसरे दिन 13 नवम्बर को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. ने महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. की सेवाभावना पर प्रकाश डाला। उन्होंने फरमाया कि होली पर्व के समय महासती श्री समता

जी का देवलोकगमन हुआ तथा दीपावली पर्व पर महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. का समाधिमरण हो गया, इस प्रकार इस वर्ष में संघ को दो महासतियों की क्षति हुई है। व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., श्री शांताकंवर जी म.सा. आदि ने भी महासती जी के जीवन की विशेषताओं को रेखांकित किया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के अवसर पर 19 नवम्बर को 101 दयाव्रत की आराधना हुई। 25 भाई-बहिनों ने वर्षभर में 51 संवर-पौषध करने का नियम लिया तथा 41 वर्षीतप प्रारम्भ हुए हैं। साध्वीप्रमुखा जी एवं सभी महासतियों ने तथा कतिपय श्रावकों ने आचार्यप्रवर के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। अष्टमी को 51 नींवी हुईं।

बांदनवाड़ा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में बांदनवाड़ा में धर्माराधना का सतत् क्रम चल रहा था, किन्तु 12 नवम्बर को महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. का संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। अखिल भारतीय संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं अनेक पदाधिकारी इस अवसर पर बांदनवाड़ा पहुँचे एवं संघ की मर्यादा के अनुसार महासती जी के पार्थिव देह का अंतिम संस्कार किया गया। 13 नवम्बर को श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई (समाचार पृथक् से दिए गए हैं।) यहाँ पर कार्तिक शुक्ला षष्ठी 19 नवम्बर 2012 को व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। 3 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया- 1. श्री रामविलास जी-कौशल्यादेवी जी छीपा, 2. श्री सोहनलाल जी कुमावत (सपत्नीक), 3. श्री टीकमचन्द जी-सुशीलादेवी जी ललवानी। यहाँ पर चातुर्मास में अनेक बालकों ने सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल एवं भक्तामर स्रोत सीखा है। संघ मंत्री श्री शांतिलाल जी लोढ़ा ने तेले की तपस्या की है। ग्यारह वर्षीय बालिका योगिता किशनानी ने प्रतिक्रमण, 25 बोल, भक्तामर, महावीराष्टक, आचार्य हस्ती चालीसा आदि सीख लिए हैं। अब दशवैकालिक सीख रही है।

उज्जैन- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से चातुर्मास अवधि में तेले की लड़ी सतत चलती रही, जिसमें 50 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। सत्रह, नौ, आठ आदि दिवस की तपस्याएँ भी अनेक हुई। पर्युषण अवधि में नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। प्रवचन के पश्चात् ध्यान शिविर भी आयोजित किया गया, जिसमें महासती मैत्रीप्रभा जी का मार्गदर्शन रहा। बालक-बालिकाओं में संस्कार हेतु 17 रविवार संस्कार शिविर आयोजित हुए। बालक-बालिकाओं ने डांडिया नहीं खेलने, रावण-दहन नहीं देखने, पटाखें नहीं फोड़ने तथा घर में

बड़ों को प्रतिदिन चरण स्पर्श करने आदि के संस्कार प्राप्त किए। 30 से अधिक बालक-बालिकाओं ने शिविर में भाग लिया। कुव्यसन छोड़ने, दुर्गुण छोड़ने एवं सद्गुणों को अपनाने हेतु भी संकल्प पत्र भरे गये। कुछ निम्नांकित नियमों का संकल्प जीवन भर के लिए किया गया-

1. प्रतिदिन बड़ों को प्रणाम कर जय जिनेन्द्र बोलना।
2. प्रतिदिन 21 नवकार मंत्र बोलना।
3. जुआ अर्थात् पैसा लगाकर, शर्त लगाकर खेल नहीं खेलना।
4. शराब एवं ड्रग्स नहीं पीना।
5. अन्तरजातीय विवाह नहीं करना।
6. बीड़ी-सिगरेट, जर्दा, गुटखा आदि नशीले पदार्थ नहीं खाना।
7. चोरी नहीं करना।
8. जूठन नहीं डालना।
9. अपने माता-पिता पर हाथ नहीं उठाना एवं उन्हें गाली नहीं देना।
10. ऐसी होटल में भोजन नहीं करना जहाँ शाकाहार एवं मांसाहार दोनों साथ में हों।

पूज्या महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से इस चातुर्मास में आठ दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया है, जिनमें से दो नाम पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं, शेष नाम इस प्रकार हैं- 1. श्री भैरूलाल जी-कमलाबाई जी कांकरिया-उज्जैन, 2. सागरमल जी-मनोरमा जी कोठारी-उज्जैन, 3. श्री इन्दरचन्द जी-सरोजबाई जी खिंवसरा-कजगांव, 4. श्री सुभाषचन्द्र जी-चन्दाबाई जी धारीवाल-कजगांव, 5. श्री शांतिलाल जी-सुगनबाई जी लोढ़ा-कजगांव, 6. श्री तिलोक चन्द जी-गीताबाई जी जैन-करौली।

रामपुरा बाजार,कोटा- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में आयम्बिल ओली एवं सामूहिक भिक्षु दयाव्रत में लगभग 108 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। द्वितीय पर्युषण महापर्व के दौरान एक श्राविका के 11 उपवास, 3 अट्ठाइयाँ, 1 पचोला, 20 तेले, सामूहिक नीवी का तपाराधन हुआ। शरद पूर्णिमा के धर्म जागरण में 84 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 4 अक्टूबर 2012 को आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के स्वर्ण दीक्षा जयन्ती वर्ष 2012 के उपलक्ष्य में भजन-भाषण प्रतियोगिता में 35 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इस प्रसंग पर विज्ञाननगर कोटा में चातुर्मासार्थ विराजित व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. भी पधारीं। सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.के समाधिमरण पर आयोजित गुणानुवाद सभा में महासतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती के अवसर पर 15

से 19 नवम्बर तक क्रमशः सामूहिक सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान तथा तप दिवस मनाए गए, जिनमें तेला, बेला, उपवास, एकासन, दयाव्रत एवं अनेक प्रत्याख्यान सम्पन्न हुए। 25 नवम्बर को प्रसिद्ध वक्ता जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा. के जन्म-दिवस, पूज्या महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. की पुण्य-तिथि पर सामायिक व्रत की पचरंगी का आयोजन किया गया। कार्तिक शुक्ला वीर लोंकाशाह जयंती एवं चौमासी पर्व पर तपाराधना सम्पन्न हुई।

धनोप- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती दिवस पर सातों महासतियों ने अपने आराध्य के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला एवं उनके शतायु होने की शुभकामनाएँ की। इस अवसर पर हंसा विद्या निकेतन के 250 बालकों ने सप्तकुव्यसन के त्याग किए। 51 तेले तप की आराधना हुई और उपवास, एकासन, 5-5 सामायिक हुई। चार शीलव्रत के खंद हुए- 1. श्री दीपचन्द जी रांका (सपत्नीक)-गुलाबपुरा, 2. श्री महावीरप्रसाद जी रांका (सपत्नीक)-आंगुचा, 3. श्री ज्ञानचन्द्र जी मारू (सपत्नीक)-धनोप, 4. श्री हीरालाल जी सुथार (सपत्नीक)-धनोप। स्वप्निका पुस्तिका का अच्छी संख्या में वितरण हुआ। दीक्षा-दिवस पर श्री महावीर प्रसाद जी पालड़ेचा ने गरीबों को 50 कम्बल वितरित किए।

फुलियाकलां (भीलवाड़ा)- सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में 14 श्रावक-श्राविकाओं ने आयम्बिल ओली तथा 178 आयम्बिल तपाराधन हुए। शरद पूर्णिमा के प्रसंग पर 25 श्राविकाओं ने सामायिक व्रत का मासक्षपण किया। रात्रि में भजन-गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कोयम्बतुर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में 7 अक्टूबर 2012 को 'सीक्रेट ऑफ ब्युटिफुल लाइफ' शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 200 अजैन स्थानीय युवा-युवतियों ने भाग लेकर जीव-अजीव, पुण्य-पाप आदि के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की तथा 10 स्थानीय युवाओं ने मांसाहार-त्याग का नियम ग्रहण किया। तपस्विनी बहन श्रीमती पानीबाई जुगराज जी मेहता-पांडवपुर ने साध्वीजी से 30 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। 29 अक्टूबर को शरदपूर्णिमा पर रात्रि में 150 श्रावक-श्राविकाओं ने 15 सामायिक की आराधना की। भगवान् महावीर निर्वाण दिवस पर सामूहिक तेले का आयोजन हुआ तथा बालक-बालिकाओं ने पटाखें नहीं फोड़ने का नियम ग्रहण किया। 13 नवम्बर को महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. के गुणानुवाद किए गए तथा उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50वें दीक्षा-दिवस पर धर्मचक्र का आयोजन कर तप-त्याग हुए एवं संगीत प्रतियोगिता

आयोजित की गई।

तिरूवन्नामल्लै- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. के सान्निध्य में आचार्यप्रवर की दीक्षा-अर्द्धशती के उपलक्ष्य में 15 तेले, 50 उपवास एवं 50 दयाव्रत की आराधना हुई। सामूहिक सामायिक, सामूहिक जाप के साथ स्वप्निका पुस्तिका से प्रत्याख्यान प्रारम्भ हुए। शरद पूर्णिमा एवं भगवान् महावीर निर्वाण दिवस के अवसर पर भी अनेक तप-त्याग हुए। एकान्तर के 4 एवं बियासना के 5 मासखमण हुए हैं। तेले की एवं आयम्बिल की लड़ी चातुर्मास पर्यन्त चलती रहीं।

हिण्डौनसिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में सेवाभावी पूज्या महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. के समाधिमरण के दूसरे दिन 13 नवम्बर को श्रद्धांजलि सभा में महासती श्री मुक्तिप्रभाजी ने उनके गुणानुवाद करते हुए कहा कि पूज्या महासती जी के जीवन में सदैव संतोष एवं प्रसन्नता रहती थी। मेरी दीक्षा के समय वे उपस्थित थे। मैंने उन्हें देखा तब से सेवा करते हुए देखा। पूज्या महासती श्री सुन्दर कंवर जी म.सा. की उन्होंने खूब सेवा की। श्रद्धांजलि के रूप में चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर 31 तेले सम्पन्न हुए। एकासन, उपवास, संवर, पौषध, सामायिक स्वाध्याय के साथ 51-51 संवर करने के संकल्प की होड़ सी लग गई। गुरु हीरा के व्यसन के संदेश को घर-घर तक पहुँचाया गया। इस चातुर्मास में लगभग 40 बालकों ने प्रतिक्रमण, सामायिक, 25 बोल कण्ठस्थ किए हैं। तपस्या का ठाट लगा रहा। चातुर्मास के अंत तक 6 प्रकार की लड़ी चलती रही। दीक्षा-दिवस से वर्षी तप भी प्रारम्भ हुआ है। दीक्षा-दिवस पर 175 स्वप्निका पुस्तकों का वितरण हुआ है। 31 तेले की तपस्या हुई है तथा पूरे पल्लीवाल क्षेत्र में 71 शीलव्रती बने हैं।

अलीगढ़-रामपुरा- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में चातुर्मास इस क्षेत्र में सौहार्द और समन्वय का एक उदाहरण रहा। यहाँ चातुर्मास में लगभग 211 तेले, 15 अठाई, 15 दिवसीय तथा 5 शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए हैं। 7 बालिकाओं ने एक-एक आगम कण्ठस्थ किया है। पाँच श्राविकाओं ने सिद्धि तप किया है तथा 40 बालक-बालिकाओं, युवा और प्रोढ़ों ने प्रतिक्रमण सीखा है। प्रतिदिन रात्रि में लगभग 40 संवर होते रहे। श्राविकाएँ रात्रि में भी स्थानक में महासती जी से ज्ञान-चर्चा का लाभ लेती रहती थीं। आचार्यप्रवर की दीक्षा जयन्ती 19 नवम्बर को एकासन दिवस के रूप में मनाया गया तथा आचार्यप्रवर के जीवन पर प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 20 नवम्बर को सामायिक-दिवस तथा 21 नवम्बर को दया-दिवस मनाया गया, जिसमें 105 दयाव्रत की आराधना हुई। दीपावली के अवसर पर भी 15 तेले सम्पन्न हुए थे।

विज्ञाननगर-कोटा- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में चातुर्मास उपलब्धिपूर्ण रहा। चातुर्मासकाल में निरन्तर उपवास, तेला, एकासन, आयंबिल एवं नींवी, संवर की आराधना होती रही। व्याख्यान के पश्चात् "आओ सीखें तत्वज्ञान" कक्षाओं में महासती श्री कृपाश्रीजी एवं विरक्ता बहन प्रभा जी ने सामायिक, पच्चीस बोल एवं थोकड़ों का ज्ञान कराया। चातुर्मास काल में कुल 17 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। जिनमें से 6 के नाम पहले प्रकाशित हो चुके हैं, शेष 11 नाम इस प्रकार हैं- 1. बजरंगलाल जी-नत्थीदेवी जी जैन-कोटा, 2. श्री पारसमल जी-फूलदेवी जी जैन-तालेड़ा, 3. श्री रमेशचन्द जी-राजीबाई जी जैन (अरनेठा वाले)-कोटा, 4. निरंजन जी-प्रेमलता जी वेद, मांगरोल-कोटा, 5. जीतू भाई-मीना बैन पतीरा-दादावाड़ी, कोटा, 6. श्री अभयकुमार जी-मनोरमाजी कूकड़ा-दादावाड़ी, कोटा, 7. वृद्धिचन्द जी-विमलाबाई जी जैन-तलवण्डी,कोटा, 8. श्री बाबूलाल जी-कैलाशीदेवी जी जैन-कोटा, 9. पारसमल जी-बादामदेवी लोढ़ा-कोटा, 10. श्री नेमीचन्द जी-रतनदेवी जी जैन-तलवण्डी,कोटा, 11. श्री रामस्वरूप जी-तारादेवी जी जैन-कोटा। यहाँ 35 भाई-बहिनों ने 12 व्रत अंगीकार किये हैं। दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में 12 से 19 नवम्बर तक एकासन की अठाई, 17 से 19 नवम्बर तक तेले की तपस्याएँ हुई। 19 नवम्बर को दीक्षा-दिवस के दिन लगभग 50 तेले, 55 एकासन की अठाई एवं कई लोगों ने रात्रि चौविहार त्याग तथा अनेकों ने वर्ष भर के शीलव्रत का नियम लिया। 19 नवम्बर को स्वर्ण जयन्ती दीक्षा-दिवस रामपुरा स्थानक में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के साथ मनाया गया।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस पर गुण महिमा का संगायन

कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 19 नवम्बर, 2012 का दिन एक पावन दिवस के रूप में प्रस्तुत हुआ। रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर एवं अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती के द्वारा अनुशासित, जिनशासन गौरव, आगम-मर्मज्ञ, आचारनिष्ठ **परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस पर देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में गुणानुवाद किए गए।** महावीर नगर, जयपुर के सामायिक-स्वाध्याय भवन में आयोजित गुणानुवाद सभा प्रातः 8.45 बजे प्रारम्भ हुई। प्रवचन का शुभारम्भ करते हुए नवदीक्षित श्रद्धेय श्री आशीष मुनि जी ने गुरु के अनन्त उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन्त के जीवन में सरलता कूट-कूट कर भरी हुई है, इसका अनुभव मैंने वैराग्यकाल से किया है। गुणकीर्तन करते हुए वयोवृद्ध संत **श्रद्धेय श्री मोहनमुनि जी** ने

गुरुदेव के सबके प्रति वात्सल्य भाव के विशेष गुण को उजागर किया। **महासती श्री वर्षा जी** और **सिन्धु जी म.सा.** ने वीर पट्टधरों की शृंखला में वर्तमान पट्टधर आचार्य भगवन्त के गुणों का बखान कर उनके चातुर्मासों की उपलब्धियों और प्रभावना को काव्य रूप में प्रस्तुत किया। **महासती श्री सुभद्रा जी** ने फरमाया कि जैसे उगता सूरज रोशनी देता है, चमकता है, चाँद-चाँदनी देता है, वैसे ही गुरुदेव ज्ञान की रोशनी अविरल देते रहें और आचार्यप्रवर के चारित्र की चांदनी चहुँ दिशि फैलती रहे। **महासती श्री अंजना जी** ने पूज्य श्री के संयममय जीवन की विशेषताओं को प्रकट करते हुए संघनायक के प्रति श्रद्धा समर्पित की। **महासती श्री देवांगना जी** ने शास्त्रीय प्रमाण से धर्माचार्य की णमोत्थुणं के माध्यम से स्तुति करते हुए गुरुदेव के दीर्घायु जीवन की कामना की। **महासती श्री मुदितप्रभा जी** ने फरमाया कि गुरुदेव का जीवन महान् है। गुरुदेव गोविन्द से बड़े हैं। आज कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिन है और गुरुदेव अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। **महासती श्री सुयशप्रभा जी** ने "स्वर्णिम वर्ष मनाएँ" की गीतिका व संयम-ग्रहण दिवस को कविता के माध्यम से प्रस्तुत कर गुरुदेव के लिए "मेरे राम तुम्हीं, घनश्याम तुम्हीं, मन मंदिर के भगवान तुम्हीं" भावों को प्रकट किया। **साधक आत्मा श्री यशवंतमुनि जी** ने आचार्यप्रवर के संयम-जीवन को श्रेष्ठ जीवन बताते हुए आचार्य श्री की सरलता, सहिष्णुता, सहजता आदि सद्गुणों की सुवास से रत्नसंघ की बगिया को महकाने की बात एवं पंचाचार के पालन की महत्ता का बखान करते हुए आचार्य भगवन्त के तप की अनुमोदना की।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभा जी म.सा. ने अपनी भावाभिव्यक्ति में गीतिका प्रस्तुत की-

दीक्षा की गोल्डन जुबली, खिल रही मन की कली-कली,
गुरु चरणों में आज मनाएं, दीक्षा अर्द्ध शती।
अभिनन्दन बेला आई, जन-जन का मन हरषाई,
सब मिलकर हम आज मनाएँ, दीक्षा अर्द्ध शती।।

इसके अनन्तर आचार्य भगवन्त के जीवन के विशेष गुणों Accept, Adjustment, Sacrifice का बखान कर उनकी साधना के प्रभाव को घटित घटनाओं के माध्यम से व्यक्त किया। आस्था के आस्थान श्रद्धा के स्थान आचार्य भगवन्त से सम्बद्ध कुछ घटना प्रसंगों का उल्लेख करते हुए महासती जी ने कहा- "ब्यावर के विमलचंद जी सुराणा के पुत्र मोनू ने धुलिया चातुर्मास में शारीरिक बाधा में, ताहराबाद में प्रकाशचन्द जी कांकरिया की सुपुत्री छाया ने बेसुध-बुध हालत में तथा चेन्नई में प्रकाशचन्द जी ओस्तवाल की नवविवाहित पुत्रवधू ने हाथ के निरंतर कम्पन में आचार्य भगवन्त से मांगलिक श्रवण कर

सदा-सदा के लिये रोगों से निजात पाई है, ये सब आँखों देखे नजारे हैं। आचार्य भगवन्त के मुखमण्डल पर प्रसन्नता, आत्मीयता, निर्विकारता परिलक्षित होती है।

आचार्य भगवन्त की हर बात में दम है,
ये मेरे लिये नहीं ईश्वर से कम हैं।
हर दिल अजीज संत हो, तुम बाकमाल हो।
सबकी मिसाल है, मगर तुम बेमिसाल हो।।

आचार्य भगवन्त की छत्रछाया में चतुर्विध संघ फूलता-फलता रहे और आचार्य भगवन्त के सान्निध्य में रत्नसंघ की बगिया महकती रहे।''

प्रज्ञाशील श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. ने प्रज्ञा के आधार पर श्रद्धा के भाव पुष्प अर्पित करते हुए फरमाया- आचार्य भगवन्त अन्दर में आत्मा और बाहर में आत्मीयता के आधार पर जीते हैं। आत्मीयता से व्यक्ति-व्यक्ति को धर्म से जोड़कर स्वयं निर्लिप्त रहते हैं। व्यथा से नहीं व्यर्थता से घबराते हैं। आचार्य श्री के सूत्र हैं- *मन को खराब नहीं खरा बनाओ, आवाज ऊँची नहीं, आचरण ऊँचा बनाओ व अच्छा बनाओ, सही का सहारा लो, गलत व गलती से किनारा करो।* मुनिश्री ने उपाध्यायप्रवर से लेकर सब संत-सतियों के संघाड़ा प्रमुखों के नाम से प्रारम्भ कर गुरु के गुणों का योग प्रकट किया। (आपका वक्तव्य पृथक् से संकलित कर इसी अंक में प्रकाशित किया गया है)। **संवृत्तात्मा श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी** ने गुरुदेव के जीवन के अनेकानेक गुणों के वर्णन के साथ फरमाया- ''पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों में प्रखरता, प्रभावकता, परिपूर्णता एवं प्राञ्जलता है। गुरु बने बिना कोई मोक्ष जा सकते हैं, परन्तु गुरु बनाये बिना कोई मोक्ष नहीं जा सकते। आचार्य भगवन्त के पास आगमबल, आस्थाबल, आचरणबल और आत्मबल विशेष सबल हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त के चारित्र व चेहरे को देखकर पराए भी अपने बन जाते हैं। आज का दिन अभिव्यक्ति का नहीं अनुभूति का दिन है।''

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी ने आचार्यदेव के गुणों को गीतिका के माध्यम से उजागर करते हुए फरमाया- गुरु हस्ती ने स्वयं के 53 वें वर्ष में शिष्य हीरा को संयम प्रदान किया तथा 27 वर्ष तक 27 गुणों की आराधना करके पारखी गुरु ने जब परख लिया तो 53 वें वर्ष में गुरु का अधिकार सौंपा । अब आप दीक्षा का पाठ पढ़ाओ। आचार्य भगवन्त की उदारता एवं समन्वय का रूप जलगांव चातुर्मास में देखने को मिला जब पर्युषण पर्व में श्रावकों के प्रतिक्रमण के लिए आपश्री ने कमरा खाली कर दिया और संतों सहित ऊपर छत पर टंकी के छज्जे के नीचे प्रतिक्रमण किया। पारस्परिक प्रेम सौहार्द के गुणों को विकसित करने के भाव आचार्य भगवन्त के हमेशा बने रहते हैं। प्रत्युत्पन्नमति सम्पदा के

धनी ने एक वाक्य में बालोतरा पाठशाला सम्बन्धी विवाद को समाप्त कर दिया। समत्व योग के साधक आचार्य भगवन्त के गुणों को हम जीवन में उतारें।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी ने आचार्य भगवन्त के प्रति उल्लसित हृदय से भाव प्रकट करते हुए फरमाया- ''मैं 38 साल का साधक हूँ, पर गुरु चरणों में सदा से बालक था, और रहूँगा। मैं वक्ता नहीं जो शब्दातीत व्यक्तित्व को शब्दों से व्यक्त कर सकूँ, मैं कवि नहीं जो कल्पपुरुष को कविता की कड़ियों में रख सकूँ, मैं चिन्तक भी नहीं, जो चिंतन की चाँदनी में चारित्र के चितेरे की चर्चा कर सकूँ, मैं श्रेष्ठ साधक भी नहीं जो कषायों को कृश कर संयमशील समता शिरोमणि के गुणों का गान कर सकूँ, मैं अनुशासक भी नहीं जो आगम की आराधना कर आचरण के आचार्य की अर्चा कर सकूँ, पर मुझे गर्व है, मैं ऐसे गुरु का शिष्य हूँ जिन्होंने कर्म ऋण से मुक्त होने के लिये संयम धन दिया, विरक्ति का वरदान, सिद्धालय में पहुँचने का सोपान दिया। जिन्होंने शिष्यत्व का भान कराया, संवारने का वादा किया, ऐसे गुरु का ऋणी हूँ, अनन्त उपकारी के गुणगान करने का अधिकारी हूँ, समर्थ हूँ। आज का दिन ऋण से उऋण होने का दिन है। संघ-सेवा में संघ का संवर्धन करने में चतुर्विध संघ का सहयोग हो। आज गुरुचरणों में साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी, विदुषी सुशीला जी म.सा., सोहनकंवर जी म.सा., ज्ञानलता जी, चारित्रलता जी, रुचिता जी, विमलेश जी आदि सती मण्डल के शुभ भावों के मंगल संदेश आए हैं, पर भगवन्त ने पन्ना भी उठाकर नहीं देखा है, कैसी निस्पृहता है! उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में विराजित मेरे साथी मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी ने प्रवचन में भजनों की कड़ियों के उच्चारण की भावना प्रेषित की है-

तेरे नाम की प्रीत गुरुवर हो गई मुझको,
फीकी लगती है दुनियाँ सारी देखके तुझको।
पथ हो तुम पाथेय भी हो तीर्थ हो मेरे,
मेरे सांसों में समाए ध्याऊँ मैं तुझको।।

दीक्षा अर्द्धशती पर **महासती श्री तितिक्षा जी ने 37 की तपस्या कर आचार्य भगवन्त का अभिवादन किया है** तो मनीष मुनि जी म.सा. ने 9 तथा महासती जी पूनम जी ने 8 की तपस्याकर भावों का अर्घ्य चढ़ाया है। योगेश मुनि जी के गुणरत्न संवत्सर तप चल रहा है तो महासती अंजना जी नीवि आयंबिल से मासक्षमण करके, सुयशप्रभा जी सिद्धि तप में आगे बढ़कर अर्द्धशती में गुरु भक्ति से अर्घ्य चढ़ा रहे हैं। हिण्डौन में महासती जी मुक्तिप्रभा जी के यहाँ से समाचार है कि 67 आजीवन शीलव्रती बने हैं। जयपुर के श्रेष्ठी जौहरी हैं यहाँ भी प्रातःकाल गुरुचरणों में 7 आजीवन शीलव्रती बने हैं। आज याचना का

दिन है, पर गुरु से क्या माँगू? जैसे शिवजी को 2 अक्षर राम के चाहिये, वैसे ही भगवन्त मुझे कुछ नहीं चाहिये। न पद, न प्रतिष्ठा, न मान, न सम्मान, जब तक मैं निर्वाण को प्राप्त न हो जाऊँ, तब तक आराधक बनकर आपके चरण कमलों में रहूँ-

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं पादद्वयलीनं।
तिष्ठतु तावत् जिनेन्द्रः, यावत् निर्वाणसम्प्राप्तिः।।

हमारे आराध्य देव स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें, निरामय रहें। गुरु हस्ती के शासन को दैदीप्यमान कर आगे बढ़ाते रहें।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने पंच परमेष्ठी को वंदन कर अनमोल देशना में फरमाया- "अतीत की संजोयी करणी से वर्तमान स्वच्छ निर्मल एवं सुरम्य बनता है। आप वर्तमान को देख रहे हैं, मैं अतीत की तह मैं उसे खोज रहा था। यह देख रहा था कि इस जीवन को आगे बढ़ाने मैं कौन-कौन उपकारी रहे। बिना बीज के वृक्ष संभव नहीं। पूर्व जन्म के पुण्य संचय से मानव जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल व सुसंस्कारी कुल घर में जन्म लेने का अवसर मिला तो दूसरा उपकारी मान रहा हूँ माता-पिता को, जिन्होंने शरीर-निर्माण के साथ धर्म स्थान में ले जाकर संस्कारी बीजों का वपन किया। संतों की सेवा के संस्कार माता-पिता से मिले। माता ने किसी भी स्थिति में किसी की मौत हो जाने पर आर्त करना जाना ही नहीं। बचपन में 2009 के गुरुदेव के नागौर चातुर्मास में प्रायः हर रविवार को दयाव्रत करने के संस्कार भी माता-पिता ने दिये जो पल्लवित पुष्पित होकर संयम का रूप धारण कर गए। मैं अपने आपको भाग्यशाली कहूँ कि बिना खोजे ही ऐसे गुरु मिल गए, जिन्होंने शासन में बेजोड़ ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना की। मैंने 14 वर्ष की उम्र में आचार्य भगवन्त को एक पैर पर खड़े होकर जप करते देखा। आचार्य भगवन्त की भाषा में कहूँ- आँख उजाले में देखती है अंधेरे में नहीं। बीज में फल भी है फूल भी, किन्तु मिट्टी, पानी और माली का सहारा चाहिये। जीव में भी अनन्त ज्ञान दर्शन हैं, किन्तु फलने फूलने, आगे बढ़ने के लिए बस गुरु का सहारा चाहिये। मैं छोटे लक्ष्मीचंद जी म.सा. का चेला हूँ- महेन्द्र मुनि जी, प्रमोद मुनि जी, गौतम मुनि जी गुरु भगवन्त के चेले हैं, परन्तु ज्यों-ज्यों ज्ञान बढ़ता है फलता है तो नम्रता बढ़ती है। इनकी श्रद्धा सेवा अलग है। *जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं तो छोटे बनिये। जितने छोटे होंगे उतने ही बड़े बनेंगे।* अभी जो बातें कही जा रही हैं, मुझमें आचार्य भगवन्त के ज्ञान का एक अंश भी नहीं आया, मैं तो उन महापुरुषों की लकीर पर चल रहा हूँ। जो जिम्मेदारी मुझे दी है, सेवक बन उसका वहन कर रहा हूँ। *प्रत्येक व्यक्ति सामायिक, स्वाध्याय से अपना जीवन महान बनाये।* संत-जीवन याचना का जीवन है- सूई डोरी, आहार-पानी सबके लिये याचना

करनी पड़ती है। मैं याचना कर रहा हूँ। आचार्य भगवन्त ने जो उजली चादर दी है, उसको केसरिया कसूमल से रंग कर शृंगारित भले न कर सको, किन्तु इस पर काला धब्बा मत लगाना। इस चादर को दया से, शील, क्षमा, परोपकार से भले चित्रित न कर सको, परन्तु इस स्वच्छ चदरिया पर कालिख न लगाना। कोई यह नहीं कहे कि ये आचार्य हस्ती के चेले हैं, कुल खानदान को कोई अंगुली निर्देश करे, ऐसा कोई काम मत करना। आज यह प्रतिज्ञा लें। विद्वान् नहीं, भोले व्रती श्रावक भी तीर्थंकर गोत्र बांधने वाले हुए हैं। मैंने जितनी बातें कही, सब उधार ली हुई हैं। कुछ बातें माता ने दी, कुछ संयम से मिली हुई हैं। दी हुई चीजों को मैं अपनी नहीं समझता। मैं तो भिखमंगा हूँ, ली हुई चीज से मैं अपने आपको महिमाशाली नहीं समझूँ। किराए के मकान को मैं अपना नहीं समझूँ। जब तक मकान में हूँ तब तक उसको संभालने की जिम्मेदारी मेरी है। दिये हुये गुणों से मैं नहीं, आप भी महान बन सकते हैं।

आचार्य भगवन्त के शब्द-शब्द में लघुता टपक रही थी। आचार्यप्रवर ने फरमाया- व्रत नियम-संयम को आप यदि जीवन में उतारेंगे तो आपके जीवन में भी गुणों की वृद्धि होगी, संघ भी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर शासन को चमकाने वाला बन सकेगा।

इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के नव मनोनीत अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने भी अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट किए तथा आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से प्रतिमाह दो आयम्बिल करने एवं वर्ष में 60 दिन संघ-सेवा में लगाने का संकल्प ग्रहण किया। उन्होंने यह भी कहा कि आचार्यप्रवर की इच्छा ही मेरे लिए आदेशवत् होगी।

सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. का 12 नवम्बर, 2012 को महाप्रयाण

मरणंपि सपुण्णाणं जहामेयमणुस्सयं।
विप्पसव्वमाघायं संजयाणं वसीमओ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र

परम्परा से सुना है कि संयत, इन्द्रियों को वश में करने वाले पुण्यशालियों का मरण (एवं जीवन भी) अति प्रसन्न एवं आघात रहित होता है। परम्परा से सुनी इस आगमवाणी को जीवन्त रूप देने वाली वयोवृद्धा अनुभवी सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. का 62 वर्ष की दीर्घ-संयम-पालना के साथ बांदनवाडा ग्राम में कार्तिक बदी तेरस दिनांक 12 नवम्बर 2012 को महाप्रयाण हो गया। यथा नाम तथा गुणवाली महासतीजी ने अपने

साधना काल में जिनशासन की महती प्रभावना की। पूरे अजमेर चौखले एवं मेवाड़ में आपकी सरलता एवं वचनसिद्धि की धाक थी, जिसकी वजह से जहाँ पर भी आप जाती वहाँ तपस्या की अद्भुत लहर रहती। श्राविका-श्रावक समाज की असीम श्रद्धा उन पर थी। उनकी दीक्षा पर्याय साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के बाद रत्नसंघ में सबसे अधिक थी।

महाप्रयाण के दो दिन पूर्व उन्होंने सतियों से कहा कि मुझे संथारा करना है, खाली मत भेजना। एक दिन पूर्व उनकी पीठ में दर्द हुआ। रात्रि को शरीर में समाधि कम थी, पर फिर भी डॉक्टर को दिखाने के लिए स्पष्ट मना कर दिया। सुबह खुद ही उठी, सतियों से पूरी चेतना में सागारी संथारा लिया। सतियों ने कहा कान मुड़ने लगे हैं, तो यही जवाब था चिन्ता मत करो सब ठीक चल रहा है। ध्यानस्थ परीषह सहन करते हुए वे समाधि में लीन थीं एवं दो-तीन मिनट बाद ही एकाएक प्राण प्रखेरू उड़ गए। 12 नवम्बर को अंतिम संस्कार में गुलाबपुरा, विजयनगर, मसूदा, ब्यावर, जोधपुर, अजमेर, किशनगढ़, धनोप, नसीराबाद, बरल, मेड़ता सिटी, गोटन, गोविन्दगढ़, भिनाय आदि ग्रामों से श्रद्धालु सम्मिलित हुए।

जयपुर में आचार्य प्रवर की सन्निधि में श्रद्धांजलि सभा

उस महान् आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु प्रवचन प्रभाकर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के नेश्राय में सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में श्रद्धाञ्जलि सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर श्री यशवन्त मुनिजी म.सा. ने फरमाया- "जन्म के साथ मरण जुड़ा हुआ है, पर किसी-किसी का जाना गाने योग्य बन जाता है।" तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. ने गुणानुवाद सभा में गुणगान करते हुए फरमाया- "जन्म लेने वाले का मरण सुनिश्चित है, पर मरने वाले का जन्म सुनिश्चित नहीं। बिना व्याख्यान के जनमानस में विशिष्ट छवि बनाने वाली महासती श्री संतोषकंवर जी व्यक्तिशः श्रावक-श्राविकाओं को संभालकर प्रेरणा देकर संघ से जोड़ने वाली महासतीजी थीं, जो कर्मों से हल्का होने हेतु संथारे की भावना को पूर्ण कर गई।

तपस्वी सेवाभावी महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने भावाञ्जलि के भाव प्रकट करते हुए फरमाया कि सृष्टि का सनातन सत्य है कि मृत्यु अवश्यंभावी है। उसके लिए न क्षेत्र, न काल, न भाव निश्चित है। आज संघ में अनुभवी वयोवृद्धा सेवाभावी महासती की अपूरणीय क्षति हुई है। शरीर-उपधि एवं विचारों से हल्की, सीमित क्षेत्रों में विचरण करने वाली महासती जी श्री संतोषकंवर जी सरलता, श्रद्धा, स्वावलम्बी जीवन, सेवा-समर्पण के गुणों से जन-जन में छाई हुई थी, जिनके लिए आचार्य भगवन्त को कभी चातुर्मास हेतु स्थल की गवेषणा नहीं करनी पड़ी, क्योंकि उनके हृदय में जन-जन के प्रति

स्नेह आत्मीयता का झरना बहता था। आचार्य भगवन्त के प्रति गुरु-भक्ति के जो उनके गुण थे, वे हममें भी जगें।

श्री सिन्धु जी म.सा. ने फरमाया- "श्री संतोषकंवर जी म.सा. एवं गुरुणी जी शांतिकंवर जी म.सा. का आत्मीय संबंध इतना गहरा था कि शांतिकंवर जी म.सा. की शिष्याओं को कभी जोधपुर चातुर्मास में महसूस ही नहीं हुआ कि हम गुरुणी जी से दूर हैं।"

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. ने फरमाया- "मौत न रात देखती है न प्रभात, न होली देखती है न दिवाली" श्री संतोषकंवर जी म.सा. की जिंदगी जो परसो तक कविता थी वह आज गुणों की कहानी हो गई है। वे मरण के पीछे गुणों के कारण अपना स्मरण छोड़ गए हैं।

प्रवचन प्रभाकर, आगम रत्नाकर **आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** ने अनमोल देशना के माध्यम से श्रद्धाञ्जलि-गुणानुवाद सभा में फरमाया- "अनन्तकाल से इस जीव का संसार में आना-जाना चल रहा है। अनन्तजीवों में न आने वाले गाए जाते हैं, न जाने वाले गाए जाते हैं, किन्तु निर्वाण की ओर कदम बढ़ाने वालों के गीत गाए जाते हैं।" महासतीजी की जीवन झाँकी की प्रस्तुति करते हुए आचार्य भगवन्त ने फरमाया- "पिताश्री धनराज जी रांका, माता श्रीमती इन्द्रादेवी की कुक्षि से ग्राम मसूदा में जन्म लेने वाली महासती जी संतोषकंवर जी को स्वयं की जन्मतिथि संवत् की सही जानकारी नहीं थी। ब्यावर सं.2015 में विराजित गुरुणी धनकंवर जी बिचला, बादामकंवर जी, अमरकंवर जी छोटा आदि ठाणा 4 के दर्शन कर उनके गुरुणी जी श्री धनकंवर जी म.सा. को अपने वैराग्य काल में मैंने पूछा- आपको वैराग्य कैसे आया? धनकंवर जी म.सा. ने कहा- "सहजे चूड़ो फूट्यो हल्का हुआ हाथ"। वैसे ही संतोषकंवर जी म.सा. ने पति श्री मांगीलाल जी सोनी (दांतड़ा वाले) का वियोग हो जाने पर लगभग 20 वर्ष की उम्र में संवत् 2006 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को अजमेर में दीक्षा ली। संवत् 2015 माघ शुक्ल 6 को गुरुणी धनकंवर जी म.सा. का तथा अमरकंवर जी म.सा. छोटा का संवत् 2015 फाल्गुन शुक्ला 6 को देहावसान हो जाने पर गुरुदेव ने संवत् 2015 के पश्चात् उन्हें महासती जी श्री सुन्दरकंवर जी म.सा. की सेवा में रखा। महासतीजी श्री संतोषकंवर जी म.सा. रखे नहीं गए, रह गये, ऐसे एकमेक हो गए अपने विनय-प्रेम-आत्मीयता-अहोभाव-समर्पण से दूध में मिश्री की तरह घुलमिल गए। औरतों में प्रायः आया-जाया का भेद होता है, परन्तु यह भेद न रखनेवालों में न रहने वालों में कभी नजर आया। संवत् 2053 के अजमेर चातुर्मास में महासती श्री संतोषकंवर जी, मनोहरकंवर जी के समर्पण, सेवा एवं सहयोग से 350 बारहव्रती बने। अनुशासन में भी उन्होंने हर बात मानने की कोशिश की। आने वाले आते हैं और जाने वाले कर्त्तव्य, समर्पण

और सरलता के कारण गाए जाते हैं। संथारे का सम्बन्ध विद्वत्ता, वय और दीक्षा पर्याय से नहीं है, किन्तु संथारे का सम्बन्ध सरलता से है। महासतीजी को पूर्ण संथारे का अवसर नहीं मिल पाया, पर सागारी संथारे से जाने वाली महासती जी निर्भर नहीं निर्भय बनकर गए हैं।

महासती जी के सेवा और समर्पण को हम अपने जीवन में उतारें। धर्म-संघ में धर्म का राग बढ़ने के बजाय व्यक्ति राग और क्षेत्र-राग न बढ़े। राग के आगे हित और सिद्धान्त गौण हो जाता है। स्वाध्याय के अभाव में व्यक्ति अपने अधिकार को काम में लेकर धर्म-संघ की मर्यादा को भूल बैठता है, जिससे समाज में नई-नई समस्याएँ एवं विकृतियाँ खड़ी हो जाती हैं। राग में व्यक्ति को सही दिखना बंद हो जाता है। भगवन्त ने फरमाया था-"अब तक यह संघ, श्रद्धा के बल पर चला, पर तुम व्यक्ति-राग और क्षेत्र-राग में मत फँस जाना।" अंत में आचार्यप्रवर ने फरमाया- "बड़ों के प्रति समर्पण एवं छोटों के प्रति आत्मीयता की शिक्षा देकर महासती जी संसार से गए हैं। हम भी बिना भेद-भाव के सेवा और समर्पण के गुण जीवन में धारण करें।"

सेवारत व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा., कौशल्या जी म.सा., पुनीतप्रभा जी म.सा. ने समाधि भावों में सहकार प्रदान कर दायित्व का निर्वहन किया है, यह प्रमोदजन्य है। साथ में धैर्य, सहिष्णुता के साथ आत्मभावों में स्थिर रहकर, संघाड़े के दायित्व का गरिमामय निर्वहन करते हुए गुरु आज्ञा आराधना से निर्मल संयम का पालन कर सुन्दर की सुन्दर बगिया की सौरभ को फैलाते रहें।

"हो जहाँ वह आत्मा, शीघ्र बने परमात्मा।
है प्रभु से प्रार्थना अन्तर्मन की भावना।।"

अंत में चार लोगस्स का ध्यानकर उस महान् आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

सेवाभावी, सरलमना, सरलस्वभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. के संयमी जीवन में 63 वर्षावास काल में जो सौरभ की महक से विविध स्थल सुरभित हुए, उनका उल्लेख करना भी प्रासंगिक है। सुरभित स्थल इस प्रकार हैं-1. निमाज (वि.सं.2007), 2. पिपलिया (2008), 3. बर (2009), 4. मसूदा (2010), 5. जोधपुर (2011), 6. विजयनगर (2012), 7. ब्यावर (2013), 8. अजमेर (2014), 9. ब्यावर (2015), 10. किशनगढ़ (2016), 11. किशनगढ़ (2017), 12. किशनगढ़ (2018), 13. अजमेर (2019), 14. अजमेर (2020), 15. अजमेर (2021), 16. अजमेर (2022), 17. अहमदाबाद (2023), 18. ब्यावर (2024), 19. पाली (2025), 20. जोधपुर (2026), 21. भोपालगढ़ (2027), 22. मसूदा (2028), 23.

थांवला (2029), 24. नसीराबाद (2030), 25. भोपालगढ़ (2031), 26. सरदारपुरा-जोधपुर (2032), 27. भोपालगढ़ (2033), 28. भोपालगढ़ (2034), 29. जोधपुर (2035), 30. जोधपुर (2036), 31. जोधपुर (2037), 32. जोधपुर (2038), 33. जोधपुर (2039), 34. जोधपुर (2040), 35. जोधपुर (2041), 36. जोधपुर (2042), 37. जोधपुर (2043), 38. अजमेर (2044), 39. मदनगंज (2045), 40. ब्यावर (2046), 41. थांवला (2047), 42. नसीराबाद (2048), 43. बडू-नागौर (2049), 44. जावला (2050), 45. गोविन्दगढ़ (2051), 46. पीह-नागौर (2052), 47. अजमेर (2053), 48. हरमाड़ा (2054), 49. मदनगंज (2055), 50. अजमेर (2056), 51. मेड़ता (2057), 52. गोटन (2058), 53. धनारी (2059), 54. सरस्वती नगर-जोधपुर (2060), 55. मसूदा (2061), 56. गुलाबपुरा (2062), 57. जावला (2063), 58. मदारगेट-अजमेर (2064), 59. वैशाली नगर-अजमेर (2065), 60. भखरी (2066), 61. गुलाबपुरा (2067), 62. मसूदा (2068), 63. बांदनवाड़ा चौराया-अजमेर (2069)। -विमलचन्द डागा-मंत्री

बांदनवाड़ा में श्रद्धांजलि सभा

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. के 12 नवम्बर 2012 को संथारे सहित समाधिमरण के पश्चात् 13 नवम्बर को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें बांदनवाड़ा श्री संघ के समस्त श्रावक-श्राविकाओं के साथ जैनेतर भाई-बहिनों ने भाग लिया। सर्वप्रथम व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा., महासती श्री कौशल्या जी म.सा., महासती श्री पुनीतप्रभा जी म.सा. ने अपनी सेवाभावी गुरुणी के दीर्घकालीन संयमी जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वीवृन्द ने कहा कि गुरुणी मैया के सान्निध्य में रहकर हमने बहुत कुछ सीखा, उनकी छत्र-छायाँ हमारे संयमी-जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक बनी। उनमें सरलता, संतोष, सेवा, सजगता, संयम के प्रति जैसे अनेक गुण थे। उनके अनेक गुणों में से कतिपय गुण भी हमारे जीवन में उतरेंगे तो उनको हमारी सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति होगी। बांदनवाड़ा श्री संघ के अध्यक्ष श्री हेमराज जी हींगड़ तथा श्री उम्मेदराज जी पोखरणा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए महासती जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। अंत में लोगस्स के ध्यान के साथ उपस्थित सभी संघ सदस्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

उज्जैन में रेशमबाई चौरड़िया की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

जिनशासन गौरव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से उनकी

आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री विदुषी महासती **श्री तेजकुंवर जी म.सा,** महासती **श्री सुमनलता जी म.सा.** आदि ठाणा 9 की नेश्राय में और मध्यप्रदेश शासन के केबिनेट मंत्री, माननीय **श्री पारस जी जैन** के मुख्य आतिथ्य में इन्दौर निवासी **श्रीमती रेशम बहिन चौरड़िया की भागवती दीक्षा,** सुभाष नगर के स्थानक प्रांगण में ज्ञानपंचमी रविवार, दिनांक 18 नवम्बर, 2012 को उत्साह, उमंग और हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। दीक्षा-प्रसंग पर विभिन्न धार्मिक संघों के प्रमुख पदाधिकारी और सदस्यगण उपस्थित थे। सर्वप्रथम प्रातःकाल दीक्षार्थी बहन का विभिन्न संघों द्वारा बहुमान व अभिनन्दन किया।

गुरुवर्या श्री तेजकुंवर जी म.सा. ने उज्जैन की नमक मण्डी में विराजित आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका महासती जी श्री रोशनकुंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 की नेश्राय में यहाँ से सतियाजी म.सा. को दीक्षा में पधारने हेतु विनति के लिये भेजा। दीक्षा महोत्सव में नमक मण्डी से श्री रोशनकुंवर जी म.सा. की सान्निध्यवर्ती साध्वियाँ श्री प्रेसता जी एवं साध्वी श्री प्रणवश्री जी दीक्षा-स्थल पर पधारीं।

महामहिम आचार्य भगवंत, रत्नवंश के अष्टम पट्टधर जिनशासन गौरव पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में गुणानुवाद सभा में गुरु गुणगान किये गये। साथ ही सामूहिक एकासन और उपवास भी सम्पन्न हुए।

दीक्षा-प्रसंग पर संरक्षक ट्रस्टी श्री पारसमल जी चोरड़िया, रमेशचन्द जी सुराना, महेन्द्र जी सेठिया, प्रवीण जी बम, शांतिलाल जी लोढ़ा आदि ने विचार व्यक्त किये। दीक्षा के पूर्व दीक्षार्थी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया, जिसका वाचन प्रकाशचन्द्र जी मारू ने किया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष चेन्नई निवासी श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल एवं विभिन्न शहरों से अतिथिगण तथा समाजजन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट श्री अमृतलाल जी जैन ने की और कार्यक्रम का संचालन संरक्षक ट्रस्टी श्री प्रेमचन्द जी बापना ने किया।

परिचय- दीक्षार्थी बहिन श्रीमती रेशमबाई चोरड़िया रत्नवंश में पूर्व दीक्षित छोटे लक्ष्मीचन्द्र जी म.सा. की सांसारिक भतीजी हैं। विगत 33 वर्षों से दीक्षा अंगीकार करने की उत्कृष्ट भावना थी, जो 76 वर्ष की वय में फलवती हुई।

आपका जन्म जावरा में श्रीमती केशरबाई चौहान की कुक्षि से पिता श्री बाघमल जी चौहान महागढ़ निवासी के यहाँ हुआ। आपके पति श्री मदनलाल जी चौरड़िया का देहावसान अल्पवय में ही हो गया था। आप दो सुपुत्रों श्री प्रकाश भाई एवं श्री कुन्दन भाई तथा तीन सुपत्रियों श्रीमती कुसुमबाई शांतिलाल जी छजलानी-महिदपुर, श्रीमती चन्दनबाला नरेन्द्रसिंह जी उदयपुर, श्रीमती लीला शांतिलाल जी सिंघवी-कोटा के समृद्ध

परिवार को छोड़कर प्रव्रज्या पद पर अग्रसर हुई हैं। आपका जीवन तप-त्यागपूर्ण रहा। 6 वर्षीतप, बेला, तेला, अठाई, नौ, ग्यारह आदि अनेक तपस्याओं का आराधन करने के साथ आपने दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, वीरत्थुई, थोकड़े, 25 बोल, नवतत्त्व, 33 बोल, समिति-गुप्ति आदि कण्ठस्थ किए हैं। गुरुवर्या श्री तेजकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में वे विगत सात माह से ज्ञानार्जन कर रही थीं।

बड़ी दीक्षा- 25 नवम्बर 2012 को आपको अपराह्न 1.30 बजे छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ किया गया। पूज्या महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. ने अपने मुखारविन्द से संयम के महत्त्व का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर का शासन संत-सतियों तथा श्रावक-श्राविकाओं से ही चलेगा। छोटे-छोटे नियमों का पालन करने से ही कोई महाव्रत अंगीकार करने की पात्रता प्राप्त कर लेता है। दीक्षा लेने से 33 वर्ष पूर्व रेशमबाई चोरडिया ने शक्कर के सेवन का त्याग कर दिया था एवं तब से वैराग्य की भावना उत्कृष्टता की ओर बढ़ती गई। बड़ी दीक्षा के अवसर पर नवदीक्षिता साध्वी का नाम **सुदर्शना जी** रखा गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल भी उपस्थित हुए। संघनिष्ठ श्रावक श्री पारसमल जी चोरडिया की सेवाएँ एवं समस्त संघ की सेवाएँ सराहनीय रहीं।

जयपुर में रत्नसंघ का बृहद् अधिवेशन नई ऊर्जा के साथ सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा रत्नसंघीय परिवारों का बृहद् अधिवेशन 17-18 नवमबर, 2012 को गुलाबीनगरी-जयपुर के सांगानेर स्थित एस.एस. जैन सुबोध केम्पस में आयोजित किया गया। भारत वर्ष के विभिन्न कोणों से हजारों भाई-बहिन बृहद् अधिवेशन में सम्मिलित हुए। अधिवेशन में चार सत्र रखे गए- 1. स्वर्णिम अतीत (उद्घाटन सत्र), 2. विशिष्ट संघ-सेवा एवं गुणी-अभिनन्दन सत्र, 3. गौरवशाली वर्तमान सत्र, 4. उज्जवल भविष्य सत्र।

उद्घाटन सत्र (स्वर्णिम अतीत)

17 नवम्बर को प्रातः ठीक 9.30 बजे प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ, जिसका उद्घाटन राजस्थान के यशस्वी एवं लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक जी गहलोत ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में झारखण्ड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया का सान्निध्य प्राप्त था। कार्यक्रम की अध्यक्षता रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने की। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय

श्री मोफतराजजी मुणोत, मुम्बई, शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलालजी बाफना, जलगांव, संघ कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चेन्नई, संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विरदराजजी सुराणा-जयपुर, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराणा-चेन्नई, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी, बृहद् अधिवेशन स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री नवरतनमलजी कोठारी-जयपुर, अधिवेशन के संयोजक श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर ने मंच को सुशोभित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ विजेताजी लोढ़ा, निधिजी लोढ़ा, पूर्वीजी लोढ़ा, नेहाजी लोढ़ा के मंगलाचरण की प्रस्तुति से हुआ। युवारत्न श्री प्रशान्तजी कर्नावट ने संकल्प प्रस्तुत किया। निशाजी मेहता, सुमनजी ढड्ढा, सोनूजी बम्ब, अनिताजी डागा, प्रमिताजी सेठ ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे- "सबका स्वागत है इस बार खुशियाँ छाई अपरम्पार।" स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री नवरतनमलजी कोठारी ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए अधिवेशन उद्घाटनकर्त्ता माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोकजी गहलोत, मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया सहित पधारे हुए सभी गुरुभ्राताओं का शब्दों द्वारा भावभीना स्वागत किया। अधिवेशन उद्घाटनकर्त्ता श्री अशोक जी गहलोत एवं मुख्य अतिथि माननीय श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा माला, शॉल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर द्वारा श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, श्री रतनलालजी बाफना-जलगांव एवं श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर का माला एवं शॉल द्वारा सम्मान किया गया।

मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत द्वारा उद्बोधन

अधिवेशन उद्घाटनकर्त्ता माननीय **मुख्यमंत्री श्री अशोकजी गहलोत** ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रावक संघ के तत्त्वावधान में आयोजित बृहद् अधिवेशन में आने का अवसर मिला, इसकी मुझे खुशी है। यह अधिवेशन 19 वर्ष के अन्तराल के पश्चात् हो रहा है, जो काफी लम्बा समय होता है। अधिवेशन तीन वर्ष में होना चाहिये। अधिवेशन के सभी सत्रों की सफलता के लिए मैं मंगलकामना करता हूँ। **भगवान महावीर का अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह का सन्देश दुनिया के लोग आत्मसात् कर लें तो सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।** विश्वबन्धुत्व की भावना जैन दर्शन से मिली है। मैंने बचपन में वर्धमान स्कूल महामंदिर जोधपुर में विद्याध्ययन किया, जहाँ मुझे संस्कारों की पूंजी मिली। गांधी जी ने जैन मुनि से ही प्रारम्भ में संस्कार प्राप्त किए और

भगवान महावीर के अहिंसादि संदेशों को उन्होंने प्रयोग कर विश्व में फैलाया। जैन दर्शन में वैज्ञानिकता भी है और मौलिकता भी। आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रीयवाद, पर्यावरण-प्रदूषण आदि तमाम समस्याओं का समाधान भगवान महावीर के संदेशों से सम्भव है। उन्होंने कहा कि आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मैंने दो वर्ष पूर्व दर्शन किए तब उन्होंने नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की प्रेरणा की थी। आज भी उन्होंने यही प्रेरणा की है। मैं नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने हेतु मुख्य सचिव को कहूँगा। डी.आर. मेहता से मैंने कहा है कि इसकी योजना बना कर दें।

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का मुझ पर अत्यन्त आशीर्वाद रहा। कोसाणा में रेनबो हाउस जोधपुर में मैंने उनके दर्शन किए। आचार्यश्री ने मुझे कोसाणा में फरमाया- **''सबकी सेवा करना, गाँव-गरीब को मत भूलना।''** उन्होंने कभी किसी नेता को सभा में नहीं बुलाया। साधु-सन्तों को जरूरत होनी भी नहीं चाहिए कि वे किसी को बुलायें। आचार्य हस्ती के देवलोक गमन पर मैं निमाज भी गया। मैं संतों के जीवन से प्रभावित रहा हूँ। इसलिए कई अच्छे कार्यों को प्रोत्साहन मिलता रहा।

अधिवेशन में अन्य वक्ताओं द्वारा उद्‌बोधन

बृहद् अधिवेशन के **संयोजक श्री आनंदजी चौपड़ा** ने अधिवेशन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह अधिवेशन परस्पर में परिचय करने का विशाल मंच है। इसके द्वारा पारस्परिक प्रेम, मैत्री एवं सहयोग में वृद्धि संभव है। आशा है दो दिवसीय अधिवेशन में आप पूरा-पूरा लाभ उठायेंगें।

श्रावकरत्न श्री विमलचन्दजी डागा ने प्रमुख वक्ता के रूप में संघ के स्वर्णिम अतीत की झाँकी प्रस्तुत करते हुए पूर्वाचार्यों के संयम-शील की अनेक प्रभावशाली घटनाओं को रोचक शैली में प्रस्तुत किया तथा संघ व शासन के उन्नयन में उन महापुरुषों के योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने लोंकाशाह से लेकर आचार्य धर्मसिंह जी, लवजी, जीवराज जी, धर्मराजजी, धन्ना जी, भूधर जी, कुशलचन्द जी, पूज्य गुमानचन्द्र जी, रत्नचन्द्रजी महाराज आदि आचार्यों के जीवन को उजागर करते हुए आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज एवं वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज, उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी महाराज एवं कतिपय प्रभावशाली संत-सतियों के जीवन की घटनाओं को भी प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध **भजन गायिका श्रीमती नीलमजी सिंघवी-दिल्ली** ने मधुर स्वर में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज के जीवन पर गीत प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे-

है ज्ञानी, ध्यानी, सरलमुनि, जो रत्नसंघ उजियारे हैं।
उन गुरु की दीक्षा अर्द्धशती को आज मनाने आये हैं।।

आचार्य हीरा गुरु को प्रणाम, गा रही है दिशाएँ बार-बार।।

महावीर जैन स्वाध्यायी विद्यापीठ, जलगाँव के **प्राचार्य श्री प्रकाशचन्दजी जैन** ने 'संघ में आध्यात्मिक चेतना की अभिवृद्धि' विषय पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि धर्म संघ की सुदृढ़ता के लिए तीन बातें आवश्यक हैं- प्रेम, भाईचारा और वात्सल्य। संघ में आध्यात्मिक वृद्धि के लिए सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान और चारित्र तीनों आधारभूत हैं। स्वाध्याय, सामायिक और ध्यान-साधना में आगे बढ़ने की आवश्यकता हैं। बच्चों को सुसंस्कारित करने हेतु संस्कार शिविर आयोजित होने चाहिए। आध्यात्मिक चेतना से ही संघ का गौरव हैं।

केकड़ी से पधारे **राष्ट्रीय कवि श्री अब्दुल गफ्फार** ने भगवान महावीर, आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा एवं उपाध्याय मान की स्तुति रूप काव्य पाठ प्रस्तुत किया।

बृहद् अधिवेशन **संयोजक श्री आनंदजी चौपड़ा** ने जयपुर में 22 सितम्बर 2012 को सम्पन्न वीर परिवार सम्मान-समारोह की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसी सत्र में मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवरजी म.सा., महासती श्री कोमलजी म.सा. के सांसारिक वीर परिवारजनों को सम्मानित किया गया। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जयपुर द्वारा आयोजित हीरा प्रवचन पीयूष प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार प्राप्त चार प्रतियोगी विजेताओं को श्रीमती विमलाजी हीरावत द्वारा सम्मानित किया गया।

सत्र के **मुख्य अतिथि माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया** ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में ज्ञान, शिक्षा का जो स्वरूप है वह हमारे स्वर्णिम इतिहास से प्रेरणा पाकर समृद्ध हुआ है। लोगों में कहावत है कि जो पुराने खाते सम्हालता है वह वर्तमान में घाटे में है, किन्तु जैन समाज ने इस कहावत को गलत साबित कर दिया है। जैन धर्म एवं रत्नसंघ का स्वर्णिम इतिहास रहा है जो भविष्य को अधिक उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा देता है। अधिवेशन के आयोजकों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

रत्नसंघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा** ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि आचार्य हस्ती एक सूरज थे। वे जन-जन को प्रकाशित करने वाले महापुरुष थे। आचार्य श्री हीरा के नायकत्व में यह संघ निरन्तर आगे बढ़ रहा है। वर्ष 1993 में आयोजित रत्नसंघ के बृहद् अधिवेशन की तरह वैसा ही अधिवेशन इस चातुर्मास में करने का सपना आज पूरा हुआ। इस चातुर्मास में वीर परिवार सम्मान-समारोह का आयोजन हुआ, इसका मुझे बहुत प्रमोद है। आप सब लोगों की आत्मीयता एवं प्यार ही मेरी सबसे बड़ी पूंजी है। संघ के इस पद पर कार्य करने का जो अवसर मुझे मिला उसके लिए मैं हार्दिक आभार

व्यक्त करता हूँ। श्री पूरणराज जी अबानी, श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, श्री नौरतन जी मेहता आदि सभी का एवं संघ के सभी कार्यकताओं का मुझे पूरा-पूरा सहयोग रहा इसके लिए मैं आप सबका शुक्रगुजार हूँ। 'स्वप्निका' पुस्तिका को आप सब साथ लेकर जाएं तथा नियमों का पालन करें और गुरु भगवन्तों के प्रति श्रद्धा समर्पित करें। अधिवेशन के बहाने जयपुर संघ को आप सभी का सान्निध्य मिला, इसके लिए मैं आप सबका आभार व्यक्त करता हूँ। संघ के **कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल** ने अतिथियों सहित पधारे हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।

इसी सत्र में जाने-माने समाचार पत्र **'सुनहरा राजस्थान'** के बृहद् अधिवेशन विशेषांक का विमोचन मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर सुनहरा राजस्थान की निदेशक डॉ. सुषमाजी सिंघवी तथा डॉ. प्रतापसिंहजी लोढ़ा एवं श्री धर्मचन्दजी मेहता भी उपस्थित रहे। संघ द्वारा प्रकाशित एवं श्री राजेन्द्र जी जैन 'राजा' द्वारा संकलित 'रत्न सौरभ स्मारिका'' का विमोचन भी मुख्य अतिथि माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया द्वारा किया गया।

द्वितीय सत्र

विशिष्ट संघ-सेवा व गुणी-अभिनन्दन

17 नवम्बर, 2012 को दिन में 2.00 बजे आयोजित बृहद् अधिवेशन के द्वितीय सत्र (विशिष्ट संघ-सेवा व गुणी-अभिनन्दन) में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश माननीय श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी-जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सी.एम. बच्छावत-कोलकाता (आई.ए.एस.), (Principal Secretary, Food Processing Industries & Horticulture Deptt. Govt. of West Bengal) का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय श्री रतनलालजी बाफना-जलगांव ने की। मंगलाचरण मुमुक्षाजी ढड्ढा, सेहलजी जैन, रिचाजी डागा जयपुर ने प्रस्तुत किया। स्वागत गीत सुमनजी कोठारी, सुनीताजी हीरावत, उषाजी लुणावत, आशाजी बांठिया, चविताजी जैन जयपुर ने-''घड़ियाँ सुहानी हैं, आए अतिथि गण'' गीत से प्रस्तुत किया। माला, शॉल एवं स्मृति चिह्न द्वारा मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति माननीय श्री मुनीश्वरनाथ जी भण्डारी-जयपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री सी.एम. बच्छावत-कोलकाता को सम्मानित किया गया। मंच प्रथम सत्र की भांति संघ के विशिष्ट पदाधिकारियों से सुशोभित था।

आई.आई.एम. अहमदाबाद से पधारे **प्रो. शैलेद्रजी मेहता** ने 'युवावर्ग का जैन धर्म से जुड़ाव व संघ में सहयोग' विषय पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि जैन

धर्म के मौलिक सिद्धान्तों का स्वरूप वैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाए। प्रबन्धन करने वालों में ज्ञान की कमी नहीं होती, उन्हें दृष्टि दी जाती है। यदि दृष्टि बदल जाती है तो सब कुछ बदल जाता है। उन्होंने A. (Attitude), B. (Behavior), एवं C. (Cognition) के माध्यम से दृष्टि, चारित्र और ज्ञान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने देश को गुलाम नहीं बनाया, किन्तु भारतीय लोगों ने अपने आपको अंग्रेजों का गुलाम बना लिया। ब्रिटिश साम्राज्य भय पर आधारित था। गांधी जी ने भय निवारण का कार्य किया है। यह दृष्टि परिवर्तन का कार्य था। मनुष्य जब सही दृष्टि से देखता है तो उसके दुःख का निवारण हो जाता है। दृष्टि सही होने पर ही ज्ञान और आचरण सही बनता है। दृष्टि को निर्मल बनाने का तरीका है ध्यान। सेवाभाव से भी दृष्टि साफ होती है। अंत में उन्होंने कहा-

सोच बदले, सितारे बदले जायेंगे।
नज़र बदले, नज़ारे बदले जायेंगे।।

पूर्व न्यायाधिपति माननीय श्री जसराजजी चौपड़ा ने 'जैन धर्म में स्वधर्मी वात्सल्य व सेवा का महत्त्व' विषय पर प्रभावशाली उद्बोधन देते हुए कहा कि मनुष्य जन्म सेवा से सार्थक बनता है। स्वधर्मी वात्सल्य संघ सेवा का प्रमुख अंग है। जिस हाथ से संघ की सेवा नहीं हुई, वह हाथ अपवित्र है। लोगों का सम्मान रख कर किस प्रकार स्वधर्मी सेवा की जा सकती है, यह संघसेवियों को लक्ष्य में लेना है।

उदयपुर से पधारे **राष्ट्रीय कवि श्री प्रकाशचन्दजी नागौरी** ने गुरु स्तुति रूप काव्य पाठ प्रस्तुत किया। आपके कविता के कुछ बोल इस प्रकार थे-

आपने दीक्षा ग्रहण की, लाभ हम लेते रहे।
आपने कांटे चुने, और फूल हम लेते रहे।।

श्री विकासजी मेहता-जयपुर ने गुरु हीरा की स्तुति करते हुए मधुर स्वर में जग में सुन्दर है दो नाम, बोलों जय गुरु हीरा-मान। गीत प्रस्तुत किया।

गुणी-अभिनन्दन

गुणीजनों के अभिनन्दन के अन्तर्गत संघ का श्रेष्ठ सम्मान **''संघरत्न'' माननीय श्री डी. आर. मेहता साहब-जयपुर** को उनकी संघ-निष्ठा एवं उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रदान किया गया। न्यायाधिपति श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी ने उन्हें शॉल, माला और रजत पट्टिका प्रदान कर सम्मानित किया। संघाध्यक्ष **श्री सुमेरसिंह जी बोथरा** ने कहा कि आपको सम्मानित कर संघ गौरवान्वित है। **श्री डी.आर.मेहता** ने अपने उद्बोधन में कहा कि मेरा परिवार सात पीढ़ी से रत्नसंघ का सदस्य रहा, जो अब ग्यारहवीं पीढ़ी तक पहुँच गया है, यह मेरा सौभाग्य है। इस संघ में कोई दिखावा नहीं है। फक्कड़ एवं निष्पृही संतों के

प्रति मैं वंदन करता हूँ। धर्म को सेवा, प्रेम, वात्सल्य एवं सहयोग के द्वारा सरस बनाइए।

युवा प्रतिभा शोध साधना सेवा-सम्मान युवारत्न श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर को उनके द्वारा कृत संघ-सेवा हेतु प्रदान किया गया। **विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान** से **श्रीमती ताराजी डाकलिया-जलगाँव** को सम्मानित किया गया। **अध्यापन सेवा** के अन्तर्गत **प्राकृतविद् श्रीमती ताराजी डागा-जयपुर** को सम्मानित किया गया।

विशिष्ट अतिथि श्री सी.एम. बच्छावत साहब ने उद्बोधन देते हुए बताया कि जैन धर्म में सद्गुणों पर बल दिया गया है। आज के वातावरण में बच्चों को संस्कार देना आवश्यक है। उन्हें आगमों के बारे में सरल रूप में समझाना चाहिए। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे बचपन से आचार्य हस्ती से संस्कार मिले जिनके बलबूते मैं आगे बढ़ा हूँ। अनेकान्तवाद से व्यक्तित्व का विकास होता है। **मुख्य अतिथि माननीय श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी** ने उद्बोधन देते हुए बताया कि जैन धर्म बहुत ही वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। धर्म की गहराई में जाने के लिए हमें समर्पित होना पड़ेगा तथा नई पीढ़ी को तर्क के साथ समझाना पड़ेगा। उन्होंने आयोजकों को हार्दिक बधाई दी। शासन सेवा समिति के संयोजक **माननीय श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव** ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि दुनिया में सबसे कठिन काम है विश्वास को कायम रखना। श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर सही समय पर अध्यक्ष मनोनीत हुए हैं वे दृढ़ संकल्प के साथ संघ-हित चिन्तन में निरन्तर आगे बढ़ते रहें। **संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी** ने आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

तृतीय सत्र
(गौरवशाली वर्तमान)

18 नवम्बर 2012 को प्रातः 9:00 बजे प्रारम्भ इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त माननीय श्री कुलदीपजी रांका-जयपुर का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर ने की। मंगलाचरण एवं स्वागत गीत के पश्चात् मुख्य अतिथि माननीय श्री कुलदीपजी रांका को माला, शॉल व स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पूर्णिमाजी रांका का भी बहुमान किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर को माला एवं शॉल द्वारा सम्मानित किया गया। गुणी अभिनन्दन के अन्तर्गत **संघ-सेवा हेतु श्री झूमरमलजी बाघमार-चेन्नई, श्री ओमप्रकाशजी बांठिया-बालोतरा, श्री चन्दनमलजी जैन-जोधपुर, श्री माणकलालजी चौपड़ा-बालोतरा, श्री श्रीपाल जी देशलहरा-सिकन्दराबाद एवं**

श्री शान्तिलाल जी डूँगरवाल-बैंगलोर को सम्मानित किया गया। सुश्री कोमलजी भंसाली-जोधपुर को 'संघ रत्न श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा प्रतिभा शिक्षा सम्मान' प्रदान किया गया। विशिष्ट तपाराधन हेतु श्री अरूणजी भण्डारी-अहमदाबाद को सम्मानित किया गया। विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान श्री सुरेशजी हींगड़-भीलवाड़ा को प्रदान किया गया। श्री शिवचरणजी जैन-गंगापुरसिटी का विशिष्ट सेवावीर स्वाध्यायी-सम्मान (मरणोपरान्त) उनके सुपुत्र श्री अरविन्दजी जैन को प्रदान किया गया।

मुख्य अतिथि श्री कुलदीपजी रांका ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ की सभी संस्थाएँ बहुत अच्छा काम कर रही हैं। युवावर्ग के प्रश्नों को समझकर उनका सम्यक् समाधान करना जरूरी है। हिन्दुस्तान के बाहर भी अनेक परिवार रहते हैं। उनको भी जैन धर्म से जोड़ने का हमारा प्रयास होना चाहिये। इस अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित एवं श्री रतनलालजी बाफना द्वारा लिखित **'सबको प्यारे प्राण'** नामक पुस्तक का लोकार्पण मुख्य अतिथि श्री कुलदीपजी रांका द्वारा किया गया। द्वितीय पुस्तक श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार द्वारा लिखित **'जिज्ञासा-समाधान'** का लोकार्पण संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत द्वारा किया गया। श्री गौतमराजजी सुराणा द्वारा संकलित **'गौतम की वंदना'** नामक पुस्तक का विमोचन सत्र के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्दजी हीरावत ने किया।

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं की विगत 20 वर्षों की प्रमुख उपलब्धियों को संघ एवं संघ के सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने प्रस्तुत किया। संघ की उपलब्धियाँ **संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर** ने, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की उपलब्धियाँ **मण्डल के मंत्री श्री विरदराजजी सुराणा-जयपुर** ने, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की उपलब्धियाँ **श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराणा-चेन्नई** ने, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की उपलब्धियाँ **युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई** ने प्रस्तुत की। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर की उपलब्धियाँ **स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री नवरतनजी डागा-जोधपुर** ने प्रस्तुत करते हुए कहा कि कोई व्यक्ति धनी एक दिन में बन सकता है, किन्तु गुणी बनने में लम्बा समय लगता है। अतः गुणियों को समाज में आगे लाना चाहिए। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की उपलब्धियाँ **शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीलाजी बोहरा-जोधपुर** ने तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की उपलब्धियाँ **संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाषजी हुण्डीवाल-जोधपुर** ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम के मध्य में मुमुक्षाजी ढड्ढा ने मधुर गीतिका प्रस्तुत की।

गुणी-अभिनन्दन के अन्तर्गत **विशिष्ट संघ-सेवा हेतु श्री मोहनलालजी मूथा-जयपुर** को सम्मानित किया गया। युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित स्वप्निका प्रतियोगिता हेतु प्रकाशित पुस्तिका का परिचय प्रतियोगिता के **संयोजक श्री नमनजी मेहता-पीपाड़शहर** द्वारा प्रस्तुत किया गया। **संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा** ने अपने उद्बोधन में बताया कि संघ का निर्णय है कि संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाएँ मिलकर स्वप्निका पुस्तक के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग प्रदान करें।

संघ-संरक्षक मण्डल के **संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत** ने अपने उद्बोधन में बताया कि हमारे संघ का अतीत बहुत सुन्दर रहा। हमारा वर्तमान उज्ज्वल रहेगा तो भविष्य भी सुनहरा होगा। हर व्यक्ति चाहता है कि संघ का भविष्य उज्ज्वल हो, संघ प्रगतिशील हो। इसके लिये मैं कुछ विचारणीय बातें आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ-

1. संघ का आधार आपसी सौहार्द और पूर्ण समर्पण है। पदाधिकारियों का आपसी समन्वय होना चाहिये।
2. संघ का प्राण अनुशासन है।
3. संघ की शोभा अपने जीवन का आचरण है।
4. संघ की सुगन्ध स्वधर्मी सेवा है।
5. जीवन में परिवर्तन होना प्रगतिशीलता है। मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए परिवर्तन हो। रत्नसंघ धर्म संघ है। इसका संगठन पक्ष मजबूत बनना चाहिये।
6. सामायिक और प्रतिक्रमण का अर्थ जानकर धर्म का आचरण करें।
7. पदाधिकारियों में विचार भेद हो सकते हैं, किन्तु मतभेद नहीं रहना चाहिये।
8. पदाधिकारियों का तीन दिन का चिन्तन शिविर प्रतिवर्ष आयोजित हो।
9. बहनों एवं बच्चे-बच्चियों के शिविर लगाये जायें।
10. तीन वर्ष में एक बार बृहद् अधिवेशन होना चाहिये।

अध्यात्म पक्ष की मजबूती हेतु श्री मुणोत साहब ने कहा- आज जो भी धार्मिक क्रियाएँ हो रही हैं, वे बहुतांश तकनीकी रूप में हो रही हैं। धार्मिक क्रियाओं में दृष्टि और ज्ञान का सम्यक् पुट होना चाहिये। अपरिग्रह जैन धर्म का विशिष्ट सिद्धान्त है। परिग्रह का सम्बन्ध आसक्ति से है, वस्तु मात्र से नहीं। दान देने में, उदारता में अभी कमी है।

स्थानकवासियों में दान की प्रवृत्ति कम है, उसे बढ़ाने की आवश्यकता है। संघ की गतिविधियों को सक्षम बनाने में अर्थ का सहयोग अपेक्षित है। अपनी कथनी-करणी में एकता आनी चाहिये। गुरु के प्रति, संघ के प्रति दृढ़ श्रद्धा हो। सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता हो, जीवन में नैतिकता, प्रामाणिकता हो। सन्त-सतियों के पास ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि की बातें ही करना चाहिये। अन्य सांसारिक बातें नहीं करें। नई कार्यकारिणी संघ-दीप्ति में योगदान करे।

मुख्य वक्ता के रूप में चेन्नई से पधारीं **डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन** ने 'वर्तमान जीवन-शैली में जैन धर्म' नामक विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रत्येक मनुष्य के चार पत्नियां हैं-1. आत्मा, 2. अच्छे-बुरे कर्म, 3. शरीर, 4. घर-बार। हमारा अधिकतर ध्यान चौथी पत्नी पर रहता है। किन्तु प्रथम पत्नी पर यदि ध्यान दिया जाए तो अधिकतम 15 भवों में मुक्ति प्राप्त हो सकती है। 15 तिथियों को अपने जीवन से जोड़ते हुए उन्होंने प्रभावशाली उद्बोधन प्रस्तुत किया। सभी को धन्यवाद के साथ सत्र समाप्ति की घोषणा की गई।

चतुर्थ सत्र

(उज्ज्वल भविष्य)

18 नवम्बर 2012 को दिन में 2.00 बजे प्रारम्भ चतुर्थ सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद माननीय संघ-संरक्षक, संघरत्न श्री ईश्वरलालजी जैन-जलगाँव का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सत्र की अध्यक्षता संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ सुमनजी ढड्ढा, निशाजी मेहता जयपुर के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत गीत तृप्तिजी सिंघवी, रीनाजी बोहरा, संगीताजी लोढ़ा, पूर्वीजी लोढ़ा, नेहाजी लोढ़ा, अंजू जी हीरावत ने प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि माननीय श्री ईश्वरलाल जी जैन को माला, शॉल एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया। शासन सेवा समिति के संयोजक माननीय **श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव** ने गुरु महिमा पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्थानकवासी परम्परा में गुरु का महत्त्व भगवान के बराबर होता है। सन्मार्ग पर लाने वाले गुरु ही होते हैं। माता-पिता प्रकृति की देन हैं, किन्तु गुरु का चयन अपने विवेक पर निर्भर है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें सद्गुरु मिलें हैं। हम संकल्प लेकर जायें कि जीवन में ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे नीचा देखना पड़े। **श्रावकरत्न श्री हस्तीमलजी.गोलेच्छा** ने मधुर स्वर में गुरु स्तुति स्वरूप एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् भारतीय जैन संघटना के प्रशिक्षक **श्री राजेन्द्रजी लुंकड़** ने 'सुखी परिवार, प्रगति का आधार' विषय पर अपना सारगर्भित चिन्तन प्रस्तुत किया। बृहद्

अधिवेशन के संयोजक श्री आनंदजी चौपड़ा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना का परिचय प्रस्तुत किया।

नव निर्वाचित अध्यक्षों द्वारा शपथग्रहण

आगामी तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए नवनिर्वाचित संघाध्यक्ष, मण्डल अध्यक्ष, श्राविका मण्डल अध्यक्ष एवं युवक परिषद् अध्यक्ष को मंच पर आमंत्रित किया गया। हर्ष-हर्ष एवं जय-जय की हर्ष ध्वनि के साथ नवनिर्वाचित अध्यक्ष मण्डल ने आसन ग्रहण किया।

सम्माननीय संघ-संरक्षक संघ पिता श्री नथमल जी हीरावत, जयपुर द्वारा श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना (नवनिर्वाचित संघाध्यक्ष), श्री कैलाशमलजी दुगड़ (अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल), श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा (अध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल) एवं श्री जितेन्द्र जी डागा (अध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्) को पद एवं संघनिष्ठा की शपथ दिलाई गई।

नवमनोनीत अध्यक्ष द्वारा अभिव्यक्त विचार एवं पदाधिकारियों की घोषणाएँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के नवमनोनीत अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज सौभाग्य पंचमी (ज्ञान पंचमी, लाभ पंचमी) की पावन वेला में अभी कुछ समय पूर्व पद एवं दायत्वि की शपथ दिलाई गई, इसे मैं परम पूज्य गुरुवर की भोलावण के स्मरण के साथ कि **"जब तक दिल दिमाग दुरुस्त है, संघ सेवा करनी है** एवं परम पूज्य आचार्य भगवन्त के मंगलमय निर्देश के साथ **यह गुरुदेव के ऋण से उऋण होने का अवसर है, संघ की आज्ञा में मेरी आज्ञा है"** को उन्हीं महापुरुषों की पावन कृपा एवं आशीर्वाद के साथ आप सबके स्नेह प्रसाद के रूप में शिरोधार्य करता हूँ।

इस अवसर पर उन्होंने परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं पूज्य गुरुवृन्द के साथ ही अपने पूज्य दादाजी श्री जोगीदास जी बाफना, पूज्य पिताश्री बस्तीमल जी बाफना एवं संघ समाज-सेवियों का पुण्य स्मरण करते हुए अपनी जन्म भूमि भोपालगढ़, पूज्या मातुश्री श्रीमती भंवरीदेवी जी बाफना एवं मातृ संस्था श्री जैन रत्न विद्यालय के उपकारों का भी स्मरण किया।

इस अवसर पर उन्होंने संघ की कार्यकारिणी की भी घोषणा की। संघाध्यक्ष महोदय ने बताया कि **कार्याध्यक्ष के रूप में श्री पी.एस. सुराणा जी-चेन्नई** एवं **महामंत्री के रूप में श्री आनन्द जी चौपड़ा-जयपुर** का मनोनयन पूर्व में ही किया जा

चुका है। **अतिरिक्त महामंत्री के रूप में श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल** तथा **कोषाध्यक्ष के रूप में श्री अनिल जी बोहरा 'सी.ए.'-जोधपुर** तथा **सह कोषाध्यक्ष के रूप में श्री बसन्त जी जैन-मुम्बई** का नाम प्रस्तावित करता हूँ। एक अभिनव प्रयोग के रूप में मैं उपाध्यक्षगण एवं मंत्रीगण को विशिष्ट दायित्व सौंपते हुए निम्नांकित संघ सेवियों का नाम प्रस्तावित करता हूँ।

विभाग	उपाध्यक्ष	मंत्री
मुमुक्षु	श्री किस्तुरचंद जी बाफना-जलगाँव	श्री सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़सिटी
दीक्षा	श्री कांतिलाल जी चौधरी-धुलिया	श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-कोटा
स्वास्थ्य	श्री गौतमराज जी सुराना-चेन्नई	डॉ. पी.एस. लोढ़ा-जयपुर
चातुर्मास	श्री रूपकुमार जी चौपड़ा-पाली	श्री ओमप्रकाश जी बांठिया-बालोतरा
सेवासोपान	श्री रायचन्द जी हीरावत-मुम्बई	श्री धनपत जी भंसाली-मुम्बई
संगठन	श्री हस्तीमल जी डोसी-मेड़तासिटी	श्री बुधमल जी बाघमार-मैसूर
योजना	श्री अमिताभ जी हीरावत-जयपुर	श्री आनन्द जी कर्णावट-बेल्जियम

सहमंत्री श्री चंचलराज जी मेहता-अहमदाबाद, श्री लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी-ब्यावर, श्री शैलेश जी डोसी-जोधपुर, श्री गौतम जी भण्डारी-बैंगलोर, श्री अनिल जी सुराणा-मुम्बई, श्री श्रीपाल जी देशलहरा-सिकंदराबाद एवं श्री मनीष जी जैन-खेरली।

वात्सल्यनिधि संयोजक- श्री पूरणराज जी अबानी-जोधपुर

स्वाध्यायसंघ- निदेशक- डॉ. अशोक जी कवाड़-चेन्नई
संयोजक- श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर

शिक्षण बोर्ड- निदेशक- श्री प्रकाशचन्द जी जैन 'प्राचार्य'-जलगांव
संयोजक- श्री सुरेश जी चोरड़िया-चेन्नई

श्राविका मण्डल- निदेशक- श्रीमती मधु जी सुराणा-चेन्नई

युवक परिषद्- निदेशक- प्रो.(डॉ.) शैलेन्द्र जी मेहता-अहमदाबाद

संघाध्यक्ष महोदय ने परम पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष को **'ज्ञान वर्ष'** के रूप में मनाने की घोषणा करते हुए सभी संघ सदस्यों को ज्ञानाराधना के साथ ही रात्रि-भोजन त्याग व्रत ग्रहण एवं संवर-पौषध साधना में आगे बढ़ने का आह्वान किया।

संघाध्यक्ष महोदय ने सभी संघ-सदस्यों को तन-मन-धन से सहयोग, संघ

समर्पण व मार्गदर्शन की अपेक्षा के साथ अनुरोध किया कि आप सजग रहें, हमें सजग बनाये रखें तथा अपना स्नेह, साथ व संरक्षण प्रदान करें।

युवक परिषद् अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हुए युवक परिषद् की आगामी कार्य-योजना एवं नई कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए युवारत्न श्री विक्रम जी बाघमार-चेन्नई एवं श्री महावीरचन्द जी बोथरा-जलगांव को कार्याध्यक्ष तथा श्री श्रेयांस जी मेहता-जोधपुर को महासचिव मनोनीत किया।। श्राविका मण्डल के नये पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी की घोषणा **श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा** के कहे अनुसार संघ महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा ने की। श्रीमती बीना जी मेहता-जोधपुर को श्राविका मण्डल का महासचिव मनोनीत किया गया।

संघनिष्ठ श्रावक **श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर** ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज की दीक्षा-अर्द्धशती पर- 'थाने निवण करूं में बारम्बार, गुरुवर सा जीओ साल हजार।' भजन प्रस्तुत किया। **श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर** ने आशीर्वचन स्वरूप अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जयपुर संघ का सौभाग्य रहा कि आचार्य भगवन्त का चातुर्मास प्राप्त हुआ। इस चातुर्मास में मुझे दायित्व निर्वहन करने का अवसर मिला और आत्म-संतोष का अनुभव हुआ। अपने बच्चे-बच्चियों को संस्कारित करने में पीछे नहीं हटें। बच्चों को गुरुदेव एवं संतों के सान्निध्य में लाएं तथा अपने-अपने घरों में बेसिक ज्ञान दें। गुरुदेव के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण का भाव निरन्तर बढ़ता रहे।

चतुर्थ सत्र में खुला मंच भी रखा गया, जिसमें बालोतरा से पधारे **श्रावकरत्न श्री ओमप्रकाशजी बांठिया-बालोतरा** ने क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित करने के लिए सुझाव रखा। **पूर्व न्यायाधिपति माननीय श्री जसराजजी चौपड़ा-जयपुर** ने तीन सुझाव प्रस्तुत किये-(1) तपस्या में किसी तरह का आडम्बर, लेन-देन व सामूहिक भोज का आयोजन न हो। (2) चातुर्मास के दौरान भोजन में 11 द्रव्य एवं नाश्ते में 7 द्रव्य से ज्यादा न हो। (3) संघ के भोजन में जूठा न डाला जाय। संघ स्तर पर सर्वसम्मति से इन तीनों सुझावों को स्वीकार कर भविष्य के लिए प्रस्ताव रूप में पारित किया गया।

मुख्य अतिथि श्री ईश्वरलालजी जैन-जलगाँव ने बृहद् अधिवेशन के आयोजन के लिए आयोजकों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि हमारा संघ इतना अच्छा है कि इसके सदस्य हर स्थान पर अपनी अहमियत रखते हैं। अपने वक्तव्य से, आचरण से हमारे सदस्य संघ-समाज को सुरभित करते हैं। हमारे संघ ने श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना के रूप में सरस्वती पुत्र को संघाध्यक्ष का सम्मान दिया, यह बहुत अच्छी बात है, इससे संघ को नई दिशा प्राप्त होगी। हमारे पीछे सद्गुरु का वरदहस्त है, जिससे जीवन की सभी समस्याओं का

समाधान हो जाता है। बृहद् अधिवेशन के **संयोजक श्री आनंदजी चौपड़ा** ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर सहित बृहद् अधिवेशन के लिए बनी सभी समितियों, कार्यकर्त्ताओं एवं पधारने वाले सभी गुरुभ्राताओं का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया। साथ ही इस बृहद् अधिवेशन को सफल बनाने में प्रयक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सभी सहयोगी महानुभावों को धन्यवाद दिया। सुबोध शिक्षा समिति को भी व्यवस्था में सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

उल्लेखनीय है कि बृहद् अधिवेशन में आवास, वाहन, भोजनादि की व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर थी। अभ्यागतों को जय जिनेन्द्र के साथ आदरपूर्वक व्यवस्थित रीति से भोजन कराया गया। अधिवेशन में समस्त भारतवर्ष के सैकड़ों ग्राम-नगरों से संघ-सदस्यों ने सोत्साह भाग लेकर आनन्द का अनुभव किया। साथ ही आचार्यप्रवर संत-मण्डल एवं महासती-मण्डल के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

अन्त में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा. का धनतेरस के दिन 12 नवम्बर 2012 को बांदनवाड़ा में समाधिमरण हो गया था। अत: महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा. सहित गत साधारण सभा से अब तक दिवंगत श्रावक-श्राविकाओं को दो लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धा-सुमन अर्पित किए गये। महत्वपूर्ण सूचनाओं के साथ कार्यक्रम समापन की घोषणा की गई।

नवमनोनीत संघाध्यक्ष का प्रवास कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के नवमनोनीत अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना एवं संघ के अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल त्रिदिवसीय प्रवास(24 से 26 नवम्बर) के दौरान अलीगढ़-रामपुरा, उज्जैन(बड़ी दीक्षा), रामपुरा बाजार एवं विज्ञान नगर कोटा में विराजित महासती-मण्डल के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लेते हुए महासतीवृन्द का पावन आशीर्वाद एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। सभी स्थानों पर संघाध्यक्ष महोदय ने गुरुभ्राताओं से सम्पर्क कर संघहित में विचार-विमर्श किया।

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा 06 जनवरी 2013 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा "जैनागम स्तोक वारिधि" (थोकड़ों की) परीक्षा 06 जनवरी 2013, रविवार को दोपहर 11.30 से 4.00 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा का कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा-

प्रथम व द्वितीय वर्ष दोनों का प्रथम प्रश्न-पत्र- 11.30 से 01.30 बजे तक

प्रथम व द्वितीय वर्ष दोनों का द्वितीय प्रश्न-पत्र- 02.00 से 04.00 बजे तक

प्रत्येक प्रश्न-पत्र में 5-5 थोकड़े पाठ्यक्रम में रखे गये हैं। आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अन्तिम दिनांक 06 दिसम्बर 2012 है। सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पाठ्यपुस्तकें एवं परीक्षा सम्बन्धी जानकारी के लिए शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं धर्मदलाली के इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें। 8-10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा का केन्द्र प्रारम्भ किया जा सकता हैं। परीक्षा में स्वयं भी भाग लें तथा अन्य भाई-बहिनों को भी भाग लेने हेतु अवश्य प्रेरित करें।

सम्पर्क सूत्र- **सुशीला बोहरा**, संयोजक-94141-33879, **धर्मचन्द जैन**, रजिस्ट्रार-93515-89694, **शिक्षण बोर्ड** कार्यालय-0291-2630490, ईमेल-info@jainratnaboard.com वेबसाइट-www.jainratnaboard.com

जयपुर में रविवारीय जैन संस्कार शालाएँ प्रारम्भ

परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन सद्प्रेरणा से जयपुर के चातुर्मासकाल में छोटे बच्चों का प्रत्येक रविवार को संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। 06 वर्ष से बड़े बच्चों को धार्मिक एवं नैतिक संस्कार देने के लिए रविवारीय शिविर जैन संस्कार शाला के रूप में श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों (1) लाल भवन-चौड़ा रास्ता, (2) जवाहरनगर, (3) वर्द्धमान भवन-लाल कोठी, (4) सामायिक-स्वाध्याय भवन-महावीर नगर, (5) महावीर भवन, किरणपथ-मानसरोवर आदि में रविवार 2 दिसम्बर, 2012 से प्रारम्भ किए जा रहे हैं। शिविर की अवधि प्रातःकाल 2 घण्टे रहेगी। अतः अभिभावकों से विनम्र अनुरोध है कि अपने बच्चों को संस्कारित करने हेतु उक्त शिविर में अवश्य भिजवायें। संस्कार शाला का उद्देश्य- आज के युग में पाश्चात्त्य और इण्टरनेट के कारण आ रही सांस्कृतिक गिरावट को रोकने के प्रयास के रूप में बच्चों को धार्मिक एवं नैतिक संस्कार देना है। मुख्य आकर्षण हैं-

1. सामायिक व प्रतिक्रमण का अर्थ सहित अध्ययन।
2. अनुभवी शिक्षकों द्वारा 25 बोल का व्याख्या सहित अध्यापन।
3. कहानियों आदि के माध्यम से रुचिकर तरीके से जीवनोपयोगी नैतिक संस्कार।
4. अध्ययन में निरन्तरता के कारण बच्चों में धार्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी।
5. समय-समय पर बच्चों को अनाथाश्रम, गौशाला आदि स्थानों पर ले जाने का कार्यक्रम ताकि उनमें जीव मात्र के प्रति अनुकम्पा का भाव जगे।

- अशोक सेठ-संयोजक (93146-25596)

पयुर्षण पर्वाराधना-2012

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा पर्युषण पर्वाराधना-2012 की रिपोर्ट अक्टूबर-2012 के अंक में प्रकाशित हुई थी। कतिपय नाम अप्रकाशित होने के कारण यहाँ दिए जा रहे हैं-

1. दूदू - श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा-ब्यावर
2. बाड़मेर - श्रीमती मंजू जी गांधी-सिंगोली

जोधपुर में रविवारीय संस्कार शिविर गतिशील

परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन सद्प्रेरणा से जोधपुर में आयोजित रविवारीय संस्कार शिविर निरन्तर गतिमान है। इस वर्ष चातुर्मास में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में इस शिविर के माध्यम से लगभग 400 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। सबसे बड़ी उपलब्धि दीपावली पर्व के पावन अवसर पर 500 बालक-बालिकाओं ने पटाखे नहीं छोड़ने का संकल्प किया, जिन्हें संघ द्वारा पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इस शिविर के माध्यम से लगभग 700 से 750 बालक-बालिकाएँ सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, थोकड़े इत्यादि का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। पुरस्कार एवं अन्य सभी व्यवस्था श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ सुन्दर तरीके से देख रहा है। *-राजेश भण्डारी, शिविर प्रभारी*

हीरा-प्रवचन-पीयूष खुली पुस्तक परीक्षा-परिणाम

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा आयोजित हीरा-प्रवचन-पीयूष भाग 1,2,3 व 4 पर आयोजित खुली पुस्तक परीक्षा परिणाम निम्न प्रकार रहे हैं-

प्रथम पुरस्कार - प्रवचन वारिधि सम्मान-राशि 51000/- (एक)

संयुक्त विजेता :-1. श्री जगदीश जी जैन, सवाईमाधोपुर (988), 2. श्रीमती अंजली पटनी, जयपुर (988), 3. श्रीमती रोमा मेहता, जोधपुर (988), 4. श्रीमती मंजु बम्ब, जयपुर (988)

द्वितीय पुरस्कार - प्रवचन कोविद सम्मान राशि 21000/- (एक)

संयुक्त विजेता :-1. श्रीमती राजुल जैन, गंगापुरसिटी (984), 2. कु. खुशबू डोसी, मेडतासिटी (984), 3. कु. सपना भण्डारी, बोरावड (984), 4. श्रीमती बबीता बाफणा, जलगाँव (984), 5. श्री धर्मेश कुमार, पाली (984)

तृतीय पुरस्कार- प्रवचन विशारद सम्मान-राशि 11000/- (एक)

संयुक्त विजेता:- 1.श्रीमती प्रमिला मेहता, दूदू(981),2. श्री हस्तीमल गोलेछा,

ब्यावर(981),3. श्रीमती रुचिका लूणावत, जोधपुर(981),4. श्री लोकेश जैन, जयपुर(981)

सुपर टॉप टेन पुरस्कार –प्रवचन प्रभावक सम्मान–राशि 1000/– प्रत्येक (दस)

1. श्रीमती मीरा जैन, सवाईमाधोपुर (980),2. श्रीमती सुषमा सिंघवी, जोधपुर (979.5), 3. श्रीमती सविता खेराडा, अजमेर (979.5), 4. श्रीमती कमला सिंघवी, जयपुर (979), 5. श्री मुकेश बोहरा, जोधपुर (979), 6. श्रीमती निधि जैन, होशियारपुर (979), 7. श्रीमती प्रमिला बी. पोखरणा, धुले (978.5), 8. कु. दक्ष सालेचा, बालोतरा (978.5), 9. श्रीमती सीमा संचेती, उज्जैन (978), 10. श्रीमती प्रमिला बम्ब, जयपुर (978)

प्रोत्साहन पुरस्कार – प्रवचन वाचक सम्मान–राशि 500/– प्रत्येक (बीस)

1. श्रीमती तारा कुमारी रुणवाल, जयपुर (977.5), 2. कु. पूजा जैन, जोधपुर (977.5), 3. श्रीमती साक्षी बाफणा, जलगाँव (977.5), 4. श्रीमती उषा सुराणा, जयपुर (976), 5. श्रीमती संतोष पोखरणा, जयपुर (976), 6. श्रीमती विनिता बोथरा, जयपुर (975.5), 7. श्रीमती उर्मिला पदमचन्द चौरडिया, सूरत (975.5), 8. श्रीमती प्रीति जैन भरतपुर (975.5), 9. श्रीमती बबीता जैन, सवाईमाधोपुर (975.5), 10. श्रीमती ज्योति जैन, गंगापुरसिटी (975), 11. श्रीमती नीरा भण्डारी, ब्यावर (975), 12. श्रीमती ममता नाहर, पुष्कर (975), 13. श्रीमती राशि जैन, सवाईमाधोपुर (974.5), 14. श्रीमती कोमल बोहरा, मुम्बई (974.5), 15. कु. पूर्णिमा गांधी, जोधपुर (974), 16. श्रीमती शालीनी जैन, आगरा (974), 17. श्रीमती पुष्पा गोलेछा, ब्यावर (974), 18. श्रीमती गायत्री जैन, जयपुर (973), 19. श्रीमती सिद्धी बाफणा, जोधपुर (973), 20. श्रीमती पदम देवी हीरावत, जयपुर (973)।

'मान व्याख्यान-माला' पर खुली पुस्तक परीक्षा

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा–दिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा धार्मिक ज्ञान में अभिवृद्धि हेतु ''मान व्याख्यान–माला'' पुस्तक पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है।

प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार राशि 31,000/–, द्वितीय पुरस्कार राशि 15,000/, तृतीय पुरस्कार राशि 10000/– चतुर्थ पुरस्कार राशि 5000/– (दो) प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप राशि 1000/– (दस) सांत्वना पुरस्कार स्वरूप राशि 500/– (बीस) देय हैं। प्रश्न पुस्तिका वितरण तिथि दिनांक 27 नवम्बर, 2012 तथा उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 31 जनवरी 2013 रखी गयी है।

प्रश्न पुस्तिका मूल्य 25/– तथा पुस्तक का मूल्य 25/–निर्धारित है, जिसे डाक

व्यय राशि सहित अग्रिम भिजवाकर निम्न स्थानों से प्राप्त किया जा सकता है:-(1) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, 2570753, (2) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोडों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) फोन नं. 0291-2624891, (3) Smt. Rupal R. Kankariya, Chennai. Ph. 044-42728067, (4) Shri Yashwantraj Ji Sankhala, Bangaluru, Ph. 080-25562581, 09845019669 (5) श्रीमती नयनतारा जी बाफणा,जलगांव, 0257-2225903, (6) श्री पारसमलजी चौरडिया, उज्जैन (म.प्र.) मो. 09827046567, (7) श्रीमती मन्जू जी जैन, मुम्बई (महा.), मो. 09820388903, (8) श्री बसन्त जी जैन, मलाड,(वेस्ट) मुम्बई (महा.) फोन नं. 022-28810702, 09820350814, (9) श्री पदमचन्दजी कोठारी, अहमदाबाद 079-22160675, 09429303088, (10) श्रीमती किरण जी जैन, होशियारपुर, 01882-238314, 09463118600

उत्तर पुस्तिका जमा कराने का स्थान:- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) रहेगा।

अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा स्वर्ण जयन्ती (50 वें दीक्षा वर्ष) के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। निबन्ध का विषय "**पूज्य उपाध्यायप्रवर मानचन्द्र जी म.सा. का साधनामय जीवन**" रखा गया था। उक्त प्रतियोगिता के परिणाम निम्नांकित रहे- **प्रथम पुरस्कार (1100/- रुपये)-** श्री अनिल कुमार जी जैन-कोटा, **द्वितीय पुरस्कार (750/- रुपये)-** श्री संयम जी मेहता-पीपाड़ शहर, **तृतीय पुरस्कार (500/- रुपये)-** श्रीमती सुशीला जी भण्डारी-जोधपुर, **दस सांत्वना पुरस्कार (200/- रुपये प्रत्येक)-** श्री लक्ष्मीचन्द जी छाजेड़-समदड़ी, श्री दिलीप जी गांधी-चित्तौड़गढ़, श्री पारसमल जी चण्डालिया-ब्यावर, श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन-छोटी कसरावद, सुश्री भाग्यवन्ती तातेड़-जोधपुर, श्रीमती रेखाजी सुराणा-नागौर, श्रीमती सावित्री जी जैन-बारां, श्री बुद्धि प्रकाश जी जैन-भेंसोदा मण्डी, श्रीमती मंजु जी भण्डारी-ब्यावर, श्रीमती सूरज जी बोहरा-जोधपुर। *-मनोज कांकरिया-महासचिव*

केलिफोर्निया के विश्वविद्यालय में जैन अध्ययन केन्द्र प्रारम्भ

अप्रवासी भारतीय जैन समाज की भागीदारी से अमेरिका के केलिफोर्निया स्थित

क्लेरमोंट लिंक्लन विश्वविद्यालय में जैन अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है। अध्ययन केन्द्र में जैन बौद्धिकता और दर्शन पर एकवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित किया जाएगा तथा जैन धर्म के दूसरे समाजों और धर्मों के साथ अन्तःसम्बन्धों और परम्परा पर शोध होगा।

संक्षिप्त-समाचार

अहमदाबाद- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50वें दीक्षा-दिवस पर श्री एलिसब्रिज स्थानकवासी जैन संघ, पालड़ी में गोंडल सांघाणी सम्प्रदाय के पूज्या साधनाबाई महासतीजी आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में प्रातः 8.30 से 9.30 बजे तक 'नमो आयरियाणं' एवं 'नमो उवज्झायाणं' का जाप रखा गया। 9.30 बजे 'तिन्नाणं तारयाणं' विषय पर व्याख्यान हुआ, जिसमें आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जीवन वृत्तान्त एवं गुणों का वर्णन किया गया। 50-55 एकासन तथा लगभग 1600 सामायिकें हुई। जैन शाला के 100 बालकों ने सामायिक-साधना की। दोपहर में 'नमो नाणस्स' एवं नवकार मंत्र की 12-12 मालाएँ फेरी गई, जिसमें लगभग 250 की उपस्थिति थी। इस अवसर पर श्रीमती सायरकंवर प्यारेलाल जी शेषमल जी कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 'रक्तदान' कैम्प भी संघ प्रांगण में आयोजित हुआ, जिसमें 69 युनिट रक्तदान हुआ। हीराणी नगर स्थानक में लिम्बड़ी गोपाल सम्प्रदाय के पूज्य देवेन्द्रमुनि जी के सान्निध्य में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का स्वर्णजयन्ती दीक्षा-दिवस 18 नवम्बर को त्रिरंगी के साथ मनाया गया। इसी प्रकार ढोर बाजार-कांकरिया स्थान में महासती श्री मंगलज्योतिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 19 नवम्बर को 50वें दीक्षा-दिवस पर महासतियों ने आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया। इस अवसर पर कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए तथा पाँच-पाँच सामायिक एवं एकासन हुए। श्री कन्हैयालाल जी हिरण एवं श्री विनोद कुमार जी मुणोत द्वारा आचार्यप्रवर हस्ती-हीरा एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डाला गया। हठी भाई की बाड़ी में उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी की शिष्या शासनप्रभाविका श्री चारित्रप्रभा जी आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में 19 नवम्बर को आयोजित गुणानुवाद सभा में आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। यहाँ 36 एकासन तथा 225 श्राविकाओं द्वारा नवकार मंत्र का जाप किया गया। 'स्वप्निका' पुस्तक का विवेचन श्रावकरत्न श्री पदमचन्द जी कोठारी द्वारा किया गया।

कनकमाधुत्रम- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में श्री बुधमल पदमचन्द कोठारी परिवार द्वारा 2 दिसम्बर 2012 कोआई कैम्प का आयोजन किया गया। शिविर में 125 रोगियों का

रजिस्ट्रेशन हुआ, जिनमें से 50 रोगियों को ऑपरेशन हेतु चयनित किया गया। शिविर में रोगियों के भोजन, दवाई आदि की निःशुल्क व्यवस्था कोठारी परिवार द्वारा की गई।

जोधपुर- श्री वर्धमान अस्पताल, घोड़ों का चौक में 22 दिसम्बर को निःशुल्क शल्य-चिकित्सा शिविर आयोजित किया जायेगा। जिसमें डॉ. राम गोयल (एम.एस.) एवं डॉ. गोपालचन्द गांधी चिकित्सा करेंगे। यह आयोजन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी के पिता स्व. श्री पुखराज जी अबानी की 50वीं पुण्य- स्मृति में किया जा रहा है। शिविर के लिए पंजीकरण 21 दिसम्बर तक हो सकेगा। 23 दिसम्बर को श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में रक्तदान शिविर भी आयोजित है।

बीकानेर- श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संघ का "आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार" इस वर्ष जैन दर्शन के महान् विद्वान् प्रो. सागरमल जी जैन शाजापुर एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हरिसिंह जी रांका-मुम्बई को प्रदान करने की घोषणा की गई। पुरस्कार-समारोह 6 जनवरी, 2013 को आसाम की राजधानी गुवाहाटी में आयोजित किया जायेगा। इस पुरस्कार के साथ ही संघ का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति पुरस्कार भी प्रदान किया जायेगा। *-चम्पालाल डागा-राष्ट्रीय अध्यक्ष*

बधाई/चुनाव

जयपुर- हांगकांग निवासी रत्न व्यवसायी सुश्रावक श्री नीरज जी जैन को 12 अक्टूबर

2012 को 'महात्मा गाँधी प्रवासी गोल्ड मेडल" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अप्रवासी भारतीयों की सुरक्षा एवं निःस्वार्थ सामाजिक सेवा हेतु, हाउस ऑफ लॉर्ड्स, लन्दन में एनर्जी एवं क्लाइमेट चेंज मिनिस्टर द्वारा प्रदान किया गया। इससे पूर्व के.सी. पंत, पूर्व रक्षा मंत्री, भारत सरकार द्वारा 25 जनवरी 2012 को सामाजिक कार्यों के लिए 'हिन्द रत्न अवार्ड' से सम्मानित किया गया। आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व से अभिभूत होकर अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं ने आपको कई दायित्व सौंपे-

1. इंटरनेशनल सेक्रेटरी ऑफ हांगकांग, चाइना
2. सदस्य, गवर्नमेंट पब्लिक फोरम, हांगकांग
3. वाइस प्रेसिडेंट (चतुर्थ बार), जेम्स स्टोन मैन्यूफैक्चरिंग एसोशिएशन, हांगकांग

आप इन सभी दायित्वों को कर्तव्य समझ कर निर्वहन कर रहे हैं। आप आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्य हीराचन्द्र जी महाराज के अनन्य श्रद्धालु क्त हैं।

चेन्नई- डॉ. विनोद जी सुराणा सुपुत्र श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, सी.ई.ओ. सुराणा एंड सुराणा इंटरनेशनल एटर्नीज को एसोसिएटेड चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया के दक्षिण भारत रीजन के मैनेजिंग कमिटी वर्ष 2012-2014 के सदस्य निर्वाचित किए गए।

चेन्नई- रोटरी क्लब ऑफ मद्रास सिल्वर बीच द्वारा करुणा इंटरनेशनल के संस्थापक एवं साहित्य रत्न से अलंकृत दुलीचंद जैन को लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। जैन द्वारा लिखित पुस्तकों के लिए उनको अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

मेड़ता- डॉ. जतनराज मेहता को "महाकवि गुलाब खण्डेलवाल मीरा काव्य पुरस्कार-2011" से 27 से 30 अक्टूबर को आयोजित "मीरा महोत्सव-2012" में सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी कृति 'अन्तर की ओर' पर दिया गया।

भीलवाड़ा- श्री अरुणकुमार सुपुत्र श्रीमती आशा-अमित जी चौधरी एवं सुपौत्र श्रीमती इन्दुलता-बुधसिंह जी ने 28 अक्टूबर को आयोजित मेन्टल अर्थमेटिक्स की स्टेट लेवल की प्रतियोगिता में चेम्पियनशिप अवार्ड प्राप्त किया।

जोधपुर- दर्श सुराणा सुपुत्र श्रीमती प्रीति-नीरज सुराणा एवं सुपौत्र श्री किशोर जी सुराणा ने साढ़े चार वर्ष की बालवय में शिविर के दौरान सामायिक सूत्र, तीर्थंकर, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, चक्रवर्ती, बलदेव, महासतियाँ आदि के नाम कण्ठस्थ किए हैं।

जयपुर-श्री विजय जैन दौहित्र श्री हेमचन्द्र जी रांका ने सी.ए. एवं सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर की साधारण सभा में श्री धनपतचन्द जी सेठिया-जोधपुर (0291-2752472, 98290-22472) को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। सेठिया जी ने मंत्री के रूप में श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-जोधपुर (94605-51096) को मनोनीत किया है।

जोधपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर की साधारण सभा में श्री विनोद जी मेहता-जोधपुर को अध्यक्ष, श्री कौशल जी बोथरा-जोधपुर को कार्याध्यक्ष तथा श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर को मंत्री मनोनीत किया गया।

नागौर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नागौर द्वारा चुनाव सम्पादित हुए, जिसमें श्री भंवरलाल जी कांकरिया-अध्यक्ष, श्री सुमेरमल जी सुराणा-मंत्री, श्री कमलचन्द जी सुराणा-कोषाध्यक्ष चुने गए। - *सुरेन्द्र कुमार सुराणा*

मुम्बई- 'जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑरगोनाइजेशन' (जीतो) संगठन की 25 सितम्बर 2012 को आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से श्री नरेन्द्र बलडोटा वर्ष 2012-14 के लिए जीतो के चेयरमेन पद पर निर्वाचित किये गए।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बाबूलाल जी जैन सुपुत्र श्री धूलीलाल जी जैन (आलनपुर वाले) का 81 वर्ष की आयु में 4 नवम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो गया।

आप 25 वर्ष तक विनयचन्द ज्ञान भण्डार, लाल भवन जयपुर के प्रभारी रहे। आपने पर्युषण पर्वों में स्वाध्यायी के रूप में तथा जैन शिक्षण संघ में अध्यापक के रूप में कई वर्षों तक सेवाएँ दीं। आपकी आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी।

जोधपुर- धर्मानुरागी सुश्रावक श्री ओमप्रकाश जी बाफना (मेहता) सुपुत्र श्री मोहनलाल जी बाफना का 53 वर्ष की आयु में 15 नवम्बर, 2012 को स्वर्गवास हो गया।

आप संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप गुरु हस्ती के संदेश सामायिक-स्वाध्याय के विशेष रूप से प्रबल प्रेरक रहे। आपकी पुत्री मनीषा संस्कार केन्द्र में अध्यापक के रूप में कार्यरत है।

बालोतरा- श्री केशरीमल जी छाजेड़ सुपुत्र स्व. श्री शिवदानमल जी (सोईन्तरा) का 5 नवम्बर, 2012 को 80 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन 10-11 सामायिक तथा 20 साल से चौविहार एवं 12 वर्ष से शीलव्रत का पालन कर रहे थे। आप अपने पीछे तीन सुपुत्र-सुपुत्रियों का संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- धर्मरुचि शीला सुश्राविका श्रीमती शशिजी टाटिया धर्मपत्नी सुश्रावक श्री पृथ्वीराज जी का 19 नवम्बर, 2012 को पुणे (महाराष्ट्र) में देहावसान हो गया। आपकी ज्ञान-दर्शन-चारित्र सम्पन्न सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। पारिवारिक सुसंस्कारों से युक्त धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सुश्राविका का जीवन सेवा एवं सहयोग की भावना से सुरभित था। झारखण्ड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति श्री

प्रकाशचन्द जी टाटिया की आप भाभी थीं।

जोधपुर- जिनवाणी कार्यालय, जोधपुर में कार्यरत श्री राजीव जी माथुर की मातुश्री श्रीमती दयावती माथुर का स्वर्गवास 80 वर्ष की उम्र में 23 नवम्बर, 2012 को हो गया। आपका जीवन बहुत ही सरल, सहज, सादगीमय एवं धार्मिक था। आप अपने पीछे अपना भरापूरा सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गई है।

मुम्बई- वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं चार्टर्ड एकाउण्टेंट धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीचन्द जी नवलखा (जयपुर निवासी) सुपुत्र स्व. श्री स्वरूपचन्द जी नवलखा का 77 वर्ष की आयु में 30 नवम्बर 2012 को देहावसान हो गया। आप तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के सदस्य भी रहे। आप सात्त्विक प्रवृत्ति एवं सकारात्मक सोच के धनी थे। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा सन्त-सती मण्डल के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी।

सवाईमाधोपुर- मिलनसार सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी जैन सुपुत्र श्री दौलतचन्द जी जैन का

13 नवम्बर 2012 को देहावसान हो गया। आप नित्य धर्मध्यान, स्वाध्याय आदि में अपना अधिकांश समय व्यतीत करते थे और वर्तमान में समता भवन में विराजित महासती जी की प्रेरणा से सवा लाख जाप करने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे।

अहमदाबाद- सरलमना धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मूलचन्द जी रायसोनी मेहता (भांवरी वाले)

का 16 अक्टूबर,2012 को 89 वर्ष की आयु में व्रत-प्रत्याख्यान सहित समाधिमरण हो गया। आपके आजीवन रात्रिभोजन एवं जमीकंद का त्याग था। आप नित्य सात-आठ सामायिक करते थे। आप 'धर्म-पिता' के नाम से समाज में विश्रुत थे। आपने सजोड़े शीलव्रत भी अंगीकार किया। ज्ञानगच्छ में दीक्षित साध्वी विमलेश जी म.सा. के आप संसारपक्षीय पितृव्य थे।

दूदू- श्रीमती रतनकंवर पोखरना धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी का 17 नवम्बर 2012 को संलेखना संथारा व्रत के साथ समाधिमरण हो गया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

750 श्री कमलकिशोरजी कटारिया, रायपुर (छत्तीसगढ़)
751 श्री सुशील कुमारजी धारीवाल, बेंगलुरु (कर्नाटक)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

14455 श्रीमती अमिताजी बिराणी, 1393, ताराचंद नायब का रास्ता, जयपुर (राजस्थान)
14490 श्री मालचंदजी कोटेचा, कोटेचा मौहल्ला, बोरावड़, जिला-नागौर (राजस्थान)
14506 श्री राजीवजी भंडारी, बी-140 ए, जनता कॉलोनी, जयपुर (राजस्थान)
14507 श्री रिखबजी लोढ़ा, मेवाड़ी गेट, मु.पोस्ट-ब्यावर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14508 श्री सम्पतलालजी मोदी, साजा, जिला-बेमेतरा (छत्तीसगढ़)
14509 श्री अजयजी मेहता, 105/71, अहिंसा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14510 श्री विनोद कुमारजी जैन, भागीरथी स्कूल वाली गली, जलगाँव (महाराष्ट्र)
14511 श्री उम्मेदमलजी भंडारी, ग्लास फैक्ट्री के सामने, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14513 श्री मनोहर एच. जैन, कामगार भवन के पास, मु.पोस्ट-नाशिक (महाराष्ट्र)
14514 श्री मोहितजी सेठ, सरस्वती नगर, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर (राजस्थान)
14515 डॉ. शुभम्जी अरोड़ा, सी-60, वृन्दावन मार्ग, श्यामनगर, जयपुर (राजस्थान)
14524 श्री चम्पालालजी कर्णावट, मु.पोस्ट-लासूर स्टेशन, जिला-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
14586 श्री सुभाषजी कोठारी, आनन्द नगर, प्रहलाद नगर रोड़, अहमदाबाद (गुजरात)
14590 श्री ललित कुमारजी चौपड़ा, महावीर फ्लैट, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात)
14594 श्री विजेन्द्र कुमारजी जैन, 77/235, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14595 श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन, 38/164, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14596 श्री गौतमचंदजी जैन, हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14598 श्री महेन्द्र कुमारजी जैन, न्यू मंडी रोड़, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14602 श्री पदमचंदजी बोगावत, महादेव नगर, नन्दपुरी, हवासड़क, जयपुर (राजस्थान)
14605 श्री प्रदीपजी जैन, कैलाशपुरी, खण्डका अस्पताल के पीछे, जयपुर (राजस्थान)
14608 श्री पवनजी बोथरा, सरावगी मेंशन, एम.आई. रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14611 श्री धर्मचंदजी जैन, बरकत नगर विस्तार, किसान मार्ग, जयपुर (राजस्थान)
14612 श्री रूपेश कुमारजी जैन, 360, सेक्टर नं. 15, पार्ट-प्रथम, गुड़गाँव (हरियाणा)
14613 Shri Mahavir Prasadji Jain (Pokharna), Mumbai (M.H.)
14623 श्री महेन्द्रमलजी जैन, कमला नेहरू नगर, अण्डरकट, अजमेर रोड़, जयपुर (राज.)
14622 श्री विनयजी मरटिया, चीरघर के पास, चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

250/-(अर्द्धमूल्य योजना) जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता

श्री प्रसन्नचंदजी, पुनवानचंदजी, हस्तीमलजी, लिलमचंदजी, शांतिलालजी ओस्तवाल, भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई के सौजन्य से

14451 श्री सचिनजी देसर्डा, बी नं. 13, प्रेमनगर, राजनगर सोसायटी, पुणे (महाराष्ट्र)
14452 श्री रावलजी जैन, सदर बाजार, धनोप, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान)
14453 श्री कौशलसिंहजी डांगी, ओटीसी स्कीम, चरकछात्रावास के पास,उदयपुर (राज.)

14454 श्री संदीपजी चौधरी, चन्द्रदीप, नेहरू कॉलोनी, फालना, जिला-पाली (राज.)
14456 श्री प्रतीक कुमारजी गाँधी, 39 बी, जैन कॉलोनी, महलवाड़ा, रतलाम (मप्र)
14457 श्री विमल कुमारजी लासोर, धामणी भवन के सामने, नकड़पीठा, रतलाम (मप्र)
14458 श्री किशनलालजी सेठिया, मु.पोस्ट-धनारी, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14459 श्री लूणकरणजी सेठिया, मु.पोस्ट-धनारी, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14460 श्री रामदासजी शास्त्री, रतकूडिया धाम, रतकूडिया, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14461 श्री नारायणरामजी गेहलोत, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14462 श्री गोविंदरामजी सुथार, नाड़सर रोड़, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14463 श्री सगलारामजी आचार्य, बस स्टेण्ड, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14464 श्री बालारामजी रलिया, रलियों की ढाणी, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14465 श्री आदर्श विद्या मंदिर, नाड़सर रोड़, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14466 श्री धरमारामजी देवड़ा, कृष्णा सेण्ड स्टोन, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)
14467 Shri D. Prasanmalji Sanghvi, KV Kuppam (Tamilnadu)
14468 श्री पुखराजजी सांखला, जैन मंदिर के पास, बालेसर सता, जिला-जोधपुर (राज.)
14469 श्री पारसमलजी सांखला, जैनमंदिर के पास, बालेसर सता, जिला-जोधपुर (राज.)
14470 Shri Yeshwant Kumarji Chhajed, Bangarpet (Karnataka)
14471 डॉ. आर. पी. आर्यजी, सेक्टर-जी, शास्त्रीनगर, मु.पोस्ट-जोधपुर (राजस्थान)
14472 श्री मिथलेश कुमारजी जैन, नगर रोड़, मु.पोस्ट-डीग, जिला-भरतपुर (राजस्थान)
14473 श्री हनवन्तमलजी लोढ़ा (एडवोकेट), पावटा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14474 श्री अभिषेकजी चौधरी, प्रेमनगर, खेमें का कुआँ, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14475 श्री लिरथेशजी जैन, जगतापवाड़ी, प्लॉट नं. 75, नन्दूरबार (महाराष्ट्र)
14476 श्री अनिलजी चौधरी, गौतम आश्रम के पास, आजाद नगर, भीलवाड़ा (राज.)
14477 श्री प्रखरजी मोहनोत, किले की पोल के पास, नवचौकियाँ, जोधपुर (राजस्थान)
14478 श्री देवीचंदजी चोरड़िया, टांक सदन के सामने, बागर चौक, जोधपुर (राजस्थान)
14479 श्री टीकमचंदजी जैन, 63/17, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14480 श्री नन्दलालजी खींचा, बोदवड़, तालुका-शिंदखेड़ा, जिला-धुलिया (महाराष्ट्र)
14481 श्री निर्मल कुमारजी जैन, खेरादियों का बास, जोधपुर (राजस्थान)
14482 Shri Mahavir Chandji, Chamrajpet, Bangaluru (Karnataka)
14483 श्री कन्हैयालालजी जैन (खिंवसरा), केशवपुरम्, नईदिल्ली (दिल्ली)
14484 श्री हर्षितजी जैन, जटवाड़ा खुर्द, मान टाउन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14485 श्री धर्मचंदजी जैन, आनन्द नगर, दहीसर (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
14486 श्री माणकचंदजी कांकरिया, अरनी रोड़, दरवाहा, जिला-यवतमाल (महाराष्ट्र)
14487 डॉ. पारसजी सूर्या, एस-22, भवानीसिंह मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर (राजस्थान)
14488 श्री मनोहरलालजी सूर्या, बाजार नम्बर 3, भोपालगंज, भीलवाड़ा (राजस्थान)
14489 श्री कृष्णराव बोड़के, सुभाष नगर, इन्दौर रोड़, मु.पोस्ट-उज्जैन (मध्यप्रदेश)
14491 Shri Mallan Gouda Patilji, Ashikhal, Raichur (Karnataka)
14492 श्री कमलजी खंजाची, केजीबी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14493 श्रीमती विमलाजी भंसाली, कृष्णा डेयरी के पास, भटार रोड़, सूरत (गुजरात)
14494 श्री शिखरचंदजी छाजेड़, गाँधी चौक, नगरी, जिला-रायपुर (छत्तीसगढ़)
14495 श्री महावीरचंदजी कांकरिया, हीरा मोती लाइन, राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

14496 श्री जे.के. जैन, एकता हॉस्पिटल के सामने, शांतिनगर, रायपुर (छत्तीसगढ़)
14497 श्री अतिशयजी जैन, वर्द्धमान नगर, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
14498 श्री सुभाषचंदजी जैन, हाऊसिंग बोर्ड, कृष्णा कॉलोनी, भरतपुर (राजस्थान)
14499 श्री त्रिलोकचंदजी जैन, खेरदा, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14500 श्री विमलचंदजी जैन, अटारी, वाया-खेड़ली गंडासिया, जिला-भरतपुर (राज.)
14501 श्री चम्पालालजी भंडारी, सुभाष चौक, बाड़मेर (राजस्थान)
14502 श्री घेवरचंदजी भंडारी, एफ-75, बासनी प्रथम चरण, जोधपुर (राजस्थान)
14503 श्री राहुल कुमारजी, श्रीमालियों का चौक, बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राजस्थान)
14504 श्रीमती सुशीलाजी बेंगानी, ज्ञानविहार, निर्वाणनगर, अजमेररोड़, जयपुर (राज.)
14505 श्री वीरेन्द्रजी पुगलिया, वंशजसोसायटी, पीगंले बस्ती, मुंढवा रोड़, पुणे (महाराष्ट्र)
14512 श्री शिखरचंदजी जैन, अग्रसेन कॉलोनी, गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14516 श्री संदीपजी बोथरा, ताराचंद नायब का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14517 श्री अनूपजी बरड़िया, खातीपुरा रोड़, झोटवाड़ा, जिला-जयपुर (राजस्थान)
14518 श्री रौनकजी अग्रवाल (जैन), 4/188, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
14519 श्री राकेशजी वैरागी, बी-57, दीनदयाल नगर, रतलाम (मध्यप्रदेश)
14520 श्री प्रसन्नराजजी सिंघवी, द्वारका, सेक्टर नं. 3, नईदिल्ली (दिल्ली)
14521 श्री आजादमलजी जैन, दुर्गा चौक, बदनावर, जिला-धार (मध्यप्रदेश)
14522 श्री अभिषेकजी जैन, सुखेड़ा, तहसील-पिपलोदा, जिला-रतलाम (मध्यप्रदेश)
14523 श्री प्रेमचंदजी दफ्तरी, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड, जयपुर (राजस्थान)
14525 श्रीमती विमलादेवीजी भंसाली, भटार रोड़, सूरत (गुजरात)
14526 श्री अंकितजी जैन, लक्ष्मी नगर, पावटा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14527 श्री रोहितजी मेहता, आंचल कॉम्पलैक्स, रेजिडेन्सी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14528 श्री सुरेन्द्रजी पारख, सुभाष नगर, राम मंदिर के सामने, जोधपुर (राजस्थान)
14529 श्री प्रकाशमलजी लूणिया, रघुनाथपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
14530 श्री कैलाशजी मोहनोत, 33, न्यू अरविंद नगर, सुन्दरवास, उदयपुर (राजस्थान)
14531 श्री शांतिलालजी लोढ़ा, महावीर बाजार, बांदरवाड़ा, अजमेर (राजस्थान)
14532 Shri Rohanji Surana, Street No. 6, Secunderbad (AP)
14533 श्री आशुतोषजी चौपड़ा, 16 ए, मोहनपुरा, सोजती गेट, जोधपुर (राजस्थान)
14534 श्री आशीष कुमारजी जैन, शक्ति नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
14535 श्री अशोक कुमारजी जैन, रामद्वारा कॉलोनी, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)
14536 श्री प्रमोद कुमारजी जैन, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14537 श्री पुखराजजी कोटेचा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14538 श्री रामपालजी खींचा (जैन), मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14539 श्री नेमीचंदजी छाजेड़, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14540 श्री सुरेन्द्र कुमारजी पालड़ेचा, पानी की टंकी के पास, भीलवाड़ा (राजस्थान)
14541 श्री पारसमलजी पालड़ेचा, बीचला हनुमानजी का रास्ता, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
14542 Shri Jabar Chandji Bothra, Chennai (Tamilnadu)
14543 श्री जवरीलालजी बोथरा, माणक चौक, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14544 श्री भोमराजजी गोलिया, अशोक विहार, पावटा बी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
14545 Shri Sunil Kumarji Lodha, Chennai (Tamilnadu)
14546 Shri Ajit Kumarji Khivasara, Chennai (Tamilnadu)

14547 श्री विनोद कुमारजी खिंवसरा, सदरबाजार, मकराना, जिला-नागौर (राजस्थान)
14548 Shri Milapji Bhandari, Bangaluru (Karnataka)
14549 Shri Pradeepji Chordia, Bangaluru (Karnataka)
14550 श्री राकेशजी ललवाणी, के 14/15, डीएलएफ फेस 2, गुड़गाँव (हरियाणा)
14551 Shri Padam Chandji Pincha, Chennai (Tamilnadu)
14552 श्री अंकित कुमारजी लोढ़ा, विजयनगर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14553 श्री सुनीलजी जैन, केजीबी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14554 श्री सुरेशचंदजी जैन, शक्ति नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
14555 सौ. अनीताजी बांठिया, अष्ट विनायक कॉलोनी, घोड़नदी, जिला-पुणे (महाराष्ट्र)
14556 सौ. कमलाबाईजी पगारिया, अरिहंत भवन, पंरणगाँव, जिला-जलगाँव (महाराष्ट्र)
14557 श्री सुरेन्द्र कुमारजी सिंघवी, मेड़तासिटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14558 श्री नाथूलालजी जैन (नाहर), मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14559 श्री अनिल कुमारजी डोसी, मेवाड़ी गेट के बाहर, ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)
14560 श्री पारसमलजी रांका. 32, महावीर कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर (राजस्थान)
14561 श्री रमेशचंदजी श्री श्रीमाल, पोस्ट-बुढाटी, जिला-नागौर (राजस्थान)
14562 श्री अभयकुमारजी सांखला, स्थानकवाली गली, विजयनगर, अजमेर (राज.)
14563 श्री हरिसिंहजी भाटी, बारणी खुर्द, वाया-आसोप, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14564 श्री अमरचंदजी जैन, अमीनशाह रोड़, शास्त्रीनगर, जयपुर (राजस्थान)
14565 श्री नेमीचंदजी जैन, एस जे 33, महावीर नगर तृतीय, कोटा (राजस्थान)
14566 श्री अमितजी कर्णावट, ऐंकर मॉल के पास, मदरामपुरा, जयपुर (राजस्थान)
14567 श्री मूलचंदजी कोठारी, प्रधानजी की गली, बून्दी (राजस्थान)
14568 श्री मदनसिंहजी डांगी, 10/844, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14569 श्री अशोक कुमारजी लोढ़ा, कडाका चौक, कहार मौहल्ला, अजमेर (राजस्थान)
14570 श्री राजेश कुमारजी सेठिया, धनारीकला, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
14571 श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, अरावली मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
14572 श्री वैभव कुमारजी जैन, प्रताप नगर, श्योपुर रोड़, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान)
14573 श्री दर्शनजी जैन, योगी नगर, बोरीवली (पश्चिम), मुम्बई (महाराष्ट्र)
14574 श्री जे. के. पारखजी, कांदिवली (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
14575 श्री महेन्द्रजी नाहर, शिवाजी नगर, किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
14576 Shri Uttam Chandji Choradia, Bangaluru (Karanataka)
14577 Shri Satish Kumarji Munot, Mysore (Karnataka)
14578 डॉ. नैनेशजी खिंवसरा (जैन), दलाल नगर, शिरपुर, जिला-धुले (महाराष्ट्र)
14579 श्री गर्वनिपुणजी मेहता, सेशन कोर्ट के सामने, रतलाम (मध्यप्रदेश)
14580 श्री दिलीपचंद जी जैन, आवासन मंडल, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14581 Shri Mahaveer Chandji Ostwal, Bangaluru (Karnataka)
14582 श्री अनिल कुमारजी जैन (रेड), धान मंडी, पाली (राजस्थान)
14583 श्रीमती विद्याजी कोठारी, एस-20, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर (राजस्थान)
14584 श्री अनिलजी जैन, बस स्टैण्ड, अलीगढ़-रामपुरा, जिला-टोंक (राजस्थान)
14585 श्री गौतमचंदजी कांकरिया, भिश्तियों का बास, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)
14587 श्री चन्द्रेशजी सिंघवी, 78, बापू नगर, पाली (राजस्थान)
14588 Shri Rajendramalji Surana, Chennai (Tamilnadu)

14589 Shri Prem Chandji Surana, Chennai (Tamilnadu)
14591 श्री रविन्द्र कुमारजी जैन, वर्धमान नगर, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
14592 श्री राजेश कुमारजी जैन, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
14593 Shri Gouttam Chandji Kankaria, Villupuram (TND)
14597 श्री तरूणजी हिंगड, 6, रामबास, पाली (राजस्थान)
14599 Smt. Pramilaji Bohra, Bangaluru (Karnataka)
14600 Smt. Anitaji Chopda, Bangaluru (Karnataka)
14601 श्री नवरतनजी खाटेड, 36, बड़ा बास, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
14603 श्री मिलापचंदजी बफलावत, 6-क-2, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
14604 श्री धीरजजी गोलेछा, डी-192 ए, मोती मार्ग, बापू नगर, जयपुर (राजस्थान)
14606 श्री सी. एस. डागाजी, 5-झ-33, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)
14607 श्री रमेशचंदजी जैन, नई मंडी के पीछे, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राजस्थान)
14609 श्री रतनलालजी जैन, हरसहायजी का कटला, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
14610 श्री मनीषजी जैन, 13/22 ए, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14624 श्रीमती तृप्तिजी सेठ, सी-275, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14625 डॉ. धनवंत टी. शाहजी, लेकहोम कॉम्पलैक्स, पवईविहार, मुम्बई (महाराष्ट्र)
14626 श्री प्रकाशचंदजी बम्ब, बारह गणगौर का रास्ता, जौहरीबाजार, जयपुर (राजस्थान)
14627 श्री अनिलजी बम्ब, बारह गणगौर का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14628 श्रीमती आशाजी बांठिया, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जयपुर (राजस्थान)
14629 डॉ. अशोक वर्धनजी चोरड़िया, प्रियदर्शी मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राजस्थान)
14630 श्री गुणवंतजी चौपड़ा, सौंथलियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
14631 श्री विनोद कुमारजी जैन, डी-417, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
14632 श्री महेन्द्र कुमारजी गोठी, धरम निवास, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)

250/- अर्द्धमूल्य-योजना (श्री लाभचंदजी कोठारी, जयपुर द्वारा धर्मपत्नी सौ. किरणजी कोठारी के सिद्धि तप सम्पूर्ण होने के उपलक्ष्य में)

14614 श्री धरेन्द्रजी ललवाणी, शिवाजी नगर, बीड़ रोड़, माजलगाँव, जिला-बीड़ (महा.)
14615 श्री सुभाषजी जैन, खोलगली, ओढेकर टी डिपो के सामने, धुले (महाराष्ट्र)
14616 श्री संकेतजी लोढ़ा, नांदुर्डी, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14617 श्री प्रिंसजी कोठारी, गली नं. 9, मकान नं. 4, ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)
14618 श्री यशजी श्रीमाल, ढोंबरे वाडा, कोपरगाँव, जिला-अहमदनगर (महाराष्ट्र)
14619 श्री पीयूषजी कोचर, कोटम गाँव रोड़, लासलगाँव, जिला-नाशिक (महाराष्ट्र)
14620 श्री विशालजी सकलेचा, बाजार पेठ, पुणवाबा, जिला-अहमदनगर (महाराष्ट्र)
14621 श्री राहुलजी जैन, कलेक्टर पट्टा, नाशिक (महाराष्ट्र)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

50000/- श्री रतनलाल सी. बाफणाजी, जलगाँव, नये शोरूम के मुहूर्त्त के शुभ अवसर पर सप्रेम भेंट।
5100/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजेन्द्रजी बाघमार, मैसूर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा जयन्ति वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
5000/- श्रीमती मंजूजी कोठारी, जयपुर सप्रेम भेंट।
3100/- श्री मनोज कुमारजी, सुभाषचंदजी, संजय कुमारजी एवं श्रीमती शांतादेवीजी नवलखा, मुम्बई,

स्व. श्री मोतीचंदजी नवलखा का दिनांक 30 अक्टूबर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

3000/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, हरीशजी भंडारी, चेन्नई, आरतीजी व नम्रताजी के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री कमलेश कुमारजी, दीपक कुमारजी सालेचा, बालोतरा-बाड़मेर, श्रीमान् भूपतराजजी सालेचा के देवलोक गमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री राजेशजी, विमलजी, पवन कुमारजी बोथरा (कोसाणा वाले), चेन्नई, श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. के नौ उपवास एवं महासती श्री सुभद्राजी म.सा. के अठाई एवं सिद्धितप के उपलक्ष्य में तथा जयपुर-मेड़तासिटी में दर्शन वन्दन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सुभाषजी, अशोकजी, विपिनजी, पुनीतजी धोका, मैसूर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री भंवरलालजी, प्रदीप कुमारजी, पारस कुमारजी डोसी, हैदराबाद, सप्रेम भेंट।

2100/- श्री महावीरसिंजी सुराणा, फोर्ट सोनगढ़-तापी, सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती विमलाजी-श्री कैलाशचंदजी कोठारी, जयपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं सभी संत-सती मण्डल के साता पूर्वक चातुर्मास सम्पूर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री निर्मल कुमारजी, मनोहरलालजी बा, बेंगलोर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष तथा दर्शन वंदन के उपलक्ष्य में।

1501/- श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सौ. कां. श्रद्धा सुपुत्री श्रीमती रेणुका-सुरेन्द्र जी सदावत मेहता का शुभविवाह चि.सुगन्ध सुपुत्र श्रीमती इन्द्रा-श्रीपाल जी सिंघवी, जोधपुर के साथ दिनाँक 28 अक्टूबर, 2012 को सम्पन्न होने एवं सुपौत्री सुश्री श्रेया मेहता सुपुत्री श्रीमती बेला-नरेन्द्र जी मेहता के बी.डी.एस. तृतीय वर्ष में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने एवं अन्तिम वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री नत्थीलालजी पल्लीवाल (जैन), गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर, श्रीमती संतरादेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री रोशनलालजी, अशोक कुमारजी जैन, करौली, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष तथा दर्शन वंदन के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री मांगीलाल जी, राजेन्द्र जी सुराणा, राजानंद गांव (छत्तीसगढ़), सहयोग हेतु भेंट।

1100/- श्री सुरेशचंदजी जैन, जयपुर, सुपौत्र श्री ध्रुवजी जैन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री गजेन्द्र कुमारजी, हेमंत कुमारजी दुधेड़िया, मेड़तासिटी-नागौर, श्री हेमंतजी दुधेड़िया के 21 अगस्त 2012 को इस चातुर्मास में दूसरी बार 8 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हेमराजजी, दीपक कुमारजी श्रीमाल, मेड़तासिटी-नागौर, श्री प्रदीप कुमारजी श्रीमाल के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धनेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी, महेन्द्रजी चौधरी, पीपाड़सिटी-जोधपुर, चि. मणीशजी सुपुत्र श्री धनेन्द्रजी, सुपौत्र श्रीमती भंवरीदेवीजी-श्री नथमलजी चौधरी के 31 की तपस्या के प्रत्याख्यान उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में प्रत्याख्यान लेने एवं लासूर में महासती श्री नि:शल्यवतीजी म.सा. के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हस्तीमलजी, महेन्द्र कुमारजी, ललित कुमारजी, यशवन्त कुमारजी, ऋषभ कुमारजी, मनीष कुमारजी गोलछा परिवार, ब्यावर-अजमेर, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सुशीलाजी-श्री किस्तूरचंदजी डोसी, ब्यावर-अजमेर, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती विमलाजी-श्री कैलाशचंदजी कोठारी, जयपुर, सिद्धि तप की तपस्या सातापूर्वक सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रकाशराजजी मेहता (भांवरी वाले), शिमोगा, पूज्य पिताश्री मूलचंदजी रायसोनी मेहता का दिनांक 16 अक्टूबर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती मदनकँवरजी, श्री हुकमीचंदजी, संतोष कुमारजी, विपुलजी, हर्षितजी एवं समस्त डोसी परिवार, बैंगलोर, स्व. श्री विनोद कुमारजी सुपुत्र श्री हुकमीचंदजी डोसी की प्रथम स्मृति दिनांक 16 नवम्बर 2012 के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया, बैंगलोर, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष तथा दर्शन वंदन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सजनाबाईजी, चाँदमलजी बाघमार, बेंगलोर, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष तथा दर्शन-वंदन के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री केशरीचंदजी, चन्द्रप्रकाशजी जैन, करौली, महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. के मास खमण तथा सिद्धि तप की तथा महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. व महासती श्री पूनमजी म.सा. के दुबारा अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धर्मीचंदजी, रितेश कुमारजी, कोप्पल, श्रीमती सरस्वती बाईजी के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दिलखुशराज जी जैन, मुम्बई, अपने दौहित्र नैतिक सुपुत्र वंदना-दिपक जी चौपड़ा के जन्म के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दिलखुशराज जी जैन, मुम्बई, अपनी दौहित्री अनुश्री सुपुत्री नम्रता-आशीष जी कोचर के जन्म के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री आर. कीर्तिजी, मैसूर सप्रेम भेंट।

1000/- श्री कमलकिशोरजी, पीयूष कुमारजी, ध्वज कुमारजी कटारिया, रायपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दर्शन वंदन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री सुरेशचंदजी, विकास कुमारजी, राहुलजी चौधरी, मैसूर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री महावीर प्रसादजी, शान्तिलालजी पालड़ेचा, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष एवं महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा. के जन्मदिवस तथा कविताजी पालड़ेचा के सिद्धि तप के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री रमेशचन्दजी, ओमप्रकाशजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री जीतमलजी जैन लोहिया की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री बाबूलालजी, गुलाबचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती कपूरीदेवीजी जैन का स्वर्गवास हो जाने पर भेंट।

501/- श्री अभिनन्दन जी जैन, जयपुर, अपने पूज्य पिताश्री बाबूलाल जी जैन का दिनाँक 4 नवम्बर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री रामदयालजी, उम्मेदमलजी जैन (सर्राफ), बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री विपुलजी सुपुत्र श्री लालचंदजी, सुपौत्र श्री रामदयालजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री पल्लीवाल जैन रत्न स्वाध्याय संघ, गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर द्वारा सप्रेम भेंट।

500/- श्री त्रिलोकचंदजी, घेवरचंदजी, शान्तिलालजी, महावीर प्रसादजी पोखरणा परिवार, दूदू-जयपुर, श्रीमती रतनकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचंदजी पोखरणा का संथारा सहित 17 नवम्बर 2012 को समाधिमरण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री प्रकाशचंदजी, मीठालालजी बाघमार, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष तथा दर्शन वंदन के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री आनन्दराजजी, सुनील कुमारजी पटवा, मैसूर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष तथा दर्शन-वंदन के उपलक्ष्य में।

500/- श्री महावीरचंद जी तातेड़ 'रियाबाड़ी वाले', चेन्नई, महावीरचंद जी तातेड़ एवं धर्म सहायिका श्रीमती शकुन्तलादेवी के विवाह के 33 वर्ष पूर्ण होने एवं संत-सतीयों के दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री नौरतनमल जी, नरेन्द्र जी, भूपेन्द्र जी मेहता, जोधपुर हाल मुकाम चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के 50 वें दीक्षा-दिवस एवं सभी संत-सतीयों के दर्शन-वंदन-प्रवचन श्रवण का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

25200/- श्री सुभाष-कल्पना जी जैन (अमेरिका वाले), नीमच (म.प्र.), पुस्तक प्रकाशन हेतु सहयोग।

15000/- श्रीमती पूजा जी जैन सोमानी, कोलकाता, पुस्तक प्रकाशन हेतु सहयोग।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

501/- श्री अभिनन्दन जी जैन, जयपुर, अपने पूज्य पिताश्री बाबूलाल जी जैन का दिनाँक 4 नवम्बर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती सुशीला जी, मनोज जी, पंकज जी नाहटा, जोधपुर, श्री चांदमल जी नाहटा का 14 नवम्बर 2012 को स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

3500/- श्री विजयराजजी बाघमार, बैंगलुरु, मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'गुणस्थान स्वरूप' के पुन: मुद्रण के लिए अर्थसहयोग।

आगामी पर्व

मार्गशीर्ष कृष्णा 14, बुधवार	12.12.2012	चतुर्दशी, पक्खी
मार्गशीर्ष शुक्ला 8, गुरुवार	20.12.2012	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 11, रविवार	23.12.2012	मौन एकादशी
मार्गशीर्ष शुक्ला 14, गुरुवार	27.12.2012	चतुर्दशी, पक्खी
पौष कृष्णा 8, शनिवार	05.01.2013	अष्टमी
पौष कृष्णा 10, सोमवार	07.01.2013	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक
पौष कृष्णा 14, गुरुवार	10.01.2013	चतुर्दशी
पौष कृष्णा 30, शुक्रवार	11.01.2013	पक्खी
पौष शुक्ला 8, शनिवार	19.01.2013	अष्टमी
पौष शुक्ला 14, शुक्रवार	25.01.2013	चतुर्दशी, आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 103वाँ जन्म-दिवस
पौष शुक्ला 14, शनिवार	26.01.2013	चतुर्दशी, पक्खी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

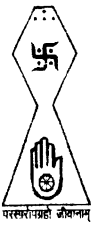

With Best Compliments from :

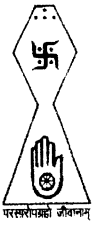

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT BARS

DRI Plant

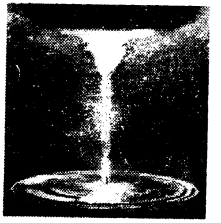

Electric Arc Furnace

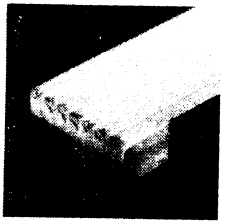

Billets

Rolling Mill

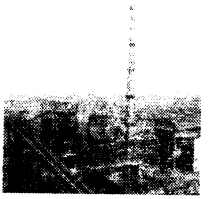

Captive Power Plant

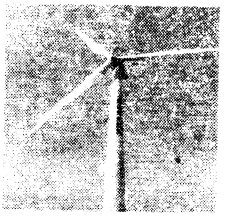

Windmill

With best wishes from

ISO 9001 2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के सफलता की ओर बढ़ते चरण

- छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से रत्नसंघ की परम्परा एवं महिमा की यशकीर्ती का चारों ओर फैलाना।
- समाज में बढती विकृतियों के बावजूद नई पीढ़ी के छात्र-छात्राओं का धर्म एवं संघ से जुड़ना।
- रत्नसंघ में छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से सामायिक, प्रतिक्रमण एवं पच्चीस बोल की जानकारी वाले नए युवा छात्र-छात्राएँ तैयार करना ।
- छात्रवृत्ति योजना के कारण युवारत्न छात्र-छात्राओं ने जैन धर्म का क्रमिक अध्ययन अर्थात् आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के माध्यम से जैन धर्म के सिद्धान्तों को समझना।
- छात्रवृत्ति योजना द्वारा संचालित शिविरों के माध्यम से छात्र-छात्राओं का गुरुभगवन्तों की सेवा ज्ञान-ध्यान की ओर लगाव बढ़ा ।
- योजना के माध्यम से कई धार्मिक अध्ययन कराने वाले छात्र-छात्राएँ तैयार, जो अपने स्थानीय क्षेत्रों में लगने वाले शिविरों में अध्यापन कार्य में सहयोग करते हैं।
- छात्रवृत्ति योजना के तहत संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र-छात्राएँ संघ में धर्मनिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में तैयार।
- छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से जैसे ही नए युवा छात्र-छात्राएँ संघ से जुड़े वैसे ही कई रत्नसंघ परिवारों में संघ के प्रति वापस जागृति।
- रत्नसंघ में शिक्षित युवाओं का आगमन संघ को चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर करने में सहायक।
- संघ के वीर परिवार एवं कर्मचारी परिवार के बच्चों के उच्चशिक्षा में पूर्णत: एवं विशेष रूप से सहयोग करना।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए योजना का विस्तार कर दिया गया है। अत: आप सभी गुरु भाई 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर उदारमना संघ-सेवी श्रीमन्तों, श्रेष्ठीजनों से विनयपूर्वक निवेदन है कि इस योजना में मुक्तहस्त से अर्थ सहयोग अवश्य प्रदान करावें एवं अपने सम्पर्क में आने वाले गुरुभाइयों में प्रेरणा करावें ।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है ।

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

1. **Ashok Kavad,** Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta,** Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana,** Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra,** Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha,** Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria,** Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat,** Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain,** Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga,** Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna,** Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad,** Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain,** Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Maan

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V.Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
10 दिसम्बर, 2012 ★ मार्गशीर्ष, 2069

।।जय गुरु हीरा।। ।।जय गुरु मान।।

गुरु हीरा–गुरु मान के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष पर
सुन्दर–सुखद–शुभभावन–सुरम्य पुस्तिका

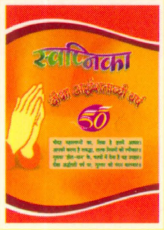

स्वप्निका

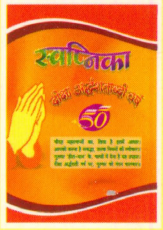

- जो स्वप्न में अटकाती नहीं, शुभ स्वप्न से स्व को पाना सिखाती है।
- जो दिनचर्या को नियमित, जीवन को नियंत्रित और आत्मा को पापों से निवृत्त कराती है।
- जो अन्तर की उपलब्धि को उत्साहित करती है।
- जो अवस्था से नहीं आस्था से सम्बन्ध रखती है।

इसलिए

उत्साह भाव से मंगाइये
उमंग भाव से दीक्षा अर्द्धशती वर्ष मनाइये।

आयोजक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मंडल

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

पुस्तिका ₹ 20/-

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन: 0141-2575997, 2571163 फैक्स: 2570753

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज मुराणा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित। सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन